तंत्र कौमुदी
तीक्ष्ण शक्ति साधना और इतर योनी साधना महाविशेषांक
SEVENTH Issue – SEPTEMBER 2011
Tantra kaumudi

तन्त्र

लोकेशो हरिम्बिका स्मरहरो मातापिता ऽभ्यागता . आचार्य कुल देवतायतिवरो वृद्धस्तथा भिक्षुक :||

नैतेयस्य तुलां व्रजन्ति कलया यस्य प्रसादं विना :.तं बन्दे निखिलेश्वर निज गुरुं सर्वार्थ सिद्धि प्रदम |

ब्रह्मा ,विष्णु , महेश ,जगदम्बा ,माता -पिता ,अभ्यागत ,आचार्य , कुलदेवता , यति ,वृद्ध , तथा भिक्षुक , जिन की कृपा के बिना ये सद्गुरु की कलाओं की समानता नहीं प्राप्त कर सकते , ऐसे सर्वार्थ सिद्धि प्रदान करने वाले सद्गुरु देव निखिल को बारं बार नमन करता हूँ .

Brahma ,Vishnu ,Mahesh ,Jagdamba ,Mother-Father ,Guest, Teacher/Guru, kuldevta (ruler deaity of ones'family),esthetic ,old/aged person and begger without the blessing of him, cannot be ever reach equal to divine quality (kala) of Sadgurudev, I bow continuously to holy divine lotus feet of such a blessing giver/provider and every possible siddhi provider Sadgurudev Nikhil ..
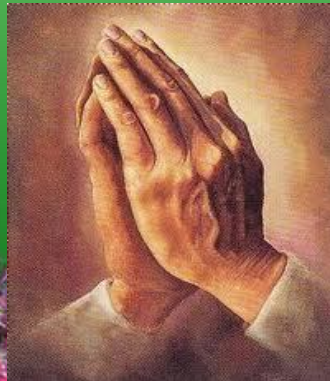
Dedicated

To

The Divine Holy Lotus Feet of
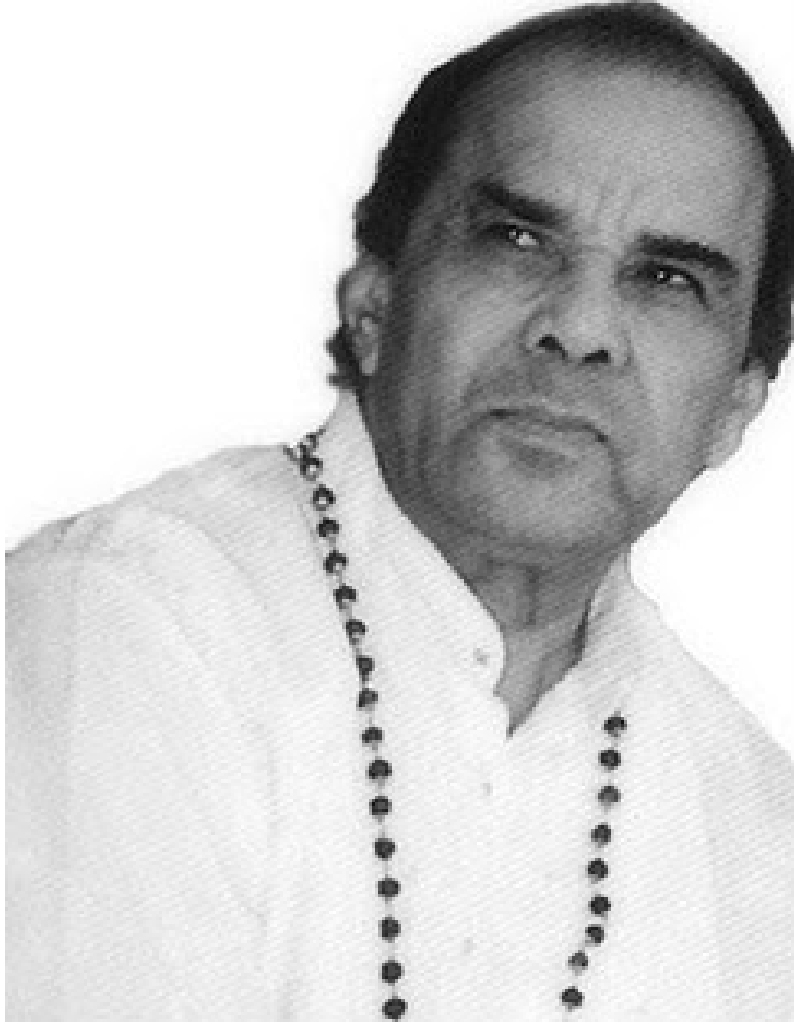
Param Poojya Sadgurudev Dr. Shri Narayan Datt Shrimali JI

(Paramhansa Swami Nikhileshwaranand ji)

Publisher

Of

Tantra kaumudi e-magazine

Nikhil Para Science Research Unit

Can be contacted through

http://nikhil-alchemy2.com

www.Nikhil-alchemy2.blogspot.com & Nikhil_alchemy yahoo group

TEAM MEMEBERS OF TANTRA KAUMUDI E- MAGAZINE

Editor   *Associates editor s And Creative Designer*

nikhilarif@gmail.com   raghunath.nikhil@yahoo.in   anuwithsmile@rediffmail.com

Name of the Articles

- *Totaka vigyan*
- *Ayurveda*

- *In The End*

You can Contact Us at nikhilalchemy2@yahoo.com.

General Rules :

This free e magazine available only to the follower register in the blog Nikhil-alchemy2.blogspot.com. and also nikhil-alchemy groups memeber . the article appear here, are / will be based on the divine wisdom of **SadGurudev Dr Shri Narayan Dutt Shrimali ji** , and his sanyasi shishyas . we as a your fellow guru brothers, here just providing words to their thought. For the address of these mahayogi's are not known to us, as they all are wondering saints.

The sadhana and mantra's appeared / mentioned in any article can be practiced ,on your own responsibility, to get success in sadhana you can have Diksha from anywhere where your faith,devotion and trust calls . for sadhana articles needed for that , you can purchase from any place ,as per you faith and trust suited to you ,

Please do not ask us for any type of sadhana related materials, and also for Diksha related Queries at any cost / condition , we does not sell any sadhana material (yantra , rosary etc).

Since sadhana is a very complex matter, for success and failure of any sadhana mentioned in any article here , many things required , to get success . that's why ,we do not take any responsibility in this connection. we also request, not to do any sadhana ,which is adverse and not permitted as per legal, morel, society belief.

This e magazine will be published monthly. You are receiving this magazine means that you are accepting the terms and conditions . at any time , you can withdraw your registration . this e magazine just a forum to share knowledge between us (Sadgurudev ji's shishyas - All guru brother and sisters),

if still any one raises questions regarding the authenticity of articles published here , for them, treat all articles just as a fiction and a ear say.

सम्पादकीय ......

प्रिय मित्रों,

प्रस्तुत अंक तीक्ष्ण शक्ति साधना एवं इतर योनी साधना महा विशेषांक हैं, निश्चय ही बहुत कठिन था मात्र १५ दिनों में दूसरा अंक आप सभी के समक्ष रखना और वो भी विषय को पूर्ण स्पष्टता के साथ रखते हुए. नवरात्रि के पहले और पितृ पक्ष जैसे पावन अवसर पर इन साधनाओं का लाभ उठाया जा सके,इसी अभिलाषा से हमने ये परिश्रम किया है.

जैसा की पहले ही हम कह चुके हैं की हम जो भी विषय वस्तु आप के समक्ष रखते हैं,यथा संभव पूर्ण प्रमाणिकता का आश्रय लेते हुए ही रखते हैं और हर अंक के लिए हमारा यही प्रयास होता है की सदगुरुदेव की कृपा से वो ना सिर्फ ज्ञान वर्धक और अनूठा हो अपितु विषय को वे अपने आशीर्वाद से इतना सरल कर दे की जो भी इन साधनाओं को अपने जीवन में जगह दे, उसका विश्वास इन प्रयोगों और साधनाओं को करने के बाद तंत्र पर और दृढ़ता से स्थापित हो जाये.

तंत्र कौमुदी का प्रकाशन बहुत ही आंतरिक रस्साकसी का परिणाम है. जब कोई भी नवीन और लुप्त तथ्यों को सामने नहीं रखना चाह रहा था, ज्ञान को सिमित कर दिया था और कोई निवेदन कार्य नहीं कर रहा था, तब हमें मजबूरी में ये कदम उठाना पड़ा. हम कोई नवीन कार्य नहीं कर रहे हैं,अपितु सदगुरुदेव के बताये हुए रास्ते पर उन्ही के दिए हुए प्रकाश से अन्य दीपकों को जलाने का मात्र प्रयास कर रहे हैं. सदगुरुदेव का ज्ञान भिन्न भिन्न लोगो या साधकों के पास बिखरा हुआ है.

उसे एकत्र कर परख कर ही हम उसे आप तक पहुचाते हैं, जितने भी भाई ३ कार्य शालाओं में सम्मिलित हुए हो, आप उनसे पूछियेगा की कैसे प्रयोगात्मक विज्ञानं की प्रस्तुति की जाती है, जहाँ कोई फरेब और छल नहीं होता है, अपितु सभी आपस में ज्ञान का आदान प्रदान करते हैं. सदगुरुदेव ने इतना ज्ञान बिखेरा है की यदि उन्हें सही तरीके से सबके सामने लाया जाये तो करीब १,००,००० तंत्र कौमुदी का निर्माण हो जायेगा. और जैसा उनकी ही नीति रही है की किसी भी प्रक्रिया या साधना क्रम का दुहराव ना हो, उसी पथ पर चलते हुए हम भी किसी विषय के अंतर्गत दी गयी सामग्री को दुबारा ना देकर किसी नवीन व गोपनीय सूत्र पर चर्चा करेंगे.

जैसा की हम पहले भी कह चुके हैं की आप निश्चिन्त होकर इन प्रयोगों को सदगुरुदेव से प्रार्थना कर परखें. सफलता आपका वरन करेगी. और यदि आपको किंचित भी लाभ हुआ तो हम तीनों भाई अपना प्रयत्न सार्थक मानेंगे. मेरी ये यात्रा मेरे प्यारे **अनुराग भाई** और **रघुनाथ भाई** के सहयोग से ही आसान होती रही है. नित्य प्रति इन दोनों का प्रेम और ज्ञान मुझे साहस देता रहता है.चाहे कितना भी विरोध हो ,जब तक हम शिष्य धर्म का पालन करते हुए शिष्य भाव से ज्ञान के सत्य मार्ग पर चल रहे हैं तो सदगुरुदेव हमें जरा सा भी विचलित नहीं होने देंगे. अन्यथा जिस दिन हमारा मार्ग बदला एक क्षण भी नहीं लगेगा हमें उनकी दृष्टि का कोपभाजन बनने में इसलिए हमें किसी बात का और किसी का भय नहीं है. आप सभी इन गोपनीय सूत्रों को पढ़े और परखे तथा अपनी राय से अवगत कराये. अगला अंक **निखिल तत्व युक्त श्री साधना तंत्र महा विशेषांक** होगा जोकि दीपावली के पूर्व ही आप सभी के हाथो में होगा ताकि आप उसका भरपूर लाभ उठाये. तब तक के लिए हम सभी की तरफ से ....

निखिल प्रणाम एवं जय सदगुरुदेव

सदैव आपका ही भाई

आरिफ

SADGURUDEV - PRASANG

अगली नस्लें याद करेंगी की तुमने निखिलेश्वरानंद को देखा था -किंकर स्वामी

परमहस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी को अत्यंत निकट से जानता हूँ सदियोंमे एक आध व्यक्तित्व ही ऐसा होता हैं जिसके बारे में कुछ कहा जा सकता हैं जिसके बारे में लिखने में आनंद की अनुभूति हो सक ती हैं . जिसके पास बैठने से ऐसा कुछ अहसास होता हैं की हम इस व्यक्तित्व से कुछ प्राप्त कर रहे हैं और ऐसे ही व्यक्तित्व के धनी हैं परमहस स्वामी निखिलेश्वरानंद

परन्तु इनकी न्यूनता यह हैंकि इन्होने अपने को प्रचार प्रसार से बहुत दूर रखा हैं अपने आपको विज्ञापित करना या प्रचार पाने की कोशिश करना इनके स्वाभाव में ही नहीं हैं . उच्च कोटि के सन्यासी सम्मेलनों में जब भी इन्हें अध्यक्ष पद के लिए आमंत्रित किया जा ता हैं तो ये विनम्रता पूर्वक मना कर एक और हट जाते हैं अगर इनकी जगह कोई दूसरा व्यक्तित्व होता और जो ज्ञान इनके पास हैं जितनी शक्ति सामर्थ्य इनके पास हैं उसका सौवा हिस्सा भी , किसी के पास होता तो वह चीख चीख कर अपने बारे में बताता रहता, पूरी दुनिया उसके चारो और डेरा डाले रहती पर इस व्यक्तित्व में ऐसा कुछ नहीं हैं यदि मैं यह कहूँ की यह व्यक्तित्व प्रचार भीरु हैं तो ज्यादा सही होगा

जो दर्प जो प्रखरता जो विशालता जो प्रचंडता इनके सन्यासी जीवन में मैंने देखी हैं . जो त्याग वृति जो निश्प्रहता इनके सन्यास जीवन मैंने इनके प्रति अनुभव की हैं वह अपने आप में इ क मिसाल हैं . सैकड़ो सैकड़ो सन्यासी शिष्य आतुर रहे हैं इनका शिष्यत्व प्राप्त करने के लिए , हजारो योगी और सन्यासी व्यग्र रहे हैं इनके पास कुछ क्षणों को बैठने के लिए , इनसे कुछ सिखने के लिए और इनसे बहुत कुछ प्राप्त करने के लिए, और इन्होने सभी को बहुत कुछ देने का प्रयास किया हैं ,इनके द्वार हमेशा सब के लिए खुले रहे हैं ,न किसी प्रकार की व्यस्त ता का भाव रखा न व्यर्थ का अहंकार , इसलिए आज हिमालय के हजारो हजारों सन्यासी स्वामी निखिलेश्वरानंद जी का नाम सुनते ही श्रद्धा से झुक जाते हैं,फिर भले ही उन्होंने इस विराट व्यक्तित्व को देखा हो या नहीं ,पर हिमालय के कण कण में इनका व्यक्तित्व गुंजरित हैं और इन्होने हिमालय को पूरे भारत वर्ष से परिचित कराने में जो योग दान दिया हैं साधना की पूर्णता के लिए जो प्रयत्न किया हैं उसकी अपने आप में कोई मिसाल नहीं हैं

इन पंक्तियों के माध्यमसे मैं उनकी आत्मश्लाघा नहीं कर रहा हूँ, मैं उनकी कोई प्रशंशा या विज्ञापन भी नहीं कर रहा हूँ ,उस व्यक्तित्व को इसकी जरुरत भी नहीं हैं . यदि आकाश में सूर्य अपने प्रखर तेज पुंज से चमक रहा हो और उल्लू अपनी आखें बंद कर ले या सूर्य कोदेखें नहीं और वह कहे की सूर्य हैं ही नहीं तो इसमे सूर्य का क्या दोष ? यदि वर्षा ऋतू में अत्यंत मधुर वर्षा की बुँदे सम्पूर्ण पृथ्वी को आप्लावित कर रही हो अगर कोई चातक अपनों चोंच खोल कर उस मधुर जल को प्राप्त नहीं कर पाए तो इसमें वर्षा का क्या दोष ?? और कहीं पर विराट व्यक्तित्व और ज्ञान का पुंज साकार हो औरकोई उसे प्राप्त ही न करना चाहे और अपनी आखें बंद किये अपने ही अन्धकार में चूर अपनी ही अज्ञानता से व्यक्तित्व की आलोचना करता रहे तो उसमे उस व्यक्तित्व का क्या दोष

सिद्धाश्रम का आधार पुंज

आप अपने घर में बैठे इस बात को अनु भव नहीकर सकेंगे की एक व्यक्तित्व के होने से और न होने से कितना बड़ा अंतर जाता हैं , फिलहाल आप इस बात को अनुभव नहीं कर सकेंगे की किसी विराट व्यक्तित्व के होने या न होने से उस संस्था में कितना अधिक अंतर आ जाता हैं ,

यह हमने अनुभव किया हैं , इसमें दो राय नहीं हैं की सिद्धाश्रम समस्त ब्रम्हांड का आध्यत्मिक चेतना का पुंज हैं और वहां निरंतर उच्च कोटि की साधनाए संपन्न की जा रही हैं ,, परन्तु निखिलेश्वरानंद जी के सदेह होने और न होने से एक बहुत बड़ा अंतर हम अनुभव कररहे हैं ,उनके वहां रहने से एक चेतना का एक ऐसा वातावरण बना रहता हैं जिसमे एक एक कण गुंजरित रहता हैं स्वामी जी ने पहली बार हमें अहसास दिलाया की साधना रुखी सुखी और निर्जीव बे रस नहीं हैं अपितु इसमें भी आनंद और मधुरता का सामंजस्य हैं उन्होंने ही पहली बार सिद्धाश्रम को भारतीय और कलात्मक नृत्य इ संयोजित किया पहली बार देवताओ को भी सिद्धाश्रम में साक्षात् उपस्थित करने का प्रयास किया,पहली बार आखें बंद किये योगियों को भी मुस्कराहट और हंसी प्रदान की पहली बार शांत और निर्जन वातावरण में खिलखिलाहट और हास्य और आनंद का उद्रेग किया और आज जो सिद्धाश्रम में जो चहल पहल हैं जो आनंद का सागर लहराता हैं वह्सब उनकी देन हैं

आज भी वह सूक्ष्म प्राणी से नित्य या लगभग नित्य का कर सबको संभाल लेते हैं ,सभीके हाल चाल पूंछ लेते हैं , सभीकी बात सुन लेते हैं , और सभी को बहुत कुछ बता देते हैं, यह एक आश्चर्य इस रूप में , अ त्याधिक व्यस्त रहता हुआ यह आदमी इतना समय कैसे निकल लेता हैं पर हमने अपनी इन आखों से देखा हैं पिछली शिवरात्रि को उन्हें स स्वर गृहस्थ शिष्यों के मध्य रुद्राभिषेक कराते हुए और शिव पूजन कराते हुए देखा हैं . तो ठीक उसी क्षण उन्हें सन्यासी शिष्यों भी भगवान् पारदेश्वर का पूजन संपन्न कराते हुए अपनी इन आखों से उन्हें देखा हैं ,मैंने उसमे भाग लिया हैं औरआनंद की असीमता उसमे अनुभव की हैं , एक हिसमय में दो विभिन्न स्थनों में दो रूपी में दो साधना संपन्न कराना एक विराट व्यक्तित्व का ही रूप हो सकता हैं और इस बात के लिए हमसब को गौरव और गर्व हैं .

जिन्होंने कदमो से नापा हैं ब्रम्हांड को

और यह कह कर में कोई अनहोनी बात नहीं कह रहा हूँ , मैं इन पंक्तियों के माध्यम से वही सब कह रहा हूँ , जोमैने उसके साथ रह कर अनुभव किया है , और जो में उनके साथ रह कर सिखा हैं समझा हैं अहसास किया है ,मै उनका शिष्य भी नहीं हूँ , पर आज में यह अहसास करता हूँ की यदि मैं उनका शिष्य होता तो अपने आप को ज्यादा गौरवान्वित अनुभव करता उनकी साधनात्मक गतिके सामने यह भू मंडल तोबहुत छोटा सा हैं ,जिस किसी दिन उन्होंने ब्रम्हाड के रहस्यों को उजागर किया उस दिन तो पूरी पृथ्वी पर तहलका सा मच जायेगा क्योंकि उन्होंने उन ग्रह नक्षत्र पर भी विचरण किया हैं जहाँ आज भी मानव विदमान हैं जहाँ पर विज्ञानं की उचाई या हैं जहाँ पर साधना की प्रतिभूति हैं और मुझे विस्वास हैं की वह दिन जल्द ही आने वाला हैं जब वे विस्तार से इस विषय पर प्रकाश डालेंगे ,

पर जब मैं उन्हें गृहस्थ जीवन में देखता हूँ तो में आपने आप में दंग रह जाता हुं मेरा मन मेरा मष्तिस्क और मेरी साधना विस्वास ही नहीं कर पाती की हिमालय का उच्च कोटि का योगी निखिलेश्वरानंद और जोध पुर में कार्य करने वाला व्यक्तित्व एक ही हैं . एक सामान्य मनुष्य के रूप में जीवन संचालित करने वाला हर क्षण सक्रिय रह कर कार्य करने वाला व्यक्तित्व एक ही हैं , यह समयोजन करना बहुत ही कठिन हो रहा हैं , पर जोकुछ भी में देख रहा हुं वह भी सत्य ही हैं जो कुछ देखा हैं वहभी पूर्ण सत्य हैं, उच्च कोटि का व्यक्तित्व ही इस प्रकार से नम्र और विनीत हो सकता हैं हरी भरी डाली ही बार बार लचक सकती हैं झुक सकती हैं. झूम सकती है सुखा ठुठ न तो झुक सकता हैं और न किसी को छ्या और आनंद देसकता हैं ,

यहाँ पर मुझे वेद व्यास का वह श्लोक का स्मरण हो आता हैं, की भगवान् श्री कृष्ण पूर्ण सोलह कला युक्त होते हुए भी जीवन भर अत्यंत नम्र बने रहे उन्होंने सामान्य मनुष्य के रूप में जन्म लिया , अवतरित नहीं हुए , सामान्य बालको की तरह आचरण किया , ठीक उसी प्रकार खेले कूदे और,कार्य किया और ठीक उसी प्रकार से हसना रोना , प्रेम करना , मुस्कुराना और शिक्षा प्राप्त करना उन्होंने किया , इसलिए की वह यदि मानव को कुछ देना चाहते थे तो आवश्यक था की वे भी सामान्य मनुष्य कीतरह बने रहे ,ठीक उसी प्रकार से दुःख सुख अनुभव करे , सामान्य मनुष्य की तरह ही उदास हो परेशान हो चिंतित हो मुस्कुराये हँसे खिल खिलाये और कहीं से भी किसी को ऐसा न अहसा स न होने दे की अर्जुन के रथ पर बैठा यह सामान्य सारथि अपने आप में विराट तेज पुंज लिए हुए हैं . सब लोगों ने उसे सामान्य और साधारण मनुष्य समझा , द्रोपदी ने उलाहना दिया , अर्जुन ने भला बुरा कहा ,दुर्योधन ने उसे अपना प्रबल शत्रु समझा पर इतना होने पर भी वे सामान्य मानव बने रहे पर इसी सामने मानव ने गीता जैसा विराट ग्रन्थ अगली पीढ़ियों को सौपा , सामान्य से दिखने वाले व्यक्ति ने महाभारत जैसा युद्ध जीत कर दिखा दिया की विराट ता प्रदर्शन करने की वस्तु नहीं हैं

और इस श्लोक के अंत में वेद व्यास ने बहुत ही सुन्दर बात कही हैं की यह द्वापर युग का सौभाग्य था की इस युग में श्री कृष्ण जैसे व्यक्ति ने जन्म लिया विचरण किया कार्य किया , पर यह द्वापर युग के लोगोंका दुर्भाग्य भी था की उस समय के लोगोंने उनका महत्त्व न समझा न ही लाभ उठाया . उनके जाने के बाद आने वाली पीढ़ी ने उनकी विराट ता का अहसास किया उनके ज्ञान और चिंतन को समझने का प्रयास किया . वह एक ऐसा व्यक्तित्व था जो लौकिक रूप से प्रेम करता हुआ दिखाई देता था राधा के पीछे मंडराता हुआ और बांसुरी बजाता हुआ दिखाई देता था . और उसी सामान्य मनुष्य ने गीता जैसा अद्वितीय ग्रन्थ भी लिखा .

जो सारथि बना हुआ सामान्य व्यक्तित्व लग रहा था , उसने महाभारत जैसे युद्ध में पांडवो को विजयी दिला कर बता दिया विराट ता अपने आप में आत्म तत्व हैं काश द्वापर युग के लोग उस विराट व्यक्तित्व को पहचान पाते,उससे जुड़ पाते तो निश्चय ही वह लोग पूर्णता प्राप्त कर पाते, परन्तु यह सब तो बाद में ही होना था उनकी महानता और विराट ता की आने वाली पीढ़ियों ने ही अनुभव किया , उसी युग में किसी की विराट ता और महानता को अनुभव नहीं किया जा ता वे तो केबल आलोचना कर सकते हैं और यह तो समाज का नियम हैं मैं समझता हुं की उसीसमय चक्र की पुनरावृति हो रही हैं .

अगली नस्ले याद रखेंगी

जिस रूप में यह उच्च कोटि का व्यक्तित्व सामान्य मनुष्य की तरह हर्ष शोक , सुख दुःख में जी रहा हैं आलोचनाओ के झंझावात में आगे बढ़ रहा हैं, उस रूप में आज का एक सामान्य मनुष्य उन्हें पहिचान नहीं सके तो कोई आश्चर्य की बात नहीं,जिस प्रकार से यह व्यक्तित्व अपने सामान्य गृहस्थ शिष्योंको समझा रहा हैं उनके संदेह और आलोचनाओ के मध्य में अपने आपको एक निष्ठ कर रहा हैं . वह वास्तव में बहुत ही कठिन हैं इस प्रकार का जहर पीते रहना एक सामान्य मनुष्य के वश की बात नहीं हैं , जिस प्रकार से ये गृहस्थ शिष्य अपने आप को शिष्य कहने का दंभ रखते हैं उ स हिसाब से तो शिष्य शब्द किपरिभाषा ही बदल जाएगी फिर तो हम सन्यासी शिष्योंको यह शब्द न लगा कर कुछ ओर ही शब्द ही लगाना चाहिए ,

होना तो यह चाहिए था की इस सामान्य मनुष्य के आवरण के भीतर जो महानता और विराट ता छिपी हैं उसे हम पहिचान ने का प्रयत्न करे ,उनसे आत्म सम्बन्ध स्थपित करे उनके कार्योंमे योग दान दे और कुछ ऐसा करे की जिससे की हम सही अर्थो में उनके शिष्य कहलाने का गौरव प्राप्त कर सके एक बार फिर उनके होठो पर मधुरता के साथ "शिष्य "शब्द उच्चारित हो काश ऐसा हो पाता.

आज इस जन्म दिनके अवसर मैं समस्त योगियों और सन्यासियों और हिमालय के कण कण की तरफ से सिद्धाश्रम के प्रत्येक व्यक्तित्व की तरफ से उनका हार्दिक अभिनन्दन करता हुं और हम सब यही कामना करते हैं की हमारा जीवन और हमारी आयु उन्हें प्राप्त हो और वे ज्यादा वर्षों तक जीवित रह कर अद्वितीय कार्य संपन्न कर ते रहे . .

और यह बात भी दो टूक सत्य हैं किआप सब गृहस्थ शिष्योंका सौभाग्य हैं की हमारी अपेक्षा आप लोगों को इस व्यक्तित्व ने ज्यादा समय दिया , ज्यादा अवसर और ज्यादा सुविधा दी हैं . आज भले ही आप इनपर या अपने आप पर गर्व का अहसास न कर सके पर यह निश्चित हैं की आने वाली पीढ़िय आप पर गर्व करेंगी की कभी आप इस विराट व्यक्तित्व के संपर्क में रहे हैं

आने वाली पीढ़िया सहसा आप पर या आपके कथन पर यह विस्वास नहीं कर पाएंगी की आपने इस विराट व्यक्तित्व के साथ कुछ क्षण बिताये हैं इनके साहचर्य में रहे हैं और इनके मुख से अपने लिए शिष्य शब्द का उच्चारण सुना हैं परन्तु हम सब लोगों को आप सब गृहस्थ शिष्यों पर इर्षा हैंकि आप हम लोगों की अपेक्षा ज्यादा समय प्राप्त करसके हैं .और आपके सौभग्य पर गर्व हैं की आप इनके साथ हैं आने वाली पीढ़िया आप पर गर्व करेंगी

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञानं पत्रिका १०० वे अंक से

****

Coming generation will remember that you had seen nikhileshwaranand –kinkar swami

I knew very closely paramhans swami nikhileshwaranand ji, in many century there may one person would have possible and on writing about gives a feeling of anand and joy, and sitting nearer to him gives us feeling that we are really getting something , such is the personality of paramhans swami Nikhileshwaranand ji .

Only weakness in his personality that he is very far away from himself to advertisement a, and he has no desire for that advertisement and neither he ever tried. when he has offered the post of presiding over vary high level sanyasi sammelan, he even turndown the proposal, if any other person have the same opportunity than and have the 100 th part of the gyan and shakti what he has, he will definitely shouted to whole world about himself and whole world sitting just nearer to him.

But swami has no such a things in it. if I say he is afraid of such an advertisement that may be true.

What darp , what radianace , and forcefulness I have seen in his sanyasi life, what the un attachment I have felt in his sanyasi life that is unmatchable , and unique in whole world. hundred of hundreds sanyasi eagar to have shishyta of him, thousand of sanyasi eager to even spent some moment with him for learning something and getting many things. And he tried to give as much as possible to him, his door always open to every one he never shown any ego nor any show of busy sign , that's why today thousand of sanyasi bow down their head when they even listen to his name. may be they never seen him in person or not. But each particles of himalay has a name o f swami nikhileshwaranand ji. And he introduce the real aspect of Himalaya to whole india, he tried his best for the completeness in sadhana, that is pure unmatchable things.

Through theses lines am not parsing him, neither doing any advertisement or other. This person does not need this things. .if sun is fully shining in sky and if any owl not seeing him than this will not be fault of sun, and in rainy season if water drop spreads in whole earth and if chetak bird not take advantage of that than whose fault is this.

Like that if any place such a great giant personality spreading the gyan and if any one not want to take benefit of that and indulge in criticism in his blind ego than whose fault is this.

Main foundation of siddhashram:

You are notable to feel that sitting in your home, that to have and not have a person creates how much a difference, , and this also cannot feel that in any organization if such giant person if not have than what is the difference, but that we felt , there is no two thought that siddhashram is spiritual centre of whole spiritual gyan in this universe, and there continuous sadhana is being completing.

but there is big difference w e felt without not having swami nikhileshwaranand ji. when he is wit us than such a radiance is available all around than each particles become fully energize. swami ji is the person who introduce us that sadhana is not a ritual that has to be followed without joy and happiness, but that also a things of joy happiness, he is the first person who introduce Indian classical dance in siddhashram and if devta and devi appeared there in person form, he is the person responsible for that . first time he make joy and happiness on the face of yogies who are there sitting with closed eyes. this becomes only through him ,and change the atmosphere of there from total silence to vibrant and with joyful. Whatever atmosphere prevalent in siddhashram such a joy vibrant and happiness , now joy of ocean flows every where, and dynamism there is because of him.

Even today he visited regularly here with astral form and cared every one here, asked well being of every one, listen everyone soul calls, and guidance to each one, it amazing that this highly busy how can manage his time so that he has time for thi too. Bu t we have seen all this in our eys. In last shiv ratri we have seen him doing rudrabhishek and shiv poojan with his householder shishy but at the same time I also see him doing poojan of Bhagvaan pardeshwar for his sanyasi shishy i also take part in that feels a joy of ocean, at the same time, in two place and doing two different form of sadhana this is possible only by a giant personality of the spiritual world, and we are proud of that

He who measure whole universe,

If I am telling this than I am not saying anything which can not be possible, here in theses lines I am telling only that what I felt being with him, what I felt and learnt, I am not his disciples , but I felt that if I were than it would be much proud and happiest things for me. for his sadhanatmak ability this earth is very small place.

If any day he, if disclose the secret of the universe, people can not believe that , even whole world cannot believe in his ear. Since as also travelled on the planet and star where still human being lives, they are much advanced in science and in spiritual field, I hope very positively that soon that day will come , when he will tells us in details,

But when I see him doing his responsibility as a normal ordinary house holder I am totally amazed , my mind ,my sadhana can not believe that this, highest yogi of Himalaya and the house holder this person who is working here is the same person, as ordinary house holder, always engaged in work , understanding the value of each second. Understanding both form in one identity is very difficult. But what ever I am seeing /feeling is also true, is totally true , and what ever I have seen that was also true. Only person belongs to higher class have such a politeness, since only green branch of any tree can fold, can down, and can flow with wind, but rigid tree with having no life can not fold or down or can flow with wind. So it can not give pleasant ness and happiness to any one.

Here on this point I remembered one verse of ved vyas, according to that Bhagvaan shri krishn though having all the 16 kala, always be a polite one, like an ordinary person he was born, not appeared as a avatar. Like an ordinary children he behaved, and ply and get education like others, and the same way he cry , smile and show happiness, and all this is necessary is cause he want to give to the common person so also behave like a common one. So like common person he felt sorrow and happiness, become tense and smile too. but he never make any impression that the person sitting on the arjun rath as a sarthi is a great one , I,e, having infinite spiritual radiance, droupdi also accused him, arjun also criticise him.

Duryodhan consider him as his main enemy, but even on this he behaves/became very common. And this common person gives the most valuable book gita to the next generation and this common person show through winning the great war of Mahabharata that the spiritual greatness is not the things to show.

And the last line of that verse ved vyas tell us a very beautiful line that is the fortunate of dwapar yug that person like him born , but at the same time It was the misfortunate of that era that nether person could not understand and take advantage of such a great one, after his passing next generation could understand the value or great ness of that person, people tries to understand his gyan , his pragya , he was the person on hand ,it appears that he was following radha doing love/sneh and playing flute, and that ordinary person wrote such an extraordinary granth GITA, and provide victory to pandav, that spiritual greatness is the internal matter kash if the person of that era understood him than surely they would get completeness, but all that had to be happened afterwards, his greatness and spiritual giantess felt by next generation, no one can be understand in same period and age , only belongs to that era can criticize and , I can understand the time wheel and feeling that same is repeating once again.

Next generation will remember

As he is facing all the sorrow /happiness, in midst in criticism and still moving forwards, and in this form , if can not be understand by common people , that would not be any unknown things. as he is busy teaching his house holder shishy and facing their doubt and criticism is very very difficult ,drinking poison of this kind is not so easy, as theses common house holder all them self shishy , so the meaning of shishy will be completely changed, we sanayasi have to search some other word.

actually it should happen that they/we try to understand the divinity and greatness that lies in this person, tried to understand, have a direct contact ,and provide help to his work whatever we can, so that we in true sense became his shishy , so that once again he very smiling can speak the word “shishy” though his divine mouth. Kash that would happened..

Today on his birth day we, from all the sanyasi and all the yogies and from each and every particles of Himalaya and from the side of all the yogies of siddhashram, provide congratulation to him, we all pray that all our remaining age will be given to him, so that he can do his work with more time. And do unmatchable things /work.

And this is also true that this is great luck of your that this person has given more time to you compare to us, more opportunity and more facilities compare to us,, may be you can not understand or may not feel proud , but its sure that coming generation suddenly can not believe you that you have some moment this great personality. And listen word "shish" for yourself. and we all re have jealousy that you people can get much time compare to us and proud on luck that coming generation will proud on you.

from :Mantra Tantra Yantra Vigyan mag. !00 th issue

SHRI GANESH PRAYOG

समस्त बाधा निर्मूलन कर सकने में समर्थ तीव्र प्रयोग

इस तीक्ष्ण शक्ति साधना महा विशेषांक में भगवान् गणपति से सम्बंधित एक तीव्र प्रयोग यहाँ पर दिया जा रहा हैं, ऐसे तो अनेको प्रयोग हैं जो भगवान् गणपति के वरदायक प्रभाव दायक से सम्बन्ध रखते हैं पर उनके सम्बन्ध रखने वाली तीक्ष्ण स्वरूप की साधना का भी तो अपना एक सौन्दर्य हैं हैं क्योंकि मानव जीवन तो अनेको दोषों और अनेको कमी , न्यूनताओ से ग्रसित हैं कभी यह वाधा तो कभी वह वाधा ,, तो इनसब का निर्मूलन भगवान् गणेश के जिस स्वरुप की साधना से संभव हैं वह आपके लिए ..

तीन दिवसीय यह रात्रि कालीन प्रयोग हैं , जब भगवान् गणेश की बात होगी तो उनके लिए दिन बुध वार निर्धारित हैं ही साथ ही साथ यदि शुक्ल पक्ष से प्रारंभ करे तो अति उत्तम, तीव्र प्रयोग हैं उन्हें लाल वस्त्र भी अधिक प्रिय हैं तो पहिनने वाले वस्त्र और आसन और जिस वस्त्र पर गणेश जी का विग्रह या यन्त्र या प्रतीक या कुछ भी संभव न हो तो मौली से बंधी सुपारी को ही गणेश मान कर रखना हैं वह लाल रंग का ही होना चाहिए .

आप संकल्प ले और अपनी किन किन समस्या के निर्मूलन के लिए कर रहे हैं उसे उल्लेख करे. फिर प्रार्थना का उच्चारण करे

प्रार्थना : विघ्न नाशिने शिव सुताय वरद मूर्तये नमः

फिर फिर भगवान् गणेश का पूजन सामान्य पंचोपचार से करें

निम्न मंत्र की ११ माला प्रति रात्रि जप तीन दिन तक करना हैं

मंत्र : ॐ गं ग्लौम गं गणपतये विघ्नविनाशिने स्वाहा ||

जप आपको लाल रंग की मूंगा माला से करना हैं, अनेको साधनाओ में साधना समप्तिके बाद कुछ हवन सामग्री से आहुति देनी होती हैं चूँकि यहाँ पर बाधा ओं से छुटकारा पाने का प्रयोग हैं तो हवन सामग्री के स्थान पर काली मिर्च का उपयोग करना होगा .और मात्र १०८ बार ही आपको आहुति देनी हैं . फिर सद्गुरु देव जी का पूर्ण पूजन या सामान्य जैसी ही परिस्थिति हो जैसा आपको ज्ञात हैं की हर साधना के शुरुआत में करना ही चाहिये वैसे ही आप इस साधना के प्रारंभ और अंत में करे .

यह प्रयोग तीव्र हैं अतः थोड़ी घबराहट और शरीर में ताप का अहसास हो तो परेशान न हो यह तो विकारो के बाहर जाने की क्रिया हैं

****

Teekhsn ganpaTi sadhana

Here in this Mahavisheshank related to teekshn shakti sadhana , one very very effective sri ganesh prayog Is for you. There are many prayog that are very much related to blessing of Bhagvaan ganesh, but there is also a beauty associated with teekshn prayog of him. Since human life is now surrounded with many doshas, many deficiencies , sometimes this problem and sometimes that ,,

than all theses problem removal can be done by the form of lord ganesh 's form , so sadhana of that form is for you.

This is three night sadhana .when we talk about Bhagvaan ganesh than Wednesday is allotted for his sadhana, if this sadhana can be started on shukl paksh than it would be best . and use clothes and aasan and the cloth on that either ganesh vigrah or ganesh yantra or supari surrounded with maouli (red yellowish color string) is placed would be of red in color.

Take a sankalp properly mentioned for removal of which problem you are doing this sadhana , than chant this prarthana,

Prathna : vighan nashine shiv sutaay vard murtaye namah

Than do the poojan of ganesh Bhagvaan with panchopchar.

Than do 11 round of rosary the mantra jap for three night .

Mantra : oM gaM glouM gaM ganpatye vighan vinashine swaha ||

For jap use red color munga mala, in many sadhana you have to do the havan/ aahuti , since this prayog is for removal of many problem so use black mirch and only 108 times aahuti is sufficient. and all of you already aware that do the Sadgurudev purn poojan as per your condition , since this is the must vidhan for any sadhana's beginning and end point .

Since this prayog is very effective and so during the jap time if you feel little bit temperature rising in body , than not to be worried , this is the sign of removal of various impurity.

itar- yoni who are they ?

क्या हैं ये ,और क्यों हैं इनकी साधना जरुरी

यह पूरा विश्व अनेको आयाम लिए हुए हैं यदि बस इतना ही माना जाये की जो केबल और केबल हमें ही दिख रहा हैं वही ही सत्य हैं यह तो बिना वजह वाद विवाद की स्थिति हैं ,अनेको सूक्ष्म जीव और अनेको ऐसे जीवाणु का भी अस्तित्व हैं जिन्हें सामान्य रूप से हमारी आखों से भी देखना संभव नहीं हैं , तब क्या उनका अस्तित्व नकार दिया जाये ,

केबल पानी को गर्मकरने से क्या सारे जीवाणु समाप्त हो जाते हैं , आप कहेंगे की हाँ यही तो पढ़ा हैं

पर अभी हाल की वैज्ञानिक शोध में यह तथ्य आया हैं की खौलते हुए लावे में भी ऐसे जीवाणु या सूक्ष्म जीव का अस्तित्व पाया गया हैं जो समझसे परे हैं , तो..

ठीक इसी तरह हमरे शास्त्रों में अनेको ऐसी बाते बताई गयी हैं जो सामान्य विद्या बुद्धि से परे हैं . अनेको ऐसे दिव्य आश्रमों का वर्णन हैं जो शायद आप माने नहीं वह आज भी हैं बस समय के चतुर्थ आयाम में हैं ,यदि आप जा कर देखे तो आप स्वयं ही समझ जायेगे की सत्य क्या हैं ,पर बिना जाने या जानने कीकोशिश किये बिना देखे ही कह देना तो उचित नहीं हैं , अनेक लोगो ने उन दिव्य स्थानो की यात्रा की भी हैं, आधुनिक काल के अनेक व्यक्तियों ने इस बात की पुष्ठी कीभी हैं

ठीक इसी तरह मानव जीवन के अलावा भी अनेक योनिया इस विश्व में विदमान हैं जिन्हें आप पितृ , भुत ,प्रेत पिशाच , यक्षिणी .डाकिनी,गन्धर्व और अनेको नाम दे सकते हैं पिशाच , और अन्य के नाम से बिलकुल भी घबराने की जरुरत नहीं हैं क्योंकि यह भी एक वर्ग हैं बस नाम अलग हैं .पर इससे क्या फर्क पड़ता हैं .

सदगुरुदेव जीने अनेको बार कहा की इन मानव के इतर योनी यो को भी एक स्वस्थ दृष्टी से देखने की आवश्यकता हैं , और इनको भय की दृष्टी से नहीं देखना चाहिए ,उन्होंने अनेक साधको के माध्यम से भी हमारे सामने बात राखी की यह योनिया तो अपनी मुक्ति के लिए स्वयं छट पटा ती रहती हैं कभी उनके वर्ग की पीड़ा भी तो हम समझे , यह बात तो भुत प्रेत पिशाच, वर्ग की हो गयी, पर जो हमारे पितृ हैं उनका के वे तो हमारे पूर्वज हैं मेरा मतलब हमारे कि परिवार के सदस्य रहे हैं उनके बारे में उचित सोचा जाय, पर इतने से तो काम नहीं चलता क्या हम जानते हैं की वास्तव में पितृ का मतलब क्या होता हैं .. इस वर्ग में केबल हमारे परिवार के ही नही बल्कि अनेक ऋषि मुनि भी आते हैं, और आते हैं भीष्म पितामह जैसे महान तपस्वी ,, तो इनको एक बहुत बड़े दृष्टी कोण से देखना चाहिए .

क्योंजरुरी हैं ये सबके बारे में जानना , तो यह जान लीजिये कितने परिवार ऐसेहै जिनके यहाँ एक भी संतान नहीं हैं कितना इलाज कराया हैं पर कुछ नहीं हुआ पर जब किसी उच्च कोटि के साधक या तपस्वी के कहने पर जब जाकर विधि विधान से श्राद्ध कर्म कराया गया तो परिवार में सुख शांति और प्रसन्नता का माहौल बना और जो कमी थी जीवन की वह दूर हुए ,

वहीँ जीवन में किसे एक विश्वस्त मित्र की तलाश नहीं रहती हैं आज के जीवन की विडम्बना तो आप जानते हैं की सब कुछ तो हैं पर कोई अपना नहीं जिससे आप अपना कुछ बात सको , कोई तो ऐसा हो .. भले ही आप पति पत्नी हो , कितने भी अंतरंगता का दंभ भरते हो पर वास्तविकता तो आप जानते हैं , आधुनिकता ने हमारे चेहरे पर इतना मुखौटा लगा दिया हैं की हम अपना असली रूप भूल गए हैं , जब चारो ओर सभी ढोंग कर रहे हो तो हमें भी तो वही करना पड़ेगा ..न

जीवन की इन्ही विसंगतियों को भाप कर सदगुरुदेव जी ने अनेको ऐसी साधनाए दी हैं और इन इतर योनियों के बारे में कहा भी हैं की एक बार आपका सांसारिक मित्र धोखा दे दे पर जब यह एक बार आपकी मित्र हो जाये तो कभी भी विस्वात घात नहीं करते हैं, मैं अन्य विद्वानों के कथन का खंडन नहीं कर रहा हूँ , पर में यहाँ पर सिर्फ और सिर्फ अपने सदगुरुदेव जी के द्वारा दी गयी साधनाओ के बारे में ही बात कर रहा हूँ.

आपके यह सहयोगी बने , आपका दृष्टी कोण इनके प्रति निर्मल बने आप भी माने की इनमे और हममे कोई विशेष अंतरनहीं हैं बल्कि आयाम का अंतर हैं , तब आप एक साधक बनाने की दिशा में एक कदम बढ़ाते हैं .

अप्सरा यक्षिणी भी किन्ही अर्थो में इतर योनी के कहे जा सकते हैं ,

पूज्य सद्गुरु देव जी का एक स्वपन यहभी हैं की हम सभी इन वर्गों के प्रति स्वस्थ चिंतन रखे और इनके सहयोग से अपना जीवन ओर खास कर सधानात्मक जीवन को संभारे .

यहाँ एक प्रश्न उठता हैं की क्या इन योनियों की सधना शास्त्र सम्मत हैं ,क्योंकि गीता में भगवान् श्री कृष्ण कहते हैं की जो इन योनियों की साधना करता हैं भुत प्रेत और अन्य भी वह मृत्यु उपरान्त इन्हों कोप्राप्त होता हैं , इस हिसाब से तो यही कहना चाहिए की इनकी साधना नहीं करना चाहिए ,

पर हम ये भूल जातेहैं जो भी क्रिया गुरु नहीं बल्कि सदगुरुदेव के निर्देशन में होंगी जो उनके आशीर्वाद से होगी और जो उनके द्वारा प्रदत्त साधनाओ से से होगी उसमे ऐसा कुछ नहीं हैं आप निश्चिंत रह कर साधना करे .हजारो साधक इस बात के स्वयं गवाह हैं .

****

What is itar yonies and why we need to know

This world or universe has many dimensions ,if we consider that or believe what we see actually only that is true than this is just a point of baseless debate, there are so many bacteria and many smallest living being to see them even from naked eyes is not possible. Than can be ruled out the possibility of their existence ,???

Is boiling of a water destroy all the germs , ? you will reply yes . it is so , that what ,we have read in our school and college , but through very recently research ,this has been figure out that even in liquefied lava of volcano , there are certain type of bacteria living there even of such high temperature, this is really amazing.

Like that there are many things/description in our shastras tells us or mentioned there , to believe on that, becomes very very difficult, and beyond the scope of general common masses . there are many description of many divine ashram, and they are still in existence , since they are in fourth dimension of time , to see them is not so easy. But without seeing them or try to go there just make a statement that no such things ever exists , how much valid?? Many person of modern life has got an opportunity to travel there , and they have mentioned about that in various platform.

At the same way, there are many yoniya or (living elements /being) has an existence in our universe. To whom you can call pitr, bhut ,prêt pishach,yakshini, dakini ,gandharv, like that so many division, one should not to be fear out of pishach and other yoni's name , they are also a part of other division , only name is different than what does that matters.

Sadgurudev ji has tells us many times , one should have healthy out look towards theses divisions. And should not be unnecessary fear out.

And through various sadhak's experience he showed us that theses so called bhut ,prêt , pishach division are very much in pain struggling for there self pains, may be ever we can understand their pain,?? So this is the talk about prêt . pishach varg, but what about pitr varg… there were even be the part of our family so we should have to think and do behave properly about them. But that is not enough , do we know that who are actually pitr and what other are included in that division. Many rishies and great tapaswi like bhishm pitamah (a great warrior of Mahabharata) are included in this varg. so we should see this varg with some more respect.

Why we need to know about them, so kindly note that there are so many family that are not having a s ingle child in spite of husband and wife both are medically fit for that. They go for many highly expensive treatment but nothing happened, but on the advice some sadhak or tapswi they go for shradhha karm , they found there so many snatched happiness are returned and have peaceful life with completeness,

Who do not want a true friend, but we are very much knew that the reality happening today , you know everything but helpless to find a true friend,, mat be there is someone .. to whom we can open our heart , even you are husband and wife and showing that how much you are caring each other but reality you knew better, the modern life places so many mask on our face that we are forgotten our true face, when every where people are playing games .. than we have to do the same..

After considering all these situation prevalent in our society , poojya sadgurudev ji has given so many sadhanaye , even your so called worldly friend can cheat you but theses yonies if become your friend , than they never ever cheat you. Here I am not set asiding the view and thought already available in this connection by other tantra savants but just talking about sadhanaye given by Sadgurudev ji.

Theses all itar yoni be helpful to you, your view would be healthy one, and understand there is no such a difference between us and they ,only dimension is different, then we move a single step ahead to become a sadhak.

Apsara and yakshini can also be consider in this varga.

Poojya Sadgurudevji has dream that we all have a very healthy outlook towards theses division. And take there help to flourish our sadhanatmak life.

Now one more question rises Is there sadhana is good as per our shastra concerns like as gita says those who worship to itar yoni may become the same after the death , that means one should not go for that.

But common masses often forget that when all the sadhana process directed as per Sadgurudev guidance or in his supervision or protection of his divineness or through the sadhana given by him. Than no such a problem occurs ,so go ahead with confidence ,,thousand of thousand sadhak are a self evidence.

ROSARY- ENERGIZE PROCESS

कुछ सरल विधिया जो आपने चाही थी

यंत्रो की सामान्य प्राण प्रतिष्ठा विधि तो हमने तन्त्र कौमुदी के विगत के अंक में दे हो चुके ही हैं , पर आपके सन्दर्भ में अनेको पत्र और इ मेल हमें मिले जिसमे हमसे पूछ गया था की क्या सामान्य से सामान्य से प्रयोग में संस्कारित माला की जरुरत होती हैं ??तो उत्तर यह हैं की हाँ बिना संस्कार की माला का प्रयोग करने से सम्बंधित देवता क्रुद्ध हो जाते हैं तो हर प्रयोग के लिए यह माला कहां से लाये तो आप सभी के लाभार्थ यह माला को संस्कारित करने की विधिया इस लेख में आप सभी के लिए

आप जानते हैं की विभिन्न प्रयोग के लिए विभिन्न मनको की माला का उपयोग होता हैं , कभी 51 तो कभी 31 पर अधिकांश प्रयोग और साधना में 108मनको से युक्त माला का प्रयोग होता हैं.

पर १०८ ही क्यों यूं तो सभी का एक विशेष अर्थ हैं हैं पर सदगुरुदेव भगवान् ने कहा हैं की मानव शरीर में 7चक्र नहीं बल्कि 108 चक्र होते हैं , और उन्होंने इस संदर्भ में विभिन्न उदाहरण भी दिए हैं साथ ही साथ इस हेतु एक बार एक विशिष्ठ दीक्षा १०८ चक्र जागरण दीक्षा भी उन्होंने प्रदान की थी, तो जब भी हम 108 मनको की माला से मंत्र जप करते हैं तब हर मनके के माध्यम से एक विशेष चक्र पर स्पंदन होता ही हैं फिर उसे हम महसूस चाहे या न चाहे करे .यही एक गोपनीय तथ्य हैं इन मनको का 108 होने का तभी तो 108 मनको वाली माला सर्वार्थ सिद्धि प्रदायक कही जाती हैं

और यह माला ही तो इस साधना की एक विशेष उपकरण हैं , सदगुरुदेव भगवान् कहते हैं की की क्यों एक छोटी छोटी से बात पर अपने सदगुरुदेव पर भी निर्भर रहना , उन्होंने ही तो अनेक बार माला और यंत्रो को प्राण प्रतिष्ठित करने की विधिया बताई , उ ससमय के अनेक साधक इस बात के प्रमाण हैं ,

और जब हम आगे बढ़ कर सिद्धाश्रम तक जाने की बात करते हैं और हम खुद एक सामान्य सी माला प्राण प्रतिष्ठित न कर पाए तो आप ही सोच सकते हैं हम हैं कहाँ , अतः इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए इस प्रक्रिया को आपके सामने रहा जा रहा हैं .

यह लेख आरिफ खान जी के द्वारा अनेको वर्ष पहले भी एक पत्रिका में प्रकाशित हो चूका हैं उसी का संक्षिप्त रूप आपके सामने हैं .

ध्यान रहे यहाँ हम माला निर्माण की प्रक्रिया नहीं बता रहे हैं वह एक और ही अलग विषय हैं .

प्रथम तरीका :सर्वाधिक सरल तरीका तो यह हैं की आप किसी भी माला /मालाओं को किसी भी ज्योतिर्लिंग या शक्ति पीठ में मुख्य विग्रह से स्पर्श करा ले, उनकी प्राण उर्जा से माला स्वतः हो प्राण प्रतिष्ठित हो जाती हैं .

द्वितीय तरीका : यह हैं की यदि आप से रुद्राभिषेक करते बनता हैं या आप के घर में किसी से या कोई पंडित द्वारा आपके घर में रुद्राभिषेक किया जा रहा हो उस समय काल में किसी भी पात्र में यह माला जिसे प्राण प्रतिष्ठित किया जाना हैं उसे रख दे , यह स्वत ही परं प्रतिष्ठित हो जाती हैं , रुद्राभिषेक की विधि आप गीता प्रेस की किताबों मेंपा सकते हैं .

तृतीय तरीका :आप के जो भी गुरु हो उनके हाथो के स्पर्श मात्र से भी यह प्रक्रिया सुगमता पूर्वक संपन्न हो जाती हैं .

चतुर्थ तरीका :माला को गंगा जल से स्नान कराये और निम्न मन्त्र उसी माला से १०८ बार जप कर ले , यह भी एक सुगम तरीका हैं .

माले माले महामाले सर्व तत्त्व स्वरूपिणी |

चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्त स्तस्मंमे सिद्धिदा भव ||

पंचम तरीका : शास्त्रीय प्रक्रिया :

पीपल के नौ पत्ते को इस तरह से रखे की एक पत्ता बीच में और और अन्य पत्ते उसे केंद्र मानते हुए इस प्रकार रखे मानो एक अष्ट दल कमल सा बन जाये , बीच के पत्ते पर आप अपनी माला रख दे और हिंदी वर्ण माला से वर्ण ॐ अं से लेकर क्षं तक सभी का उच्चारण करते हुए उस माला को पंचगव्य से स्नान कराये. फिर सद्योजात मंत्र का उच्चारण करते हुए

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः |

भवे भवे नाति भवे भवस्य माँ भवो द्वावाय नमः ||

निम्न वामदेव मन्त्र से चन्दन माला पर लगा यें

बलाय नमो बल प्रमथ नाय नमः सर्व भूतदहनाय नमो मनो न्मथाय नमः ||

धुप बत्ती अघोरमंत्र से दिखाए

ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोर घोर तरेभ्य: सर्वेभ्य : सर्व सर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्य :

फिर तत्पुरुष मंत्र से लेपन करे

ॐ तत्पुरुषाय विद्म्ह्ये महादेवी धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात |

फिर इसके एक एक दाने पर एक बार या सौ सौ बार इशान मंत्र का जप करे

ॐ ईशान: सर्व विद्यानामिश्वर : सर्व भूतानां ब्रह्मा धिपति र ब्रह्मणो ऽ धिपतिर्ब्रह्मा शिवो में अस्तु सदाशिवो ऽ म |

अब बात आती हैं कि कैसे देवता की स्थापना की जाए तो यदि आप इस माला को शक्ति कार्यों में उपयोग करना चाहते हैं तो **"ह्रीं "** इस मंत्र के पहले लगा कर और लाल रंग के पुष्पों से इसका पूजन करें.

और वैष्णवों को निम्न मन्त्र का उपयोग करें

ॐ ऐं श्रीं अक्षमाला यै नमः ||

फिर हर वर्ण मतलब अं से लेकर क्षं तक लेकर इनसे संपुटित करके १०८ /१०८ बार अपने इष्ट मन्त्र का उच्चारण करे .

फिर यह प्रार्थना करे

ॐ त्वं माले सर्वदेवानां सर्व सिद्धिप्रदा मता |

तें सत्येन में सिद्धिं देहि मातर्नामो s स्तू ते ||

अब इस माला को हर के सामने दिखाए नहीं , आपको जो भी विधि उचित लगे उसका उपयोग करके एक प्राण प्रतिष्ठित माला का निर्माण आप कर सकते हैं उसे साधना में प्रयोग करसकते हैं .

पर यह तो प्रकिया मणि माला को संस्कारित करने की हैं पर विशेष शक्ति युक्त तांत्रिक माला का निर्माण कैसे किया जाए , यह विधान पहली बार ही सामने आ रहा हैं , तो इसमें आपको

ॐ सर्व माला मणि माला सिद्धि प्रदात्रयि शक्ति रुपिंयै नमः

ॐ sarv mala mani mala siddhi pradatrayi shakti rupinyai namah

१०८ बार उच्चारण करना हैं इस दौरान माला हाथ में घुमती यां उसे घुमाते रहे गी /रहे

****

Mala SanSkar process

We have already given the process how to make praan pratisthha of yantra can be done , but we have been continuous getting e mails regarding the one question is there any necessity of using sanskarit mala in any and every sadhana,?? Than answer is yes ,, if one is using the mala without having Sanskar than the related deity of that sadhana often get angry but where and how you can purchase separate mala for each and every prayog .

so for the benefit of you all here is the process by which you can also praan pratisthhit the mala or sanskarit mala.

As you are already aware that that there are many type of mala used in sadhana prayog some has 31 beeds some 51 and some 108 beeds , why it is so . but in majority of the cases beeds quantity of 108 haapens why??.

as each mala has his own value and these beeds quantity has a purpose , as Sadgurudev Bhagvaan has many times says that there are not 7 chakra but 108 chakra lies in human body and for that 108 chakra energization he gave a special Diksha names "108 chkra jagran Diksha" . so when we do jap with mala with 108 beeds than through each beeds than chakra related to that beeds get energize . this is one of the reason behind using 108 beeds mala and this mala has been called sarvarth siddhi pradayak means all siddhi provider .

And this mala is a special instrument in any sadhana, Sadgurudev Bhagvaan used to say that why you have to depends each times even for small problem to your Sadgurudev., he has given many times the process for how to energize the yantra and rosary process. many of the sadhak of that era clearly knew this and a self evidence of that.

When we are talking about going to siddhashram and not able to do/know how to energize a simple rosary than think about it where we are standing., taking care theses fact here are the process in front of you .

This articles is based on the arif ji, already written articles that has been appeared many years before in a magazine.

Please keep it in mind here we are not discussing the process how to make mala that is a different subject.

First way :one of the most easiest process is that have a opportunity to visit any shiv jyotirling or shakti peeth hand touch your rosary / rosaries to the main vigrah , automatically that mala/rosary has been sanskarit.

Second way: if you how to do rudrabhishek or any person of your home knew about that or through any pandit this rudrabhishek is going on than during that period place the required mala/rosary in any pot in front of that , so that mala automatically get sanskarit.

You can get the complete rudrabhishek process through gita prèss Gorakhpur books.

Third way: who so ever is your guru , and you have a faith in him than as the rosary get touch of his body or hand that automatically Sanskrit.

Fourth ways:wash rosary with ganga jal and during that period chant this mantra for 108 times this is also a easy process,

Maale maale mahamaale sarvtatvswrupini |

Chturvargstvyi nyast stsmanme siddihida bhav ||

Fifthways: **shashtriy ways:**

Place nine leaves of pipal tree in this way that place one leave in middle and remaining eight place in circular of that, so a asht dal lotus type fig formed. And place the rosary in middle

leave and wash that rosary with panchgavy and chant the complete varn mala like am, aam, to ksham , than chant

sandyojaat mantra:

Om sandyojaat prpadyaami sadyojaataay vai namo namah |

Bhave bhave naati bhave bhavsy maan bhavo dwavaay namh||

Then apply chandan to rosary and chant

vaamdev mantra:

Blaay namo bal pramthnaay namh sarv bhutdahnaay namo manomnmathaay namah|

Offer dhoop stick with this

aghor mantra:

Om aghorebhyoath ghorebhyo ghor ghor tarebhyah sarvebhyah sarv sarvebhyo namste astu rudrarupebhy

And againwith

tatpurusha mantra :

Om tatpurushay vidmahye mahadevi dhimahi tanno rudrah prachodyat |

Than chant **ishan mantra** either one times or100 times on each beeds of rosary .

Om ishanah sarv vidyaanamishwarah sarv bhutanaam bramha dhipatir brmhnoo dhipatir bramha shivo me astu sadhashivoaham||

Now the question rises how to make this mala energize of any deity, if you are using this mala for shakti sadhana, than add "HREEM" before this mantra a and offer red color flower to it.

Maale maale mahamaale sarvtatvswrupini |

Chturvargstvyi nyast stsmanme siddihida bhav ||

And vaishnav can use this mantra

Om ayem shreem akshmalayai namah||

Than use every varn means am to ksham means add thses varn to your isht mantra and chant108 /108 times, than do this prayer.

Om tvam maale sarvdevaanam sarv siddhipradamata |

Ten satyen men siddhim dehi maatarnaamostu te||

Than not toshow this mala toevery one, than follow any one mothod whichever one you like most, and after that mala you can use in your sadhana.

Butthis sis the simplest process but how we canmake special shakti tantrak mala so for that just 108 times this mantra, while chantingthe mantra the rosary should be moving in your hand

Mantra :ॐ सर्व माला मणि माला सिद्धि प्रदात्रयि शक्ति रुपिंयै नमः

ॐ sarv mala mani mala siddhi pradatrayi shakti rupinyai namah

ASTROLOGY - DISCUSSION

कुछ विचारणीय बाते

ज्योतिष तो सारे जीवन का दर्पण हैं और हमारे भारतीय ज्योतिष की जड़े तो बहुत ही गहरी हैं इसका एक नाम तो ज्योतिर विज्ञानं हैं जिसका मतलब वह विज्ञानं जो हमें और हमारे जीवन को ज्योति याने प्रकाश दिखाए ,हमसभी के मन में ज्योतिष के प्रति सम्मान तो रह ता हैं बीच के युग का कुछसमय ऐसा था जब इसका बेहद माखौल उड़ाया जाने लगा था , इस विपरीत परिस्थिति में कुछ विद्वान खड़े हुए जिन्होंने अपना पूरा जीवन इस विधा के पुनर स्थापित करने में लगा दिया , इनमे सर्व श्री सद्गुरुदेव डॉ नारायण दत्त श्रीमाली जी, दक्षिण के डॉ बी ,व् . रमण और कृष्णमूर्ति पद्धति के विकासक प्रोफ कृष्णामूर्ति सर्वोपरि कहे जा सकतेहैं .

जैसे ही कंप्यूटर युग का प्रारम्भ हुए आशंका जताई गयी की अब ज्योतिष विद्या का भविष्य खतरे में हैं क्यों यदि यह विज्ञानसम्मत नहीं होगी इसके गणतीय पक्ष कोकैसे कंप्यूटर कर पायेगा ,

पर पर आज तो हर ज्योतिष इस का उपयोग कर रह हैं, और आज बाज़ार में सैकड़ो पत्रिका इस विधा के बारे में जानकारी और नए नए तथ्य रख रही हैं

पर कभी कभी इसके परिणाम सही से नहीं कहे जा सकतेहैं , यह बात भी सत्य हैं की कीहर बार हमारी भविष्य वाणी सही हो तो मानव जीवन की रहस्यमयता का क्या होगा और क्या मानव इश्वर हो जायेगा यह तो विवाद का प्रशन हैं , .

सदगुरुदेव भगवान ने भी हमें आत्याधुनिक टेबल्स का उपयोग करने कि सलाह दी हैं जिससे ग्रहों की गणना में गलती कमसे कम हो , अब अयंनाश की समस्या हैं कुछ लाहिड़ी तो कृष्णमूर्ति के पक्ष धर हैं यह भी अपने अपने अनुभव पर हैं कि कौन कौन किस का उपयोग करना चाहता हैं .

हमारे ज्योतिष में अभी भी हम 360 का दिन का एक वर्ष अपनी गणतीय गणना के लिए लेते रहे हैं , और विस्शोतरी दशा पद्धति को सभी इस क्षेत्र के लोग उपयोग करते हैं और बेहद सम्मान से भी देखते हैं पर हम तो एकसाल तो 365 1/4 दिनका मानते हैं इस हिसाब से हरसाल में लगभग 5दिनका अंतर तोदशा महादशा में आ ही जाता हैं तो यह तो समस्या हो गयी ,

क्यों जिसका जन्म अभी हुआ ही तो उसके लिए तो कोई समस्या नहीं हैं पर जिनका मानलो जन्म आज से 40 वर्ष पहले हुआ हैं तो 40*5=200 दिन मतलब लगभग 6/7 महीने का अंतर आगया तो शयद हम जिस दशा की मानकर चल रहे हैं वह होगी नहीं उस समय तो कैसे करे इस समस्या का सामना , अब उस आधार के साथ खिलवाड़ तो नहीं करसकते हैं.

पर अबक्या करे ,जब आजका व्यक्ति एक ज्योतिष के परामर्श को इतना सस्ता समझता हैं ओर उसे भी उतना याने एक मजदुर के दैनिक परिस्मिरिक नहीं देना चाहता तो कैसे उम्मीद करे की वह आपके लिए इतनी मेहनत करेगा अब आज से ७०/८० साल पहले के दिन तो हैं नहीं ,,आजके इस अर्थ प्रधान युग में सबकी कुछ मुलभुत आवश्यताए हैं ही

सदगुरुदेव भगवानने ज्योतिष कीन्ही कुछ विसंगतियों के ध्यानमे रखते हुए एक पूर्ण software बनबाया था , उनके विचार में यह बिलकुल स्पस्ट था की जब एक मानव जीवन एक प्रमाण के रूप में आपके सामने हैं तब आप विभिन्न दशाये चाहे वह विन्शोत्त्री या अष्टो तरी या योगिनी या मंडूक या अन्य से जो भी फलादेश निकला जाता हैं वह अलग अलग क्यों आता हैं

जब कि सभी को एक ही बात बताना चाहिए इस कारण उन्होंने विभिन्न इन दशाओ के परिणाम में कैसे सामजस्य किया जाये और एक ही परिणाम प्राप्त हो एक सॉफ्टवेर का निर्माणकराया था ,और उस समय की मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञानं पत्रिका जो बाज़ार में उपलब्ध नहीं थी इसका पूरा एक विज्ञापन उन्होंने दिया था और अनेक लोगोंने उससे फायदा उठाया भी था, पर बाद में काम में व्यस्तता के चलते हुए इस योजना को बंद कर दिया गया ,

आज यह कहा पर हैं हमें नहीं पता .

.पर इस समस्या को हम कैसे सुलझाये , पहले जो भी ज्योतिष विज्ञानं सीख रहे है उनको भी चाहिए की वह अपने साधना पक्ष को भी प्रबल करे उसके साथ यह अपनी साधना का बल से आप काम करे तो कोई समस्या नहीं होगी .

या अपनी मास्टरी प्रश्न ज्योतिष में करे तो आप अपनी बात को cross check कर सकते हैं .

या आप विंशोत्तरी दशा के साथ योगिनी दशा और मंडूक दशा से भी जन्म पत्रिका को देखें औरजब इन तीनो से भी एक ही परिणाम प्राप्त हो तो आप निश्चय ही कहीं ज्यादा बेहतर तरीके से अपना भबिष्य कथन कर सकते हैं.

****

Dasha anD mahDasha : why jyotish preDiction sometimes fails

Astrology is the mirror of our human life , and the root of our Indian vaidik astrology has a very deep, one of its name is jyotir vigyan, that means the science which not only us

but can guide our life and show the light on that. We all have a very high faith in this science.,

but times had such a come (some 60/70 years) in that this science had been consider as very disrespect way , in that very difficult period some great scholar stand up and devote their whole life to up bring the respect of this science in that firstly our Sadgurudev Dr, Narayan Dutt Shrimali ji, Dr B,v Raman from south and prof krishnamurt of krisnmurti paddhati .

When computer era has been started this indication gave us that may be astrology has a very bad day ahead since if astrology maths base is not fully justifiable than how can computer can accommodate that ,

but astrology accept this and now you can see many magazine on this subject available in the market and every day new new research coming in front of us.

But sometimes its prediction total fails why that so , its true that like any other science its not possible that every time its prediction100% get correct. And if that starts happens what is the mystery of human life remains, may a manav become ishwar?

Sadgurudev rightly advised that use of modern scientific tables for calculation of planetary position, so that mistake can be minimize, now the problem of ayanansh remains , some follows lahiri's , some krishnmurti, this also depends up on each persons experience.

We are still consider 360 days of a year in our astrological calculation of dasha mahadasha , but as we are quite aware that actually a year has 365 ¼ days, so in each years approximately 5 days difference occurs , suppose a new born baby than there is no problem but if we are going to predict a 40 years old person than think 40*5 =200 days means roughly 6/7 moth difference occurs so we are predicting our prediction based on the dasha that may not be running.

Than how to face this problem, we can not play with the basic foundation, but what we do.

One more problem is that modern person consider this astrology so cheap that he is not in mood to pay even basic wage of one day a majdoor to a astrologer , so how he can expect that he will do his best for him. Todays situation is not like as there were 60/70 years before, everybody has basic needs.

Sadgurudev considering all theses deficiencies order to made a complete softare under supervision of him. Since he has a very clear in his thought that if the human life is a self evidence than how by following different different dasha gives very different prediction,.

So that how all the dashas prediction be in one line. and following that only one prediction can be made. So a software has been made and in that time mantra tantra yantra vigyan that was not available in the market , one complete issue based on that , and this facilities had been open for general person, but due to exceeding work pressure that had been closed, now where that software is , we have not any clue.

But how we can solve this problem, those who are learning this science need to be learn proper sadhana and do that very honestly so that with the help of their sadhana bal they can predict very accurately.

And have a mastery in horary astrology so that properly cross check can be done through that .

And while offering prediction have cross check through manduk dasha and yogini dasha and if same result comes than you can offer that boldly.

MritatMa - aavahan process

कैसे आवाहन किया जाये एक सरल साधना विधि

आत्मा तथा उनके अस्तित्व पर वर्षों से शोधकार्य होता आया है और आज के इस विज्ञानयुग मे भी कई लोग इस दिशा मे बराबर गतिशील है की क्या मृतात्मा का अस्तित्व होता है और अगर होता है तो इनसे संपर्क कैसे स्थापित किया जा सकता है. यहाँ तक की भारत से भी ज्यादा पश्चिमी देशो मे इस पर कार्य हो रहा है और इसके कई परिणाम भी प्राप्त हुए है जो की अभौतिक अस्तित्वो की पुष्टि करता है. लेकिन इस दिशा मे तो यह मात्र पहला कदम है उनका. हमारे देश के ऋषि मुनियों ने इस विषय पर कई महत्वपूर्ण शोध कार्यों को किया था और आत्माओ के आवाहन की कई विशिष्ट प्रक्रियाओ का निर्माण किया था. अफ़सोस की बात है की आज के युग मे हमारे महान पूर्वजो के शोध कार्यों को ढोंग का नाम दे कर हे द्रष्टि से देखा जाता है लेकिन फिर भी इस विषय पर सामान्य जन मनुष्य का आकर्षण बराबर रहा है.

मृत्यु को अंत मानना एक बहोत बड़ी भूल है, यह तो मात्र पड़ाव होता है अगली यात्रा का. भगवान खुद गीता मे कहते है की शरीर नाशवंत है लेकिन आत्मा अमर ही है. इसी क्रम मे मृत्यु के बाद शरीर से बहार निकलकर आत्मा सूक्ष्मजगत मे चली जाती है और जब तक की आत्मा वापस जन्म ना ले तब तक सूक्ष्म जगत ही उनका पड़ाव होता है, यह काल कितने समय के लिए होता है यह कहना मुश्किल है. कई मृतात्माए जन्म लेने के लालायित रहती है और कई इससे ठीक विपरीत जन्म ना लेने के लिए. कई योग्य गर्भ के लिए राह देखती है तो कई ऐसे कोई बंधन मे खुद को नहीं रखता. हो सकता है मृत्यु के बाद कुछ ही समय मे वह आत्मा दूसरे गर्भ का चयन कर अत्यंत ही सूक्ष्म काल मे वापस जन्म ले ले या कई बार यु होता है की कोई आत्मा कई सदियों तक भी जन्म ना ले. इस विषय के कई पक्ष है जो की अपने आप मे बहोत ही वृहद है.

ये जानते हुए भी की जिसने जन्म लिया हे उसकी मृत्यु अवश्यम्भी है कई बार स्नेहीजन के मृत्यु मन पर एक बड़ा आघात छोड़ते है, सच है की माया से प्रेरित हो कर मन इन सबंधो को सास्वत स्वीकार कर लेता है लेकिन व्यक्ति के शुक्ष्मजगत गमन के बाद उन्हें देखने की या मिलाने की इच्छा बराबर बल्वती बनी ही रहती है. और इन्ही उलजनो मे मन बोजिल होने लगता है. उनकी क्या गति होगी या क्या उनकी कोई इच्छापूर्ति हम कर सकते है या नहीं ऐसे कई सवाल मन मे उठाते रहते है. लेकिन क्या कोई एसी प्रक्रिया है?

हाँ, तन्त्र इसका समाधान करता है. तन्त्र के आवाहन पक्ष मे इससे सबंधित कई प्रक्रियाए है. लेकिन ज्यादातर प्रक्रियाए उग्र व् स्मशानिक प्रक्रियाए है जो की एक सामान्य मनुष्य के लिए संभव नहीं है.

सायद हमारे पूर्वजो का भी यही चिंतन रहा होगा इस लिए उन्होंने कई ऐसे लघु प्रयोग भी खोज निकले है जिन्हें करने पर आपकी इस इच्छा की पूर्ति स्वप्न के माध्यम से संभव हो सकती है. अगर मृतात्माने पुनर्जन्म नहीं लिया है तो सबंधित प्रक्रिया करने पर स्वप्न के माध्यम से स्नेहीजन से मुलाकात संभव है. इसके द्वारा स्नेहीजन की मृतात्मा की इच्छा होगी तो वार्तालाप भी संभव है अगर उनकी कोई एसी इच्छा है जिसका समाधान वो आपसे चाहते है तो वो भी आपको स्वप्न के माध्यम से पता चल जाएगा. इस द्रस्टी से यह प्रक्रिया एक अत्यधिक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है

बुधवार रात्रि मे ११ बजे के बाद यह प्रयोग करे, यह ११ दिन का प्रयोग है

वस्त्र और आसान लाल या कला रहे, दिशा दक्षिण.

अपने सामने महाकाली का विग्रह या तस्वीर स्थापित करे जिस पर सामान्य पूजन करे. तेल का दीपक और लोहबान धुप देवी को अर्पित करे.

इसके बाद व्यक्ति उस आत्मा को याद करे जिसका आवाहन किया जाना है और उसे स्वप्न के माध्यम से प्रकट होने को प्रार्थना करे.

फिर साधक निम्न मंत्र की ११ माला काली हकीक माला से जाप करे

ॐ हिलि हिलि खिचि खिचि फट

मंत्र जाप से पहले और बाद मे गुरु मंत्र की एक माला ज़रूर करे. मंत्र जाप के बाद साधक सद्गुरु, महाकाली से साधना मे सफलता के लिए प्रार्थना कर के सो जाए.

निश्चित ही साधना काल या फिर साधना के आखिरी दिन स्वप्न के मध्य मृताम्त्मा के दर्शन हो जाते है. तब उनकी तरफ से ही वार्तालाप शुरू होगा. यह मंत्र करते समय कई प्रकार की आवाजे सुनाई दे सकती है लेकिन इसमे भयभीत होने वाली कोई बात नहीं है, इस साधना मे किसीभी प्रकार का कोई नुकशान नही है, साधना खंडित होने पर भी साधक की कोई हानि नही होती.

****

MRITATMA AAVAHAN PROCESS

Research is going on since long on spirits and Existence of spirits and in this scientific era so many people have remained progressive in this field of spirits and their existence and how to establish contact with those. Western countries are more concerned in this research field and there are so many results came up proving existence of immaterial existences. But this is just a first step of them in this field.

Sages of our country made so many inventive researches on this subject and prepared many special methods to develop contact with spirits. Sadly, today, in our country research work of our great sages are termed as pretenses and counted as cheap stuff of non belief but then too common people's attraction to this subject has continued.

It is big mistake to understand death as end; it is just a halt for the next journey. Yet god himself tells in holy Gita that body is subject to deceasing but soul is infinite. This way, after death soul be out of the body and move to sukshma jagat and till the time it does not take re birth it stays in sukshma jagata, it is difficult to make exact summery of this time period. Many spirits stay curious to have their re birth and many of them think exact opposite of the same; not to take re birth. Few wait for desirable womb, few do not found them self in such conditions. It is also possible that after death in very short time spirit selects their womb and take second birth instantly or it is even possible that some spirit may don't have rebirth for centuries. This subject has many aspects which are really very deep in nature.

Though being aware that one who took birth will touch death for sure one day, many times the death of affectionate gives big wound on mind, it is true that we accept the relations as long lasting being inspired from Maya but after leaving for sukshma jagat, the wish to see or meet that person stays stronger most of the time. And with such troubles mind becomes stressful. So many questions stays on rising in mind like how they would be and what can we do for them. But is there any process to do this?

Yes, tantra solves this. There are so many processes in the tantra field related to calling a spirit. But most of those are ugra or smashan processes which are not actually possible for common men. Perhaps, our sages even have thought of this, so they found out with small rituals which may lead granting this wish through the medium of dreams. If spirit had not taken birth in that condition with the related process it is possible to meet affectionate in dreams. With this,

if the spirit wishes for conversation that too is possible if there is any wish of them which they want to be solved by you can even be knew with the process. This way, the given process is very important.

One should start this ritual after 11 in night on Wednesday, this is 11days ritual.

Cloths and aasan should be red or black, direction should be south.

Establish photo or idol of mahakali infront of you and do poojan of the same. Offer lamp of oil and Lohabaan Dhoop.

After that person should memory of the spirit who is to be called and pray them to meet in dream

After that one should chant 11 rosary of following mantra with black hakeek rosary.

Aum Hili Hili Khichi Khichi Phat

Before and after mantra chanting one should do one rosary of gurumantra. After mantra jaap is completed, one should pray sadguru and mahakali for success in sadhana and go to sleep.

One will have glimps of spirit during the sadhana perios or at the last day in the dream. At them time conversation will start from them only. While chanting this mantra one may hear various voices but there is nothing to be fear of. In this sadhana there is no harm, if sadhana is broken then too sadhak would not have any harm for that.

अब आपको एक उच्च स्तरीय कवि बनने से कोई नहीं रोक सकता

जीवन के चार महत्वपूर्ण पुरुषार्थोमे काम का स्थान भी है लेकिन काम का अर्थ हमने अत्यधिक संकीर्ण कर दिया है. काम ही जन्म देता है सौंदर्य और आकर्षण को. काम का अर्थ सिर्फ शारीरिक धरातल पर ना रखते हुए उसे जब आत्मिक धरातल पर उतर कर अर्थघटन किया जाये तो ये समजा जा सकता है की सृष्टि की गतिशीलता इस पर ही निर्भर है. उस काम उर्जा से ही जन्म होता है कला का. वह कला जो की सौंदर्य और आकर्षण से युक्त होती है. काम के इसी पक्ष को समजने के लिए ही और विविधता युक्त उन कलाओ को आत्मसार करने के लिए भी तन्त्र मे विभिन्न साधनाओ का उल्लेख मिलता है.

चाहे वह नृत्य हो, संगीत हो, चित्रकला हो या कोई और हो. उदहारण के लिए नृत्य कला के लिए हमारी संकृति मे नटराज का उल्लेख बराबर होता आया है, उसी प्रकार सगीत के लिए वीणावादिनी और चित्रकला के लिए कार्तिकेय की उपासना भी प्रचलित है.विविध कलाओ के लिए विशिष्ट देवी देवताओ के सबंध मे कई प्रकार की साधनाओ का तांत्रिक ग्रंथो मे उल्लेख मिलता है.

इसी क्रम मे काव्यरचना भी एक महत्वपूर्ण कला है. अंदर के भावो को जागृत कर उनका विशेष वर्णात्मक शैली मे प्रस्फुटन करना हर व्यक्ति के लिए सहज बात नहीं है. काम भव के इस पक्ष को समजने के लिए भी तन्त्र मे कई प्रकार के वर्णन मिलते है. इसदिशा मे पूर्णनीलातन्त्र एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ है जिसमे एक पटल सिर्फ काव्यरचनाओ से सबंधित साधनाओ पर दिया गया है, मुख्यतः इसमे तारा देवी के २ स्वरुप का वर्णन मिलता है, नीलसरस्वती और तारिणी.

देवी का तारिणी स्वरुप अत्यधिक मोहक है जो की ज्यादा प्रकाश मे नहीं आया है, यह देवी काव्यरचना कला की मुख्य शक्ति है, प्राचीन काल मे देवी के इस स्वरुपकी साधना कविओ के मध्य प्रचलित रहती थि. लेकिन धीरे धीरे इसका प्रचलन कम होता गया क्यूँ की कामको और सौंदर्य को देखने का लोगो का नज़रिया ही बदल गया. तारिणी एक प्रचंड शक्ति है जो की सीधे मूलाधार पर घात कर के उसे स्पंदित करती है. जिससे साधक का नज़रिया ही बदल जाता है सभी चीजे देखने का. और देवी के आशीर्वाद से वह अपने इन भावो को काव्य के माध्यम से सहज ही मनोहर रूप मे सब के मध्य रख सकता है. इस प्रकार काम भाव के एक विशिष्ट अंग को समजने के लिए यह एक महत्वपूर्ण साधना है.

इस साधना को साधक किसी भी वार से शुरू कर सकते है. मंत्र जाप स्फटिक माला से हो. समय रात्रिकाल मे १० बजे के बाद का रहे. इसमे आसान व् वस्त्र सफ़ेद रहे. साधक को सर्व प्रथम गुरु मंत्र की एक माला कर के सद्गुरु से साधना मे सफलता के लिए प्रार्थना करनी चाहिए

उसके बाद तारिणी देवी की मन ही मन सहस्त्रदल पर विराजमान अग्नि रूप कुण्डलिनी रूप मे ध्यान करना चाहिए

उसके बाद २१ माला तारिणी मंत्र की करे

ॐ ह्रीं स्त्रीं तारिणी फट्

जप के बाद देवी को ही मंत्रजाप समर्पित कर दे. यह क्रम आगे के २० दिन तक जारी रखने से यह साधना सिद्ध हो जाती है और साधक को काम का एक नया ही रूप देखने को मिलता है.

****

Tarini sadhana

Equal place stays for kama in four main aspects of the life but the meaning of kama what we take today has became very narrow from its original meaning. Kama is responsible for the birth of beauty and attraction. When we see the meaning of kama through platform of soul and avoiding platform of physic, in that condition we can understand dependency of the world is based on kama. That kama power only gives birth to the art. Art filled of beauty and attraction. There are various sadhanas mentioned in tantra just to understand this side of the kama and related art filled with varieties.

It may be dance, music painting or others. For example in our culture and tradition nataraja is always mentioned in collaboration to the art of dancing, this way sadhana rituals are famous for music of vinavaadini and kartikeya's for painting. For various arts, in tantra scriptures, there are related special deities and their sadhanas

This way poetry is also an important art. It's not an easy task for all humans to awake inner spirit and represent it in descriptive style and bloom it in special way. So many mentions are there in tantra to understand this aspect of kama. In this particular, purnanilatantra is important scripture in which one whole part is given in relation to the sadhanas based on poetry,

generally there are two forms are mention there of deity goddess Tara; Nilasarashwati and Taarini.

The image of Taarini is very tempting which has remained unknown to the common people, this goddess is main power of poetry art, in early edge sadhana of devi's this form had remained popular in-between poets. But slowly popularity of this sadhana fallen down because people's way to look and understand kama and saundarya changed completely. Taarini is intense power which directly connects to the muladhara and makes it vibrate. This results in change to sadhaka about his way of looking at the world. And with the blessing of the goddess he starts putting his inner spirits in front of all with medium of the poetry in very easy manner. This way to understand special hidden aspect of the kama, it is an important sadhana.

Sadhak can start this sadhana on anyday. Mantra chanting should be done with sfatik rosary. Time should be after 10 in night. Aasan and cloth should remain white. First of all, sadhak should chant one round of guru mantra with rosary and should pray sadguru to bless with success.

After that one should meditate godess tarini in mind with image of fire like kundalini sitting on the thousand petals lotus.

One should then chant 21 round of the taarini mantra

Aum Hrim Strim Taarini Phat

After mantra japa offer all chanting to the devi. Sadhana will be accomplished when it is continued for next 20 days and sadhak will be able to see a very new aspect of Kama.

Pitr aavahan sadhana

अपने किसी भी पितृ का आव्हान ऐसे करें

हमारे ग्रंथो मे और विशेष कर वेद और पुराण मे पितृ सबंधित विवेचना अत्यधिक मात्रा मे पाई जाती है. पितृ के देहावसान के बाद उनके मोक्ष के लिए कई प्रकार के विधान पाए जाते है. मोक्ष का अर्थ यहाँ है की वह अपनी इच्छा और वासना जो की माया को जन्म देती है उससे परे हट कर सृष्टि की संरचना को समजे और मुक्तभाव से अपनी गति परमात्मा की तरफ आगे बढ़ाये. लेकिन यह मनुष्य का अपने पितृओ की तरफ यह कर्तव्य आखिर क्यों होता है? सृष्टि मे मनुष्य की गतिशीलता वीर्य है और मैथुन उसको गतिशीलता देता है. हमारा स्थूल शरीर भी उसी बीज से बनता है. उसी बीज से मानव के विभिन्न सबंधो का निर्माण होता है. पूर्वजो के मुख्य बिज से गतिशीलता आगे बढ़के वही बीज दूसरे शरीर का निर्माण करते हुए हमारा निर्माण करती है. वह मुख्यबिज और उनसहयोगी बीजो के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना इसी लिए हमारा कर्तव्य है.

इतरयोनी को प्राप्त होने के बाद भी उनका बीज गतिशील रहता ही है, इस प्रकार हमारे सभी पूर्वजो के प्रति हमारा समर्पण सामान रूप से हो. और सृष्टि की इसी संरचना के लिए व्यक्ति के लिए यह ज़रुरी होता है की वह अपने पितृ के प्रति आदर भव स्थापित करते हुए उनके मोक्ष के लिए प्रार्थना करे. इस के लिए बहोत ही विधान वेदों मे तथा तन्त्र मे बताए गए है. लेकिन जटिल विधि विधानों मे ना पड़ते हुए, सरल विधान को यहाँ दिया जा रहा है जिससे की सर्व इतरयोनी गत पितृ है उनको मोक्ष की प्राप्ति हो और उनकी कृपा सदैव बनी रहे. यह विधान को खुद ही किया जाता है इस द्रष्टि मे इसका महत्व और बढ़ जाता है और पितृ प्रसन्न रहते है. यह विधान पितृ पक्ष के दिनों मे करना उत्तम रहता है, पितृ पक्ष मे जितने दिन हो सके उतने दिन यह विधान करना चाहिए. यु साधक इसे किसी रविवार को भी कर सकता है.

साधक सभी आवश्यक सामग्री को पहले ही अपने पास रखले बिच मे उठाना नहीं चाहिए. साधक को सुबह स्नान कर के अपने सामने बाजोट पर एक चावल की ढेरी बनानी चाहिए जिस पर शुद्ध घी का दीपक रखे और प्रज्वल्लित करे. इसके बाद अपने सामने गणेश की किसी भी प्रकार की मूर्ति रखे, संभव हो तो साथ ही साथ शालिग्राम को भी रखे. उन दोनों का सामान्य पूजन करे और आशीर्वाद ले.

इसके बाद साधक अपने इतरयोनी गत सर्व पितृ का आवाहन निम्न मंत्र से करे इस बिच घंटी या थाली को बजाते रहना चाहिए.

ॐ पीठपितृ गौत्रपितृ सर्वपितृ आवाहयामि नमः

इस मंत्र को ११ बार जपे

इसके बाद सर्व पितृ को नमस्कार कर गणेश की प्रतिमा पर एक बार फिरसे पितृओ का पूजन करे. खीर का भोग लगाये साथ ही साथ जल भी रखे.

इसके बाद एक बड़े से पात्र मे जल ले, निम्न मंत्र को बोलते हुए उसमे अबिल और गुलाल को मिलाये

ॐ सर्वपितृ मोक्ष प्रदाता विघ्न विनाशक नमो नमः

अब अपने हाथ मे दुर्वा को ले. पानी की अंजुली भरते हुए उसे गणपति पर निम्न मंत्र बोलते हुए चड़ाये

ॐ सर्वपितृ प्रेत मोक्षं प्रदोमभवः

इस प्रकार १०८ बार मंत्र बोलते हुए जल का अभिषेक करे.

इसके बाद सर्व पितृ से आशीर्वाद के लिए प्रार्थना करे और क्षमा याचना करते हुए गणेश की आरती कर विसर्जन करे. भोग की खीर को किसी गाय को खिला दे. पानी को भी तुलसी मे विसर्जित कर दे. इस विधान से पितृ प्रसन्न होते है और जीवन मे पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है.

PITR AVAHAN SADHANA

In our scriptures especially in Vedas and puranas a wide deliberation is found in relation to Pitru (parent/absols). So many procedures are found for the moksha of pitru after they leave their material forms. Moksha here mean that the wishes and vasanas which gives birth to the maya they go beyond this by understanding the structure of universe and freely move ahead to the divine god. But why it is duty of humans towards their pitru? Mobility of the universe is Virya and maithoona boost it as a medium. Our main body is made of the same. It is only responsible for various relations in humans. The main beeja of pitru created another human and this way our body is even formed with same beeja. For this reason only, it is essential for us to express our gratitude towards main beeja and other helping beeja.

After having itaryoni, their beeja stays in continuity; this way our dedication to all pitru should remain same. And with this system of universe it is require for human being to offer prayers for moksha with respect for their pitru. For this, there are several methods told in Vedas and tantras. But not going to complicated process, here simple process is given with which all itaryoni pitru will move toward moksha and their bliss could be gain. This process is suppose to be done by self this way it becomes more important and pitru becomes happy. It is better to do this process in pitru paksha, in pitru paksha the process should be done as much day as much possible. This process can also be done on any of the Sunday too.

Sadhak should collect all the required materials nearby one should not get up in-between the process. After taking a bath in morning, one should make a rice agglomerate on bajota (wooden mate) and place a ghee lamp on the same, light it. After that take any idol of lord ganesha, with this place shaligram in case of possibilities. Offer normal worship and take blessing.

After that sadhak should chant mantra to call all his itarayoni pitru in time period of chanting this mantra prayer bell should be rang or dish could be taken to use to produce belling sound.

Aum PithaPitru GautraPitru SarvaPitru Aavaahayaami namah

Chant this mantra 11 times.

After that bow to all the pitrus and offer poojan to all them on the idol of ganesha mentally. Offer kheer and water.

After that take a big vessel filled with water, while chanting this mantra add abila and Gulal to the water.

Aum sarvPitru Moksha Pradaata Vighna Vinaashak Namo Namah

Now take Durva (holy grass) in the hand and while chanting the below mantra take water in your hand and offer abhisheka of the same on ganesha Idol.

Aum sarv Pitru Pret Moksham Pradomabhavah

This ways offer 108 abhisheka mantra on ganesha Idol.

After that pray for the blessings to all the Pitrus and do aarati of Ganesha and complete. The kheer which was offered to pitrus should be then offered to cow to eat. Water should also be offered to basil plant. With this process pitru becomes happy and in life we get freedom from pitruruna (pitru debts).

Krodh - bhairav

जिस एक साधना से सभी इतर योनी स्वयं ही सहयोग देती हैं

जिव की अवस्था २ प्रकार से गतिशील रहती है, एक योनिज और दूसरा अयोनिज. उसका सामान्य अर्थ यह लगाया जाता है की जिसका जन्म योनी से हुआ हो वह योनिज है और जो अजर है वह अयोनिज लेकिन इनके गुढ़ अर्थ है. अयोनिज का अर्थ है स्थायी, जो की परिवर्तन के नियमों से बंधा नही है, काल खंड का उसपर कोई असर नहीं है. योनिज का अर्थ है रूपांतरणशील जो की सृष्टि के नियमों से आबद्ध है. इसी लिए आत्मा अयोनिज है और अमर है, लेकिन शरीर नाशवंत है, इसी क्रम मे मनुष्य योनी के अलावा कई प्रकार की इतरयोनी होती है.

तांत्रिक साधनाओ मे इतरयोनी का विशेष स्थान है और इतरयोनीओ से साधनाओ के माध्यम से सहयोग प्राप्त किया जा सकता है, मनुष्य शरीर और उनके शरीर मे पंचतत्व के प्रमाण मे बदलाव के कारण उनमे और मनुष्य मे भेद होते है, और यह भेद शारीरिक अवस्था के साथ ही साथ शक्ति संचार के नियंत्रण पर भी असर करता है. यूँ, इतरयोनी के क्रम मे भूत, प्रेत, पिशाच, राक्षस इत्यादि मनुष्य से ज्यादा समर्थ एवं जागृत शक्ति के धनि होते है.

तन्त्र मे इन इतरयोनी की साधनाओ के द्वारा उन्हें सिद्ध कर सहयोगी रूप मे कार्य करवाने के लिए कई प्रकार के विधान है, इसमें स्मशानिक क्रियाओ से लेके उग्र विधान भी शामिल है. हिम्मत एवं साहस के धनि व्यक्ति इस प्रकार की साधनाए करते है लेकिन सभी साधको के लिए इस प्रकार के विधान संभव नही है. सामान्य गृहस्थ साधको के लिए भी यह असंभव ना सही लेकिन कठिन तो है. सदगुरुदेव ने इन साधनाओ के सरल विधान कई बार साधको के मध्य रखे है सिद्ध किए गए इतरयोनीसे कई प्रकार के कार्य करवाया जा सकता है. साथ ही साथ वह अद्रश्य रूप मे भी सहयोग देता रहता है.

भैरव के बारे मे क्या कहा जाए, इनका नाम सुनते ही सब इतरयोनी काँप जाती है. भैरव के कई भेद है जिनमे से एक है क्रोध भैरव. क्रोध भैरव भूत, प्रेत पिशाच सब के आराध्य है, और सब भैरव के साधको से दूर ही रहते है. भैरव साधना के भी प्रकार है जिसमे मुख्य रूप से उग्र साधनाओ का ही प्रचालन रहा है. लेकिन इनकी कुछ साधनाए एसी है जिसे साधक अपने नित्य विधि विधान मे कर सकता है, इसके लिए कोई विशेष क्रम अपनाने की ज़रूरत नहीं है और वे साधनाए घर मे भी सम्प्पन की जा सकती है कोई ज़रूरत नहीं की उसे स्मशान मे जा कर ही सम्प्पन किया जाए

क्रोध भैरव की यह साधना मे साधक को यह लाभ प्राप्त होता है की इतरयोनी का प्रभाव साधक पर नहीं पड़ता, वरन होता तो यूँ है की आसपास की सभी इतरयोनी साधक को अद्रश्य रूप मे ही, जितना हो सके सहयोग प्रदान करती रहती है और साधक को स्वतः ही अपनी समस्याओ से मुक्ति के लिए रस्ते मिलते जाते है. जो साधक विशेष इतरयोनी से सबंधित साधनाए ना कर सके उनके लिए यह साधना अत्यधिक महत्वपूर्ण है.

इस साधना को मंगलवार रात्रि के ११ बजे बाद शुरू करे

वस्त्र और आसान लाल रहे दिशा दक्षिण.

अपने सामने गुग्गल का धुप जलाये और तेल का दीपक लगा कर भैरव को प्रसाद के रूप मे कुछ मीठी चीज़ चड़ाये

इसके बाद साधक इस मंत्र की २१ माला मूंगा माला से जाप सम्पान करे

ॐ क्रोध भैरवे भ्रं सर्व इतरयोनिर् वश्यमे नमः

इसके बाद साधक प्रसाद को खुद ग्रहण करे और सो जाए. यह क्रम अगले २० दिनों तक चलता रहे. २१ दिन की साधना काल मे अगर कोई आवाज़ सुनाई दे या कोई द्रश्य दिखाई दे तो विचलित न हो के मंत्र जाप चालू रखना चाहिए, यह साधना मे सफलता के ही लक्षण है.

****

SARV SHYOGI KRODH BHAIRAV SADHANA

The continuity of the Jiva stays in two states, yonija and second is ayonija. The normal meaning of the same is understand as the one who took birth from yoni is yonija and the one who is infinite is ayonija but it has a deep secret meaning. Ayonija means permanent, the one who is not bounded in rule of change, on whom there is no effect of time. Whereas yonija means transformable who is bounded in the universal rules. There for soul is infinite and body is subjected to decay. In this way, there are other categories (yonis) apart from humans. In tantric sadhanas there is a special place for itarayonis and with the help of sadhana we can have their co operation in our works, because of the change in volume of base metal, human and their body differ.

This difference also effect with control of the power with body too. This way, in the itarayoni like bhoot, preta, pishacha, raksha holds more awaken power in them in comparison to humans.

In tantra, there are so many processes through which one can control these itaryonis and take their help for various works, this include processes of smashana and ugra sadhanas too. People with guts and courage accomplish such sadhanas but for all sadhaka such processes are not possible to perform. For general gruhastha sadhaka it may not be impossible but though it is tough too. Sadgurudev have many time gave easy processes in front of sadhaks on this subject. Accomplished itaryoni could be taken for help to do many of the tasks. With that he too keeps on helping staying invisible.

What could be said about Bhairava, itarayonis get scary Goosebumps just by hearing name of him. There are so many forms of Bhairava among them one is Krodh Bhairava. He is diety of bhoot, preta pisacha and others and those all stays far from sadhaka of bhairav.

There had remain so many types of sadhanas of bhairava among which majority are famous as Ugra sadhanas. But there are few specific sadhanas which sadhak can do in their day to day routine, there is no need to adopt specific living schedule for this sadhana and those sadhanas can even be done at home there is no such hard boundaries or requirement to do that in smashana only.

Krodh Bhairava's this sadhana have a big benefit that sadhak would not have any effect of itarayonis on him, instead that what actually happens is all itaryonis neary by helps sadhaka as much they can in invisible form and sadhaka will find way out for his troubles automatically. Sadhaka who cannot do specific sadhanas of itarayonis, this is an important sadhana for them.

इस साधना को मंगलवार रात्रि के ११ बजे बाद शुरू करे

One should start this sadhana after 11Pm on Tuesday.

Cloths and aasana should be red in colour.

Light a guggal dhoop and oil lemp in front of you and offer something sweet in Bhoga

After that sadhak should chant 21 rosary of following mantra with Munga rosary.

Aum krodh Bhairave Bhram sarva itarayonir vashyame namah

After mantra chanting eat the bhoga and sleep. This procedure should continue for next 20 days. In case of one hear some sounds and watch something unusual then without being distracted one should keep on doing mantra chantings, these are signs of success in sadhana only.

Shakti - rahsyam

अद्भुत रहस्य जो कभी प्रकाश में नहीं आये , सिर्फ आपके लिए अब

साधना जगत की अद्भुत शक्तियों की खोज में ना जाने किन किन साधकों से मेरी मुलाकात हुयी....पर ये भी एक सबसे बड़ा सत्य रहा है की,जिस दिन से सदगुरुदेव ने मेरा हाथ अपने हाथों में पकड़ा था.... बस प्रति क्षण अभय और निश्चिन्तता ही अनुभव होती थी..... हर पर अनोखा सुकून मानों आत्मा को महसूस होता रहता था. जिस भी जिज्ञासा की मन के जल में उत्पत्ति होती...उसी क्षण जैसे वो हौले से उसे शांत कर के ये अहसास दे देते कि "अरे तू तो मेरा ही है,इतना व्यथित क्यूँ होता है.... याद रख जब भी तेरे मन को कोई प्रश्न अपनी चुभन से व्यथित करेगी....तब तब मैं उसका समाधान उसी मन से निचोड़ कर निकाल कर तुझे दे दूँगा....

उसी मन से जहाँ मैं चिरकाल से सदा सदा के लिए अपने प्रत्येक शिष्य के ह्रदय में विराजमान हूँ.और ऐसा आजन्म होगा और प्रत्येक शिष्य के लिए होगा...यह निखिल वाणी है"

बस तबसे कोई चिंता ही नहीं रही मन में .

जब भी मेरे मन के सरोवर में कही से जिज्ञासा का पत्थर गिरता और उसमे लहरे उत्पन्न होती या मन कि शांति भंग होती...तब तब सदगुरुदेव अपनी अमृतवाणी से या तो स्वयं या फिर उनका कोई ज्ञानांश सन्यासी या गृहस्थ शिष्य आगे बढ़ कर उन तरंगित लहरों को अपने उत्तरों से शांत कर देता .और एक बात मैं आपको जरुर बता देना चाहता हूँ कि जब भी किसी ज्ञान कि चाह में मैं कही गया तो उस साधक का व्यव्हार मेरे लिए पूर्ण अनुकूल रहा है और उसने ये अवश्य कर स्वीकार कि उसे पहले ही बता दिया गया था कि यहाँ तुम्हारा आना सदगुरुदेव ने पूर्वनियोजित किया हुआ था .और ऐसा प्रत्येक शिष्य के लिए उन्होंने निर्धारित किया हुआ है...किसे कब देना है ,क्या देना है....ये पहले से उन्होंने तय कर दिया है .

यात्रा के उसी काल में मेरी मुलाकात सदगुरुदेव के **पूर्ण शाक्त शिष्य कौल मणि** **शिवयोगत्रयांनद** से मुलाकात हुयी . सदगुरुदेव कि आज्ञा से उन्होंने विंध्यवासिनी के परम पावन पीठ को अपनी साधनाओं के लिए चुना था . वो उसी पर्वत कि एक अत्यधिक गुप्त गुफा में आज भी साधनारत हैं . और उसी गुफा में मेरी उनसे मुलाकात हुयी और दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हुआ .

थोड़े ही समय बाद मैंने मानो प्रश्नों कि बौछार कर दी थी उन पर ,और वो उतने ही शांत भाव से मंद स्मित होकर मुझे उत्तर देते रहे और रहस्यों कि नवीन परतों को उधेड़ते रहे .(उन्होंने सैकडो प्रश्नों के उत्तर दिए थे,परन्तु इस विशेषांक में विषय वस्तु पर आधारित जो प्रश्न हैं ,मैं मात्र उनमे से कुछ को ही यहाँ दे रहा हूँ...जिससे विषय को समझना अपेक्षाकृत आसान रहेगा)

शक्ति क्या है,इसके कितने रूप होते हैं ???

सरल शब्दों में यही कहा जा सकता है कि सम्पूर्ण ब्रम्हांड मात्र जिसकी कल्पना से साकार हो गया हो और जिसके प्रभाव से प्रकृति सृजन, पालन और संहार कर्म में जुटी हुयी हो ,उसी चिन्मयी परात्पर ज्योति को शक्ति कहा जाता है . ये किसी भी रूप में हो सकती है. इसका प्रभाव सभी पर होता है फिर चाहे वो चेतन हो या अचेतन.प्रकट रूप में हम जिन्हें शक्ति देने का उर्जा देने का या फिर बल देने का स्त्रोत मानते हो,वे सभी भी इसी परा शक्ति से ही शक्ति प्राप्त करते हैं .ये परा शक्ति स्थूल, सूक्ष्म या किसी भी रूप में हो सकती है .

ये सभी प्राणियों में विद्यमान है , इसी के कारण हम सृजन तथा अन्य कर्म सम्पादित कर पाते हैं. और विचारों की उत्पत्ति का मूल भी यही शक्ति है .

इसके कितने प्रकार होते हैं ?

भावगत्ता के आधार पर गुणों की तीन ही स्थितियां होती हैं-

सत्

रज

तम

ठीक इन्ही गुणों के आधार पर तीन क्रियाएँ सृजन ,पोषण और विध्वंश होती है . और इन क्रियाओं को शक्ति के तीन आधारभूत शक्तिमान(जिनके द्वारा शक्ति अपने कार्यों को सम्पादित करती हैं) संपन्न करते हैं . याद रखने योग्य तथ्य ये है की जिस प्रकार गुणों के तीन प्रकार होते हैं, ठीक उसी प्रकार इन गुणों की अधिष्ठात्री तीन मूल अधिष्ठात्री शक्तियां होती हैं.

महाकाली – तम

महालक्ष्मी – रज

महासरस्वती – सत्

ऊपर जब बात मैंने शक्तिमानों की कही तो उसका अर्थ यही होता है की शक्ति तथा शक्तिमानों में कोई भेद नहीं होता है , ये एक दुसरे से प्रथक नहीं किये जा सकते है, शक्तिमान इन्ही शक्तियों की प्रेरणा से अपने अपने कार्यों का सञ्चालन करते हैं.

जैसे महाकाल शिव संहार का, विष्णु पालन का और ब्रम्हा सृष्टि के सृजन का. एक प्रकार से ये समझ लो की सृष्टि का कोई भी कार्य या कण निरर्थक नहीं है. प्रत्येक क्रिया या व्याप्त प्रत्येक कण पूर्ण शक्ति युक्त होता है.

शक्ति की व्याख्या के क्रम में ये भी समझना अत्यधिक उपयोगी होगा की मानव अपना विकास कर देव स्तर तक पहुच सकता है और अपने अभीष्ट को प्राप्त करता हुआ अपने अस्तित्व को सार्थक कर सकता है. और ये स्थितियां तभी साध्य हो पाती है जब आप परिष्कृत रूप से निम्न सात शक्तियों को सदा सर्वदा के लिए पूर्ण संकल्पित होकर अपना व्यक्तित्व बना लेते हो. और यदि पूर्णता के साथ निम्न सात शक्तियां आपको परिष्कृत अवस्था में प्राप्त हो गयी तो कुछ भी असाध्य नहीं रह जाता है .

प्रज्ञा शक्ति

चेतना शक्ति

वाक् शक्ति

क्रिया शक्ति

विचार शक्ति

इच्छा शक्ति

संकल्प शक्ति

ये उपरोक्त तीनों मूल शक्तियों के ही परिवर्तित रूप है.

क्या इनके अतिरिक्त कोई और शक्ति नहीं है जिसकी अनिवार्यता मानव जीवन में प्रकृति द्वारा नियोजित की गयी हो ????

है क्यों नहीं.... काम शक्ति की अनिवार्यता सर्वोपरि है . जीवन में परिपूर्णता काम भाव से ही आती है. सृजन के मूल में यही भाव विद्यमान है तभी तो वेद भी काम को देवता कहते हैं . काम का मूल गुण आकर्षण है ... जो विद्वान होते हैं वे काम को इच्छा शक्ति का ही पर्याय मानते हैं . तंत्र तो यहाँ तक कहता है की सृष्टि में जितने भी प्रकार की ऐषणायें हैं,उनके मूल में यही काम शक्ति ही है. इस लिए ये सम्पूर्ण विश्व उसी परमशक्ति की इच्छा या काम भाव का ही विस्तार कहलाती है.

जीवन के सारे चैत ,सामाजिक और वैषयिक नियमों के मूल में काम भाव ही होता है.

परमात्मा से लेकर आत्मा तक के जितने भी सम्बन्ध होते हैं वे सब आकर्षण,काम और मैथुन(योग) से ही युक्त होते हैं. किसी भी प्रकार की परिस्थिति में किसी भी प्रकार के सम्भोग में फिर वो चाहे आत्मिक हो या बाह्यगत, वो आदिशक्ति ही काम शक्ति के रूप में परिणत होती है कार्य करती है.

भला ये कैसे माना जाये की सभी कार्यों के पीछे यही कामशक्ति कार्य करती है... सृजन तो समझ में आता है की इसी काम भाव से उत्प्रेरित है,परन्तु भला संहार से इस काम भाव का क्या लेना देना???

इसे ऐसा समझा जा सकता है की यदि आप किसी के आकर्षण में बांध जाते हैं और आगे जाकर प्रेम करने लगते हैं तब भी तो आप एक समय बाद उसकी अपने से प्रथकता सहन नहीं कर पाते हैं तब आप क्या करते हैं... उसे आत्म एकाकार करने की कोशिश करते हैं . ऐसे में या तो आप उसमे विलीन होने की चेष्ठा करते हैं या उसे अपने में मिलाने की. भूख समाप्त करने की आपकी लालसा या इच्छा भोजन के प्रति आपको आकर्षित करती है... अब ऐसे में उस भोजन का जो थोड़ी देर पहले तक अपना अलग अस्तित्व था...

आपके भोजन के प्रति आकर्षण के कारण,उस भोजन की सत्ता का ही अंत कर देता है. ये नियम प्रत्येक प्राणी पर समानान्तर रूप से कार्य करता है. परमात्मा से ही अंश प्राप्त कर आत्मा मनुष्य शरीर धारण करती है इस क्रम में मनुष्य जन्म लेता है, जीवन के सुखों का उपभोग करता है और आखिर में एक समय बाद मृत्यु उसका वरण कर उस आत्मा को पुनः परमात्मा की तरफ गतिशील कर देती है तो क्या इसके मूल में परमात्मा की काम शक्ति कार्य नहीं करती है जो की वो अपने अंश का विलीनीकरण अपने में कर के संपन्न करता है. क्या यहाँ पर सृजन हुआ ..... नहीं ना..... लेकिन लौकिक दृष्टि से ये संहार भी सृजन की तरफ एक कदम ही तो है.

आप किसी से जब प्रेम करने लगते हैं तो तीव्र आकर्षण के कारण उससे सम्भोग करने की तीव्र लालसा को आप क्या कहेंगे ..... क्या वो मात्र इन्द्रिय लोलुपता है ,नहीं... उसके मूल में भी आपकी अपने प्रेम या अभीष्ट से प्रथक ना रह पाने की चरम लालसा ही तो है जो की उसके अस्तित्व का योग अपने अस्तित्व से करवाने के लिए उत्पन्न होती है. तब वह दो हो ही नहीं सकते ..... रह जाते हैं तो मात्र एक ही. ये अलग बात है की एक साधक ,एक शिष्य ,एक योगी इस भेद को आत्म एकाकार क्रम अपना कर दूर करता है और सामान्य अवस्था में सामान्य मनुष्य शरीर का योग कराकर. परन्तु तंत्र शरीर से ऊपर उठ कर आत्म योग की बात करता है इसी काम शक्ति का सहयोग लेकर. इस प्रकार ये काम शक्ति उसी आदिशक्ति का ही तो रूप होती है जिसके वशीभूत होकर वो तम,रज और सत् गुणों का पालन भिन्न भिन्न रूप में करती है.

तांत्रिक दृष्टि से तम,रज और सत् गुणों की अधिष्ठात्री शक्ति महाकाली,महालक्ष्मी और महा सरस्वती को ही क्यूँ माना जाता है,क्या ऐसा नहीं हो सकता है की महालक्ष्मी रज के बजाय तम गुणों का प्रतिनिधित्व करे???

नहीं ऐसा नहीं हो सकता है... सृष्टि के आरंभ में जब सृजन भी नहीं होता है,पालन भी नहीं होता है.तब ऐसे में मात्र पूर्ण अन्धकार ही होता है ...जब मात्र महानिद्रा की उपस्थिति ही अपने पूर्ण साकार या निराकार रूप में होती है.और ये तम तत्व ही महाकाल है...जिसके अधीनस्थ काल भी सदा भयभीत रहता है . एक बात उल्लेखनीय है की शरीर का विसर्जन काल के द्वारा सम्पादित होता है और आत्मा पर काल का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है, आत्मा सदैव काल से परे रहकर मात्र महाकाल द्वारा ही तिरोहित होती है.

उसी महाकाल की शक्ति है महाकाली, जो संहार भाव की प्रणेता है . ये शक्ति प्रलयनिशा के मध्य काल से सम्बन्ध रखती है ,इसी की उपस्थिति से ये संसार शिववत बनकर साकार है , जैसे ही इनका लोप होता है ,शिव को शव बनने में एक क्षण नहीं लगता है,चूँकि ये प्रलयनिशा अर्थात रात्रि से सम्बंधित हैं और है इनका सम्बन्ध मध्य काल से तब ऐसे में ये जहा तम को दर्शाती हैं वही ये संक्रांत रूप में अपने अंदर रज अर्थात पालन-पोषण और सत् अर्थात सृजन के गुणों को भी रखती हैं. परन्तु महालक्ष्मी तम भाव से प्रेरित नहीं है और न ही महा सरस्वती ही रज से सम्बंधित हैं. इसलिए संहार का गुण तो कदापि इनमे नहीं हो सकता है. हाँ ये अलग बात है की महाविद्या रूप में ये जब अपना योग तम से कर लेती हैं तो ये संहार भी कर सकती हैं.

आपने महाविद्याओं की बात कही है ,तो क्या सारी महाविद्याएं इन्ही तीन मूल शक्तियों का रूप होती हैं,क्या पंचमहाभूत तत्वों से इनका कोई लेना देना नहीं होता है ????

नहीं ऐसा नहीं है ,जब हम आदि शक्ति की बात करते हैं तो उसका अर्थ बहुत विराट होता है,आदि शक्ति से मेरा मतलब **राजराजेश्वरी षोडशी त्रिपुर सुंदरी** से है, उन्ही के तीन गुणों की अधिष्ठात्री वे तीनों महा शक्ति हैं. वैसे श्रीकुल की मूल महा विद्या षोडशी त्रिपुर सुन्दरी को माना जाता है. परन्तु उनका मंत्र और यन्त्र महाविद्या रूप में भिन्न ही होता है ,और जब वे आदि पराशक्ति राज राजेश्वरी होती हैं तो उनका मूल **यन्त्र श्री चक्र या श्री यंत्र** ही होता है जो की इस ब्रम्हांडीय रूप का ज्यामितीय रूप प्रदर्शित करता है,ऐसा रूप जो अकल्पनीय शक्तियों को प्रदर्शित करता हो.

रही बात पंचमहाभूतों की तो प्रत्येक तत्व २ महाविद्याओं का प्रतिनिधि है ,और इस प्रकार ५x २=१० होते हैं, इसमें भी ध्यान रखने वाली बात ये है की प्रत्येक तत्व के दो गुण होते हैं .

उष्ण

शीत

इसी प्रकार प्रत्येक तत्व की दो महाविद्याओं में से एक महाविद्या उग्र भाव से युक्त होती हैं और दूसरी शांत प्रकृति से युक्त होंगी. जिस प्रकार उस पराशक्ति की शक्ति से ही सूर्य और चन्द्र दोनों प्रकाशित होते हैं, और सूर्य जहा उष्णता देता है वहीं चंद्रमा शीतलता देता है.लेकिन कितने आश्चर्य की बात है की **सूर्य की उष्णता जहाँ मानव में ताप,तेज और तीव्रता लाती है, आत्मकेंद्रित होने के लिए हमें प्रेरित करती है,वही, चंद्रमा की शीतलता और प्रकाश हमारे मन को आह्लादित और काम भाव की तीव्रता से युक्त** कर देती है.

जीवन के प्रत्येक कर्म की अधिष्ठात्री कोई ना कोई विशेष शक्ति होती है.तंत्र में जितनी भी क्रियाएँ होती हैं वे सभी किसी खास शक्ति के अंतर्गत ही आती हैं,यही कारण है की बहुधा लोगो को जब इन कर्मों की अधिष्ठात्री शक्ति का ही ज्ञान नहीं होता है तो भला उनके द्वारा किये गए तांत्रिक कर्म कैसे सफल हो सकते हैं . अज्ञानतावश किया गया कैसा भी सरल से सरल प्रयोग इसी कारण सफल नहीं हो पाता है . इसलिए यदि क्रिया से सम्बंधित शक्ति का ज्ञान हो जाये तो ज्यादा उचित होता है.... जैसे –

वशीकरण – वाणी

स्तम्भन – रमा

विद्वेषण – ज्येष्ठा

उच्चाटन – दुर्गा

मारण – चंडी या काली

के अंतर्गत आते हैं . इसी प्रकार तंत्र और उससे जुडी प्रत्येक क्रिया का यदि विधिवत प्रयोग किया जाये तो क्रिया से सम्बन्धी शक्ति पूर्ण सिद्धि देती ही है.

भला वो कैसे संभव है ?? क्यूंकि महाविद्या इत्यादि क्रम तो अत्यंत जटिल कहे गए हैं कोई बिरला ही इसमें सफलता पा सकता है, ठीक इसी प्रकार मैंने ये भी सुना है की दुर्गा सप्तशती एक तांत्रिक ग्रन्थ है, और मैंने ये भी सुना है की यदि सही तरीके से इसका पथ या प्रयोग किया जाये तो शक्ति के प्रत्यक्ष दर्शन संभव होते ही हैं, और वह कौन सी मूल क्रिया है जो सरल और सहज भाव से जीवन के चतुर्विध पुरुषार्थों की प्राप्ति करवाती ही है??

देखो ये तो सही है की महाविद्या को पूर्णता के साथ सिद्ध कर लेना एक अलग बात है परन्तु , बहुत बार साधक अपने जीवन की सामान्य से परेशानियों या कार्यों के लिए सीधे ही इन महाविद्याओं का प्रयोग करने लगता है , जो की उचित नहीं कहा जा सकता है ,क्यूंकि ऐसी स्थिति के लिए तो आप जिस महाविद्या का मन्त्र जप करते हैं हैं या जिसे वर्षों से कर रहे हैं , यदि मात्र उनके मन्त्र का विखंडन रहस्य समझ कर मन्त्र के उस भाग का ही प्रयोग किया जाये तब भी आप को समबन्धित समस्या का निश्चित समाधान मिलेगा ही. जैसे मान लीजिए कोई साधक भगवती तारा की उपासना कर रहा है और उसके परिवार के किसी सदस्य को स्वास्थ्य सम्बन्धी जटिल बीमारी हो गयी हो .... तब इसके लिए मूल मंत्र की दीर्घ साधना के बजाय उस मन्त्र या स्तुति के एक विशेष भाग का प्रयोग भी अनुकूलता दिला देता है .... **'तारां तार-परां देवीं तारकेश्वर-पूजितां, तारिणीं भव पाथोधेरुग्रतारां भजाम्यहम् . स्त्रीं ह्रीं हूं फट्'** - मन्त्र से जल को अभिमंत्रित कर उससे नित्य रोगी का अभिषेक करे, तो उसके रोगों की समाप्ति होती है.

'   ' मन्त्र से १००८ बार अभिमंत्रित कर अक्षत फेकने से रूठी हुयी प्रेमिका या पत्नी वापिस आती है .

'हंसः ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं हंसः' मन्त्र से अभिमंत्रित काजल का तिलक लगाने से कार्यालय,व्यवसाय और अन्य लोगो को साधक मोहित करता ही है.

वस्तुतः मूल साधना से सिद्धि पाने में बहुत सी बातों का ध्यान रखना पड़ता है . जिनके सहयोग से ही उस महाविद्या साधना में सिद्धि मिलती है. यथा **शरीर स्थापन** इत्यादि. और एक निश्चित जीवन चर्या को भी अपनाना पड़ता है .

तभी सफलता प्राप्ति होती है ,अन्यथा ये साधनाए तो साधक का तेल निचोड़ देती हैं ,इतनी विपरीतता बन जाती है साधक के जीवन में की वो इन साधनाओं को सिद्ध करने का संकल्प ही मध्य में छोड़ देता है .

रही बात दुर्गा सप्तशती की तो हाँ ,निश्चय ही ये सांगोपांग तंत्र का बेजोड ग्रन्थ है और इसके माध्यम से देवी के समन्वित और भिन्न भिन्न तीनों रूप के दर्शन किये जा सकते हैं,बस उनके लिए निश्चित विधि का प्रयोग करना पड़ता है . यदि इसके लिए **भगवती राज राजेश्वरी** की साधना कर ली जाये तो **सोने पर सुहागे** वाली बात हो जाती है . एक बात कभी नहीं भूलनी चाहिए की मन्त्र ,उस मन्त्र की इष्ट शक्ति और साधक ये तीनों साधना काल में एकात्म ही होते हैं ,यदि साधक इसमें अंतर लाता है तो उसे सफलता नहीं मिल सकती है . प्रत्येक साधना में **सद्गुरु की प्रसन्नता आपको सफलता दिलाती है , इसलिए हमें सदा सर्वदा ऐसे कृत्य ही करना चाहिए, जिससे उन्हें प्रसन्नता का अनुभव हो. जब एक सामान्य व्यक्ति भी प्रसन्न होकर हमरे कार्यों को सरल कर देता है तब ऐसे में ब्रम्हांडीय विराटता लिए हुए सदगुरुदेव के प्रसन्नता हमें क्या कुछ प्रदान नहीं कर सकती है.**

शक्ति प्राप्ति की मूल साधनाएं कौन कौन सी हैं ,जिन्हें संपन्न कर साधक सक्षमता को प्राप्त कर अभीष्ट को पा लेता है ???

शक्ति की किसी भी रूप में साधना की जा सकती है, फिर वो चाहे पुरुष रूप में हो या स्त्री रूप में ,उससे कोई फर्क नहीं पड़ता क्यूंकि लिंग बदल जाने से शक्ति का मूल स्रोत नहीं बदल जाता है.इसलिए मन में ये भाव कभी नहीं रखना चाहिए की ये पुरुष देव की साधना है तो इससे शक्ति की प्राप्ति नहीं होगी या ये स्त्री देवता की साधना है तो इससे ज्यादा शक्ति की प्राप्ति होगी. चाहे वो पुरुष देवता हो या स्त्री देवता, ऐसा नहीं है बहुत कम लोग होंगे जिन्हें ये पता होगा की **शुक्र अर्थात काम शक्ति की बिंदु साधना की मूल शक्ति काल भैरव होते हैंजिनके तांत्रिक क्रम को अपनाकर कोई भी अद्भुत यौवन को प्राप्त कर सकता है और पा सकता है पूर्ण स्त्रीत्व या पूर्ण पौरूषत्व**. और काल भैरव की शक्ति की प्राप्ति का उनका मूल स्रोत वो आदि शक्ति ही तो होगी,जिसे निखिल शक्ति या राज राजेश्वरी कहा जाता है. सैकडो साधनाओं में से कुछ सरल मगर तीक्ष्ण प्रभाव से युक्त साधनाएं निम्न अनुसार हैं ,जो की साधक के जीवन को अपनी जगमगाहट से भर देती हैं और उसकी अपूर्णता को पूर्णता में परिवर्तित कर देती हैं.

धूमावती कल्प साधना- ज्ञात,अज्ञात शत्रुओं पर विजय प्राप्ति की अद्भुत व सरल साधना

सप्त ऋषि पूंजीभूत तत्व शक्ति साधना- सूर्य विज्ञानं और काल दर्शन की अद्भुत साधना

माया शक्ति साधना – अद्भुत आकर्षण क्षमता प्राप्त कर मनोरथ पूर्ण करने का रहस्य

तीव्र कामेश्वरी चन्द्र शक्ति साधना – सौंदर्य पाने का अनूठा प्रयोग

बगलामुखी शरीर स्थापन तीव्र प्रयोग- इस प्रयोग के बाद संभव हो जाते है माँ के प्रत्यक्ष दर्शन

प्रत्यक्ष प्रेत शक्ति साधना- प्रेत शक्ति द्वारा मनोकामना पूर्ती का सरल प्रयोग

त्रयी नवार्ण साधना- तीन अलग अलग शक्तियों के नवार्ण मंत्र ,उन्हें प्रत्यक्ष करने हेतु

Shakti rahaShyam (Secret of power) –

In the search of amaizing powers of sadhana world, I met with so many sadhaka…but this is the biggest fact that the day when sadgurudev hold my hand in his hand… at the very same moment I started feeling no worries and state of Insouciance at every moment… every moment it was a peace which my soul was feeling. Any doubt arise in the mind…at the very next moment he used to vanish it by this way " you are mine, why are you so much of Distressed…remember, whenever any of the question will trouble you, at that time I will give you by extracting your same mind, from the mind which is the source of my place in the heart of the disciples for and from infinite time duration, this will continue for whole life and will happen for every disciple this are my words."

From that moment there has been no place of worry in the mind.

Whenever any curiosity comes to the mind and when it affects on the peace of mind… at those very specific moments sadgurudev himself or any of his loving sanyashi or gruhasth disciple came forward and established the peace of mind by their valuable answers. Here I would like to mention specifically that whenever I went to anywhere with a will to have knowledge at that time the behavior of those specific sadhaka have remained completely positive for me and they had always accepted that they already had information about my arrival and the meeting has been designed already by the sadgurudev. And he have designed this for his every disciple…who and where to give and what to give, he had decided already from long.

In that time period of my travel I met Sadgurudev's purn Shakt disciple Kaul Mani Shivayogatrayanand. With order of sadgurudev he selected very sacred vindhyavasini peetha for his sadhana. He is still in his sadhana in a secret cave of the same mountain. And I met him in the same cave and got blessing of his glimpse.

In very short span of time I started shooting my questions, and he too kept on answering my all questions with peace and smiles on the face & kept on revealing secrets. (He answered hundreds of questions, but in this special issue I am giving few of them which are related to the subject which can make subject easy to understand.)

What is the shakti (power), how many form does it have?

In simple words whose imagination have caused complete universe and with whose effect nature keeps on works in creating, rearing and vanishing that only infinite light is called as Shakti. It could be in any form. It leaves effect on all rather living or non living. In tangibles, those who are classified as power supplier, energy supplier or force supplier those all receives power from this supreme power. This supreme power could be in tangible, non tangible or in any other form.

It stays inside all beings, with only which we can accomplish task of creation and others. And base for the thoughts to be created is the same power.

How many types are there?

On the base of nature, it has three conditions-

Sat

Raj

Tam

Holding the base of particular nature there is existence of three main processes of creation, rear and vanishes. And this processes are done by three base of shaktis, Shaktimaan (by whose medium shakti does the processes) . it is the point to be remembered that the way there are three main type of nature, the same way there is three main controlling power goddesses for those nature.

Mahakaali – tam

Mahalakshmi – raj

Mahasawashwati – sat

What I said above about the shaktimaana that does mean that there is no difference between shakti and Shaktimaana, they are inseparables, shaktimaan accomplish their tasks with inspiration of these shaki only. Like mahakaal in vanishing, Vishnu in rearing and creation of bramha. This way, understand this that any of the process or particle is not insignificant. Every process and particle is full of shakti.

In the definitional description of shakti, it is also an essential point to understand that humans can reach to the stages of god by processes of development and can make his existence meaningful by accomplish his life desires. And these conditions could only be accomplished when you make these seven main powers your personality completely by being full determined and devoted. And if you accomplished this main power in their complete form then there would remain nothing impossible.

Pragya shakti

Chetana shakti

Vaak shakti

Kriya shakti

Vichar shakti

Ichha shakti

Sankalp shakti

These are modulated forms of the main three powers only.

Apart from these, is there any other shakti which is pre-designed by nature for the requirement of human life?

Yes why not… requirement of Kamashakti is paramount. The fullness of the life comes throught Kaama Bhav only. In the base of creation this nature only stays for which even Vedas have classified it under Gods. The main property of kama is attraction… Scholars always understand Kama as synonymous of Ichha shakti. Tantra says at extent that every type of thing which are liable do have the base as kama Shakti. For this only, this whole universe is called as ichha or kaama bhav's expansion.
All regulations of life subjected to socialism and subjects do have base as kama bhav.

From the supreme soul to the normal soul all the relations exists, all those are accompanied by attraction, kama and maithoona (sex) {more specifically 'Yoga'}. In any situation in any type of sambhoga either internal or external, the task is done by the supreme Shakti by emerging a form of kama shakti.

How does it could be understandable that behind every task there is work of kama shakti…creation could be understand that it is derived with kama bhav but what does it have relation with vanishing or destruction?

This could be understand that in case that if you are in attraction with someone and further you start loving then too after a particular time duration you cannot tolerate what do you do at that time…you again try to merge your soul. In that condition either you try to merge yourself in that person or you try that person to merge with you. Your wish to overcome hunger will always attract you to the food… in that condition before a short time that particular food was having a very different form in itself…because of your attraction to that food, it ends the existence of food.

This rule works on every being equally. With the separation from supreme soul, normal soul gets to be human and in this way, human takes birth, have pleasures of various comfort and at last one day cause of death will again make it move to supreme soul so don't kama shakti of supreme soul work in the base of this which is done by merging its part in itself. Is there a creation? No…but from the cosmic vision it is also a step to the creation. When you start loving someone with a strong attraction you feel to have a sex with person what you will call this…is it just a physical satisfaction,

no…in the base of this there is a desire not to remain separate with that peson which is on extreme level which came up just to merge yourself with that person. At that time it does not stays two…anything stay behind is one.

It is another thing that one sadhak, disciple, yogi will have internal self merge and stay far of it and in normal situation merging a normal body. But tantra speaks about aatmayoga being ahead from body and that too with the help of this Kama power only…this way this kama shakti stays form of the supreme shakti by being attracted to which it works with different form of tam, raj and sat.

In the tantra sight, why controlling goddess of tam, raj, sat are believed to be mahakali, mahalkashi and mahasaraswati respectively? Is it not possible that mahalakshmi works with nature of tam instead of raj???

No, it cannot happen. In the dawn of universe where there was no creation, there was no rear. At that time there was complete darkness only… when presence of mahanindra is there in its form of saakar and niraakar. And this tam element is mahakal only…from which kaal (time) even stays feared. Here it is to be noted that destruction of the body is done by kaal and there is no effect of the same on the soul. Soul always stays apart of kaal and covered with mahakaal.

The same mahakal have mahakali as shakti, who is precursor producer of the destruction. This shakti haves relation with middle time of pralaynisha. The presence of the same makes this world exist being covered with shiva, when it disappear, there is no moment time shiva turning in shavaa (death body or non existence). As it is related with pralaynisha means night time and they have a relation from middle time this way when it represents tam, it also has raj (to rear nature) and sat (creating nature) in the sankrant form.

But mahalakshmi is not inspired from tam nature and neither maha sarashwati have relation with raja. This way there is no possibilities of them to have nature of vanishing. Yes, it is completely different condition when they get connected with tam in form of mahavidhyas, at that time they can even accomplish destructions.

You just spoke about mahavidhya, so does all mahavidhyas are form of these three base powers, does they have not any relations with panchamahabhoota ????

No, it is not that way, when we are speaking about aaadhya shakti (supreme power) then it has a very big meaning, from aadishakti I mean to say Raajraajeshwari Shodashi Tripur Sundari; holding the three main nature of her, there stands three maha shaktis. Perhaps, main mahavidhya of shrikul is taken as shodashi tripur saundari. But her mantra and yantra in mahavidhya form is different, and when she is parashakri raaj raajeshwari then her main base yantra is shri chakra or shri yantra which is represents geometry form of universe, the one which is holder of unimaginable powers.

And about panchmahabhuta then every element represents 2 mahavidhyas, and this way 5X2 = 10 occurs, in this too there is a notable thing that every element has 2 nature

Ushn (hot)

Sheet (cold)

This way, from ever element's 2 mahavidhya one would be with ugra nature and second would be having peaceful nature. The way sun and moon owns light with that parashakti, where sun gives heat and moon gives cold. But how strange is this, where heat of the sun provides warmth, splendor and intensity in humans, which inspire us to concentrate with oneness; the cold shine of moon gives excitement to the mind and make it filled with kama bhav.

Behind the each and every action (karma) of life there is a special ownering shakti, to whom we call Adhishthaatri Devi, related to that action is responsible for its happening similarly in tantra every procedure is carried out under the command of some special power but there are number of people who don't know which deity is regarded as the supreme power of which procedure than how they expect success in tantra as we all know little knowledge is dangerous thing .

and it's this little knowledge which becomes the cause root of failure in the easy to easiest process of tantra so it's better to have the complete knowledge of process and its authority like-

Such procedures as

Vashikaran- Vaani

Stambhan- Rama

vidveshhan- Jyeshhtha

Uchchatnan- Durga

Maaran - fall under the authority of Chandi or we can say Kaali.

Now the doubt here rises is….

Who takes its guarantee that if the whole procedure is carried out properly then its related supreme power will bless you??? As all the process and procedures related to Mahavidya is entitled as the toughest one and out of hundreds ones a single unique one gets success in them…..Just like that I have heard that Durgasapatshatii is a tantric granth and if carefully and properly its practicals should carry out than the deity is bounded to mark its appearance in front of sadhak and which is that fundamental process which helps to attain complete man power (Chaturvidh Purusharth) in life that too by following easy going way???

Now here the all answers are there…..firstly let me make it clear for all of you that to get all Mahavidya Sidh is something different matter…..so its completely unfair if a sadhak starts to use these Mahavidhyaas just to get rid of his daily life's minor problems and situations as he can get them settle down just by doing the mantra jaap of that deity,

which he is doing from a long time back and for this he just need to understand the Vikhandan Rehasya of that mantra as which section of mantra will help him to which type of action…..

definitely he will get the solution…..see how simple it is….isn't it……ya it is if the doer is conscious. Let me make it more simple for you with an example……now just think there is a sadhak who is doing Bhagwati sadhna but at the same time someone is suffering from severe health disease in his family………than he just to change the section of mantra that is at the place of basic mantra's Dheerg Sadhna he should enchant that mantra or Satotra of it which deals with health portion as –

…..Tara Taar-Pra Devi Tarkeshwer-Poojtiyan, Tarini Bhav Pathodherugratara Bhjamyahm...Streem Hreeng Hum Phat…just get the water enlighten (abhimantrit) with this mantra and give it to that person everyday he will soon recover his health. "Streem Treem Hreem" by making the rice (akshht) enlightens (abhimantrit) with this mantra jaap 1008 times and then throwing them away is helpful in getting back angry beloved or wife. If a sadhak put a tilak of enlighten kajal on his forehead with the mantra

"Hans: Om Hreeng Streem Hum Hans: then every person in his office or business place gets attracted towards him. Finally in order to get sidhi in basic sadhna one need to pay attention at number of things because with the co-operation of these small things one get sidhi in Mahavidya. For this one need to follow a decided life style and shreer sthaapan process otherwise these sadhnaas can make your life living hell. Sometime situation become so severe that sadhak drop his resolution in between.

Now come to our first question so the answer is YES!! Durgasapatshatii is a marvelous granth of Saangopaang Tantra and by following its complete process one can have the blissful presence of the whole three figures of Durga Deity but to have this divine feeling one need to follow proper procedure.

If a sadhak does the sadhna of Bhagwati Raj Rajeshwari for this than its divinity becomes peerless. Always remember one thing that during sadhna- mantra, supreme authority of that mantra and sadhak becomes one during sadhnaa period as if there remains any gap then forget about success. In every sadhna Sadgurudev's happiness is essential for success so one should do such deeds which can bring smile on Sadgurudev's face as smile is a power to get your work done from a common person then think what will its reaction if it spread on the lips of the Highest Divine Power of this Universe.

Which are the base sadhanas of shakti, after accomplishing which, sadhak will have their desires fulfilled?

Sadhana of shakti could be done in any form, rather it is in form of man or woman, there is no difference because changing the gender will not change the basic source of energy. Therefore it should never be in mind that this is male deity so the shakti could not be gain or this is female deity so more energy could be generated. Rather it is male or female diety, it is not so many people know about this sukra i.e. kaam shakti's bindu sadhana have kaal bhairava as base shakti, of which anyone can adopt the process and have extraordinary beauty and can have complete femininity or robust.

And source to have energy for kaal bhairav would be the main basic shakti only, which is called as nikhilshakti or raaj raajeshwari. From hundreds of sadhanas few easy but extreme powerful sadhanas are as followed, which can bloom life of the sadhaka and will convert emptiness into totality.

Dhoomavati kalpa sadhana – great and easy sadhana to have victory over known and unknown enemies

Sapt rishi poonjibhoot tatva shakti sadhana – miraculous sadhana of surya vigyana and kaal darshana

Maya shakti sadhana – secret to have full attraction power and fulfill all wishes

Tivra kaameshwari Chandra shakti sadhana – unusual process to gain beauty

Bagulamukhi sharer sthapan tivra prayoga – it is possible to have glimpse of mother after this prayoga

Pratyaksha prêt shakti sadhana – easy prayog to fulfill desired wish with the help of preta shakti

Trayi navaarn sadhana – three different navaarn mantras of three shaktis, to have them infront of you.

Bagulamukhi sharer sthapan sadhana

दुर्लभ विधान जो आपके सामने पहली बार आ रहा हैं

मनुष्य के शरीर से एक प्राणसूत्र निकलता है,जिसे हम **अथर्व** के नाम से जानते हैं ,चूँकि ये प्राणसूत्र प्राण रूप में होता है,इसलिए लौकिक रूप से इसे देख पाने में हमारी स्थूल दृष्टि असमर्थ रहती है जिस परोक्ष शक्ति की वजह से हमारा मन हमारे किसी आत्मीय के दुःख से दूर रहकर भी परिचित हो जाता है, उसी शक्ति को हम अथर्वा सूत्र के नाम से जानते हैं. इस शक्ति सूत्र में आकर्षण का प्रबलतम गुण होता है,ये हजारों मील दूर से भी किसी को तत्क्षण आकर्षित कर लेता है.

प्रत्येक प्राणी के शरीर का अथर्वा सूत्र भिन्न ही होता है. जिसमे उसकी अपनी प्राण शक्ति होती है, यथा किसी भी व्यक्ति विशेष के नाखून,बाल,वस्त्र आदि में उसकी प्राण शक्ति सदैव प्रतिष्ठित रहती है. और योग्य साधक इसके माध्यम से अपना अभीष्ट साध लेते हैं. इसी कारण कहा जाता है की अपने कपडे, नाख़ून और केश इधर उधर नहीं फेकना चाहिए. इनका कोई भी दुरूपयोग कर सकता है.

यही अथर्व शक्ति 'बगलामुखी' के नाम से साधक समाज में प्रचलित है. और इनकी साधना दुसाध्य भी होती है. और सत्य भी है, जिस प्राण शक्ति के कारण सम्पूर्ण विश्व ब्रम्हांड में टिका हुआ है ,वो इतनी आसानी से तो कभी सिद्ध नहीं हो सकती है. बहुतेरे साधक जन्म जन्मांतर तक इनकी साधना करते रहते हैं ,परन्तु इनके रहस्यों का उचित ज्ञान न होने के कारण वो इनकी शक्तियों की उचित प्राप्ति नहीं कर पाते हैं. इनकी साधना में **"ॐ एकवक्त्र महारुद्राय नमः"** मंत्र का महत्वपूर्ण योगदान होता है. एकवक्त्र महारुद्र शिव इनके भैरव हैं ,और ये तो सभी महाविद्याओं का सिद्ध करने का आधारभूत नियम है की, महाविद्या की सिद्धि उनके भैरव को सिद्ध करे बगैर हो ही नहीं सकती.

तत्पश्चात बगलामुखी का शरीर में स्थापन अनिवार्य होता है, बिना देह स्थापन के इनकी सिद्धि हो ही नहीं सकती.

इस साधना के लिए कोई भी दो विकल्प आप चयनित कर सकते हैं .पहला आप चने की दाल से बगलामुखी यन्त्र का निर्माण कर के उस पर स्वर्णमयी बगलामुखी की प्रतिमा का स्थापन कर ले या फिर बाजोट पर **"पीताम्बरा शक्ति चालन पारद गुटिका"** का स्थापन कर ले , ये विशुद्ध पारद से बनी हुयी अग्नि स्थायी हलके लाल रंग की होती है और इसकी चमक साधना के साथ साथ बढते ही चली जाती है जो की इस बात का प्रमाण होती है की आपका अथर्वा सूत्र तीव्रता से जाग्रत और चैतन्य हो रहा है. आप अपनी सुविधानुसार कोई भी विकल्प का चयन कर सकते हैं.

शनिवार की मध्यरात्रि को अपने सामने कोई भी विकल्प का बाजोट पर पीला वस्त्र बिछाकर स्थापन करके, पीले वस्त्र धारण करके,तथा दीपक में भी केसर डाल दे तथा बत्ती को भी हल्दी से रंग कर सुखा ले.आसन पीला होना चाहिए. सदगुरुदेव तथा गणपति का पूजन संपन्न कर ले.

तत्पश्चात **"ह्लीं"** बीज मंत्र से निम्न स्थानों पर माँ का स्थापन करे.

यथा –

ह्लीं मूल आत्म-तत्व व्यापिनी श्री बगलामुखी श्री पदुकाम पूजयामि – मूलाधारे

ह्लीं विद्या -तत्व व्यापिनी श्री बगलामुखी श्री पदुकाम पूजयामि – हृदये

ह्लीं शिव -तत्व व्यापिनी श्री बगलामुखी श्री पदुकाम पूजयामि – शिरसि

ह्लीं सर्व-तत्व व्यापिनी श्री बगलामुखी श्री पदुकाम पूजयामि – सर्वांगे

तत्पश्चात निम्न मंत्र से उनका विशेष ध्यान करें,ये ध्यान मंत्र ३६ बार बोलना है –

विराटस्वरूपिणीम् देवी विविधानंददायिनिम्।

भजेऽहं बगलाम् देवीं भक्त चिंतामणिम् शुभां ॥

तत्पश्चात हल्दी, बेसन के लड्डू,पीले रंगे हुए अक्षत तथा पीत पुष्पों से देवी का या गुटिका का पूजन करे.

इसके बाद हल्दी की प्राण प्रतिष्ठित माला से निम्न मंत्र की ३६ माला जप करे.और ये क्रम ३ दिनों तक करना है.

ओम ह्लीं बगलामुख्यै शरीर सिद्ध्यै नमः

इसके बाद फिर से ३६ बार ध्यान करना है और विशेष न्यास करना है, यही क्रम नित्य प्रति रहेगा.

ये बगलामुखी साधना का अनूठा गोपनीय विधान है,जिसके द्वारा उनकी साधना में पूर्ण सफलता प्राप्त होती है और आगे की साधना का मार्ग प्रशस्त होता ही है.

****

Bagulamukhi sharer sthapan sadhana -

In the human body there is a pransutre, which is known as atharva, as this pransutra is in the form of prana, ability of our eyes is not at the extent to watch it.

With the one indirect power our mind automatically gets to know about the pain or sorrow of cognate though staying at far distance, the same power is termed as atharvaa sutra. This shakti sutra have potent property of attraction, this can certainly attract any one from thousands of miles far.

Every human have a different atharvaa sutra. Which has its own prana shakti, as there remains presence of pran shakti in individual's nails, hairs, clothes etc. and capable sadhaka will fulfill his desire from this. This is the reason that cloths, nails or hair of the self should not be thrown anywhere. Anyone can do misuse of the same.

This atharva shakti is known as 'bagulamukhi' in the sadhak's world. And her sadhana is extreme difficult too. And it is a fact too that the pran shakti because of which the world stays in bramhand, she cannot be accomplished so easily. So many sadhaka keep on doing her sadhana for many lives, but being unaware of the secret knowledge related to subject, they does not become able to have powers from her,

in her sadhana "aum ekavaktr mahaarudraaya namah" mantra haves big contribution. Ekvaktra mahaarudra shiva is bhairava of her, and it is the base rule of all mahavidhya that without accomplishing bhairava of mahavidhya, the sadhana could not be accomplished.

After that establishment of bagulamukhi in the body is essential, without which her accomplishment is impossible.
For this sadhana there are 2 choices. First is the one in which you will prepare bagulamukhi yantra with gram (chane ki daal) and establish golden bagulamukhi's idol on it or establish "Pitambara Shakti Chaalan Paarad Gutika" on wooden mate, this is light red colored and agnisthayi gutika made of completely pure paarada and shine of the same increase while going through the sadhana respectively which is evidence that your athrva sutra is getting awaken and lively intense. You can select either of the option which is comfortable for you.

On Saturday mid night spread a yellow cloth on the wooden mate (baajota) wear yellow cloths, & saffron should also be added to the lamp (dipaka) and lamp wick should also be colored in yellow and dried. Aasana should be yellow. Do poojana of sadgurudev and ganapati.

After that with "Hleem" beeja mantra establish goddess in these places.

As-

Hleem mool aatm-tatv vyaapini shri bagulamukhi shri padukaam poojayaami – mooladhaare

Hleem vidhya-tatv vyaapini shri bagulamukhi shri padukaam poojayaami – hradaye

Hleem shiv- tatv vyaapini shri bagulamukhi shri padukaam poojayaami – shirasi

Hleem sarv- tatv vyaapini shri bagulamukhi shri padukaam poojayaami – sarvaange

Afterthat with the mantra below make a special meditation (dhyana) of her, this dhyan mantra should be chanted 36 times.

Viraataswaroopinim devi vividhanandadaayinim |

Bhajeham bagalaam devim bhakta chintamanim shubhaam ||

After that with turmeric, besan laddoo, yellow colored rice (raw rice applied yellow colored) and with yellow flowers do the poojan of idol or gutika.

After that with pranapratisthit turmeric rosary, chant 36 rounds of the following mantra. This process should be done for 3 days.

Aum hleem bagalaamukhye sharer siddhaye namah

After this again do the meditation 36 times and nyasa, these processes should also be done daily.

This is a different and secret bagulamukhi process, with which one gets success in her sadhana and way become clear for further sadhanas.

Maya shakti sadhana

परम दुर्लभ , इस साधना के बारेमे सर्वथा अप्रकाशित साधना रहस्य

वर्तमान युग में पग पग पर प्रतिस्पर्धा है ,और हर कोई जीतने का इच्छुक है, हर कोई अपना प्रभाव डाल कर अपने कार्य को साधना चाहता है ,पर क्या इतना सहज है...... नहीं ना..... हम कितना भी परिश्रम कर ले जब तक इष्ट बल साथ न हो , या भाग्य आपके परिश्रम को अनुकूलता न दे तब तक सफलता तो कोसो दूर ही रहती है.नीचे जो प्रयोग आप सभी के सामने रख रहा हूँ उसका अपने व्यवसाय और नौकरी में मैंने कई बार लाभ उठाया है , आखिर इतना महत्वपूर्ण ज्ञान होता ही इसलिए है की हम उसका उचित लाभ उठा सके.

हालाँकि इसका मूल विधान इतना प्रभावकारी है की यदि मात्र व्यक्ति परिश्रम से उसे सिद्ध कर ले तब उसकी फूक मात्र व्यक्ति और समूह को निद्रा में डाल सकती है सम्मोहित कर सकती है. परन्तु उस का दुरूपयोग भी हो सकता है, इसलिए जितना सामान्य व्यक्ति को लाभ दे सके उतना ही विधान मैं यहाँ रख रहा हूँ. ये प्रयोग भगवती काम कला काली से सम्बंधित है,और इसके प्रभाव से साधक का व्यक्तित्व माया शक्ति से परिपूर्ण हो जाता है,कोई भी ऐसा नहीं रहता है जो उसके प्रभाव से बच जाये.

नौकरी में प्रमोशन का विषय हो

घर का विवाद सुलझाना हो

पत्नी या पति को अनुकूल बनाना हो

घर का कोई सदस्य गलत मार्ग पर जा रहा हो, और उसे सही मार्ग पर लाना हो

व्यवसाय का कोई महत्वपूर्ण सहमती पत्र चाहिए

नौकरी के लिए साक्षात्कार में सफलता पाना हो

पड़ोसियों को अपने अनुकूल बनाना हो

समाज और खेल में प्रतिष्ठा अर्जित करनी हो

उपरोक्त सभी स्थिति में ये प्रयोग अचूक वरदान साबित होता है. कृष्ण पक्ष के किसी भी शुक्रवार से इस साधना को प्रारंभ करके अगले शुक्रवार तक करना है. समय रात्रि का मध्यकाल होगा. लाल वस्त्र, और लाल आसन प्रयोग करना है .पश्चिम दिशा की और मुख करके मंत्र जप होगा.सिद्धासन या वज्रासन का प्रयोग किया जाता है. जमीन को पानी से धोकर साफ़ कर लीजिए और उस पर एक त्रिकोण जो अधोमुखी होगा कुमकुम से उसका निर्माण कर लीजिए. यन्त्र नीचे दी गयी आकृति के समान ही बनेगा. मध्य में एक मिटटी का ऐसा पात्र स्थापित होगा, जिसमे अग्नि प्रज्वलित हो रही होगी. यन्त्र निर्माण के बाद सद्गुरुदेव तथा भगवान गणपति का पूजन होगा. पूजन के पश्चात हाथ में जल लेकर माया शक्ति की प्राप्ति का संकल्प तथा विनियोग करना है और निम्न ध्यान मंत्र का ७ बार उच्चारण करना है .

विनियोग-

अस्य माया मन्त्रस्य परब्रम्ह ऋषिः त्रिष्टुप छन्दः पराशक्ति देवता पुष्कर बीजं माया कीलकं पूर्ण माया प्रयोग सिद्धयर्थे जपे विनियोगः ll

ध्यान मंत्र-

तापिच्छ-नीलां शर-चाप-हस्तां सर्वाधिकाम् श्याम-रथाधिरुढाम् l

नमामि रुद्रावसनेन लोकां सर्वान् सलोकामपि मोहयंतिम् ll

ध्यान मंत्र के बाद देवी का पूजन कुमकुम से रंगे अक्षतों और लाल जवा पुष्पों से करना है,गूगल की धुप और तेल का दीपक प्रज्वलित करना है. नैवेद्य में खीर अर्पित कर दे . और त्रिकोण के प्रत्येक कोनों पर एक-एक धतूरे का फल स्थापित कर दे. “ह्रीं” बीज से २१ बार प्राणायाम करे ,और इसके बाद गूगल,लोहबान मिलाकर मूल मन्त्र बोलते हुए यन्त्र के मध्य में स्थापित अग्निपात्र में सूकरी मुद्रा से आहुति दे. इस प्रकार २१६ मन्त्र का उच्चारण करते हुए आहुति दें. और जप के बाद ध्यान मंत्र का पुनः ७ बार उच्चारण करें. खीर को कही एकांत स्थान पर पत्तल में डाल कर रख दें.

मूल मंत्र-ओं ह्रीं भूः ह्रीं भुवः ह्रीं स्वः ह्रीं शिवान्घ्री युग्मे विनिविष्टचित्तं सर्वेषां दृष्टयो हृदयस्य बालम् रिपुणाम् निद्रां विवशम् करोति महामाये मां परिरक्ष नित्यं ह्रीं स्वः ह्रीं भुवः ह्रीं भूः ओं स्वाहा ll

यही क्रम आपको आगामी शुक्रवार तक नित्य करना है. इसके बाद जब भी आपको किसी महत्वपूर्ण कार्य के लिए जाना हो , मन्त्र को ७ बार बोलकर हाथो पर फूक मार ले और हाथ को पूरे शरीर पर फेर ले. आप खुद ही प्रभाव देखकर आश्चर्यचकित हो जायेगे.

तो फिर देर कैसी, यदि ऐसी साधना पाकर भी हम ना कर सके और असफल होते रहे जीवन में , तो इसमें किसका दोष रहेगा.

****

Maya shakti sadhana-

In current time there is competition at every step and everyone wish to win, few want to use their impact to accomplish task, but is it that easy…no…whatever amount of efforts we put, till the time power of isht is not with us, or fortune do not grant for your efforts; success stays far. The process mentioned below is the one which I used and became benefited many times in business and job; perhaps such important knowledge is there just because we can have benefit of the same. However, the main process of this is so much powerful that if one accomplishes it with hard work, with single puff one may make individual or group sleep or hypnotized. But it can even lead for misusing;

therefore here I am providing process which can give benefit to the common people. This process is related to bhagawati kaamakala kaali, and with the effect of this, sadhak become completely perfect by maya shakti, there remains no one, who can save them self from the effect of this.

Issue of promotion in job

To overcome household disputes

To make husband/wife favorable

To control the person of house who is going on wrong track

To have consent in the business

For success in the interview of job

To make neighbors favorable

To have prestige in society and in games

In every above mentioned situation, this process acts as bliss. The sadhana should be started from any Friday of dark moon days (Krishna paksha) and should be done till next Friday. Time would be midnight. Cloths and asana should used red in color. Direction for mantra chanting would be west. Siddhasana or vajraasana could be taken to practice. Wash the land with water and clean and prepare downward triangle with kum kum. Yantra should be same as given below. In between of the same, Establishment of clay vessel should be done in which fire could remain burn. After yantra preparation poojan of sadgurudev and lord ganapati should be done. After poojan one will have water in the palm and will do sankalpa and viniyog & dhyan mantra should be receited 7 times.

Viniyoga-

Asy maya mantrasy parabramh rishih trishtup chhandah paraashakti devata pushkar beejam maya kilakam purn maya prayog siddhayarthe jape viniyogah||

Meditation mantra (dhyan)-

Taapicchh-nilam shar-chaap-hastam sarvaadhikaam shyam-rathaadhirudhaam |

Namaami rudravasanena lokam sarvaan salokaamapi mohayamtim ||

After dhyan mantra poojan of goddess should be done with red colored rice and red jawa flowers. Googal dhoop and lamp of oil should be ligh. Offer khir in naivedhya (bhoga). And establish fruit of dhatura one triangles 3 corner. Do pranayam with hrim beej for 21 times, after that mixing guggal, lohbaan give offerings (aahuti) in the fire vessel established in middle of yantra with Sukari Mudra. This way, give offering while chanting the mantra for 216 times. And after jaap again chant dhyana mantra for 7 times. Place kheer in leaf dish at some far human place.

Mool Mantra- Aum Hreem Bhooh Hreem Bhuvah Hreem Svah Hreem shivandhri yugme vinivishtachitam sarvesham drushtayo hradayasya baalam ripunaam nidram vivasham karoti mahaamaaye mam pariraksh nityam hreem svah hreem bhuvah hreem bhooh aum swaha

The process schedule should continue till next Friday daily. After that whenever you want to go for some important work chant mantra for 7 time and puff in your palm and turn hands on whole your body. You your self will be amazed to see the impact. So what is wait, owning such sadhana if we do not perform it and stay unsuccessful in the life, whose fault is that.

TRAI NAVAARN SAADHNA

अब देर कहाँ सफलता में जब माँ की साधना करना हैं

शक्ति की साधना वस्तुतः त्रिकोण की ही साधना कहलाती है ,अधोमुखी त्रिकोण शक्ति का ही प्रतीक होता है. दुर्गासप्तशती तीन चरितों में विभक्त है – प्रथम , मध्यम और उत्तम चरित . और ये तीनों चरित आपस में मिलकर एक त्रिकोण का ही निर्माण करते हैं. प्रथम चरित काली कुल के अंतर्गत आता है, मध्यम चरित श्री कुल के अंतर्गत आता है और उत्तम चरित सारस्वत कुल के अंतर्गत आता है. हम सभी जानते हैं की साधना जगत में इस त्रिशक्ति का बीज मन्त्र **‘ ह्रीं क्लीं’** है.

बहुत कम साधकों को पता होगा की दुर्गासप्तशती के प्रत्येक अध्याय के पूर्व ९-९ माला नवार्ण मन्त्र का जप कर लेने से कितनी सहजता प्राप्त हो जाती है. परन्तु दुर्गासप्तशती के पथ के पूर्व बटुक भैरव मंत्र और स्तोत्र का पाठ आपकी साधना में पूर्ण अनुकूलता ला देता है.

और यदि हमारे मन में त्रयी शक्तियों में से किसी विशेष शक्ति के प्रत्यक्षीकरण का भाव हो तब ऐसे में इसके लिए इन शक्तियों से सम्बंधित नवार्ण मंत्र का ही विशेष विधि से जप किया जाना चाहिए. प्रत्येक शक्ति का अपना अपना नवार्ण मंत्र है जो विशेष बीजों से युक्त है. और इन शक्तियों का समन्वित नवार्ण मन्त्र तो हम सभी जानते ही हैं.

‘ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे’ ये मूल नवार्ण मंत्र है .

‘ॐक्रीं ऐं महाकाल्यै विच्चे’ - काली कुल या प्रथम चरित का नवार्ण मन्त्र है .

‘ॐश्रीं ह्रीं महालक्ष्म्यै विच्चे’ - श्री कुल या माध्यम चरित का नवार्ण मन्त्र है .

‘ॐऐं क्लीं सरस्वत्यै विच्चे’ – सारस्वत कुल या उत्तम चरित का नवार्ण मन्त्र है.

और यहाँ प्रश्न ये उठता है की इन नवार्ण मन्त्रों के पहले ॐका प्रयोग क्यूँ किया गया है जबकि सामान्यतः नवार्ण मन्त्र के पहले ॐलगाने का विधान नहीं है,तो वो मात्र इसी कारण की कुल विशेष के नवार्ण मंत्र ॐलगाने के बाद ही ९ वर्ण के हो पाते हैं. इनके माध्यम से ना सिर्फ साधक अपने अभीष्ट को प्राप्त कर सकता है अपितु इन मूल शक्तियों का भी दर्शन कर सकता है.

साधना विधि-

मंगलवार की मध्य रात्रि में

काली साधना और सिद्धि हेतु –नीम के वृक्ष के नीचे काले वस्त्र धारण करके

महालक्ष्मी की सिद्धि के लिए विल्व वृक्ष के नीचे लाल वस्त्र धारण करके

भगवती सरस्वती के लिए अशोक वृक्ष के नीचे श्वेत वस्त्र धारण करके बैठकर साधना करना चाहिए .

साधना के पूर्व सम्बंधित वस्त्र धारण कर सम्बंधित रंग के आसन पर बैठ कर सदगुरुदेव और बटुक भैरव का पूजन संपन्न करना अनिवार्य है, उडद के बड़े और दही का भोग लगाना चाहिए. और **'भं भैरवाय नमः'** मन्त्र की ३ माला संपन्न करना चाहिए.

तत्पश्चात मूलाधार चक्र के स्वामी भगवान गणपति का पूजन अर्चन करना चाहिए और **'गं गणपतये नमः'** मन्त्र की ४ माला जप करनी चाहिए. इसके साथ ही **'ॐडाकिन्यै नमः'** मंत्र का २१ बार उच्चारण कर भूमि पर बायीं तरफ एक सुपारी स्थापित कर दे.ऐसा करना अनिवार्य होता है. इसके बाद सामने बाजोट पर सम्बंधित रंग का वस्त्र बिछा कर एक अधो मुखी त्रिकोण का निर्माण करे, ये त्रिकोण त्रिगंध से निर्मित होना चाहिए. त्रिकोण निर्माण करते समय सम्बंधित देवी का नवार्ण मन्त्र जप करते रहना चाहिए. उसके बाद देवी का मूल ध्यान मन्त्र ११ बार उच्चारित करना चाहिए-

'नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।

नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मृताम॥'

त्रिकोण के मध्य में जहाँ बिंदु अंकित है वहाँ काले तिलों की ढेरी बनाकर उस पर गौघृत का दीपक प्रज्वलित कर दे. उस दीपक का तथा त्रिकोण की तीनों भुजाओं का पूजन मूल नवार्ण मन्त्र से करे, अर्थात पुष्प,अक्षत,तिलक,धुप,दीप और नैविद्य समर्पित करते समय **'ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अक्षत समर्पयामी' धूपं समर्पयामी** आदि उच्चारित करे.

तत्पश्चात मूंगा माला से सम्बंधित देवी का नवार्ण मंत्र २७ माला जप करके **'ऐं ह्रीं क्लीं क्लीं ह्रीं ऐं'** मन्त्र की ५१ माला जप करे फिर पुनः से सम्बंधित देवी का नवार्ण मंत्र २७ माला जप करे. इस प्रकार तीन दिनों तक करना है. जप के समय दृष्टि दीपक की लौ पर केंद्रित होनी चाहिए.

अंतिम दिवस आपको सम्बंधित देवी के जाज्वल्यमान दर्शन होते ही हैं तथा अन्य कार्यों में आ रही बाधा भी समाप्त हो जाती है. ये हमारेजीवन का सौभाग्य है की सदगुरुदेव के आशीर्वाद से ऐसी गोपनीय साधना प्रकाश में आई है. मैंने स्वयं इस साधना के द्वारा उस स्थिति को देखा और समझा है परखा है ,तभी इतनी निश्चितता से आप लोगो के सम्मुख इसे रखने का साहस कर रहा हूँ.

TRAI NAVAARN SAADHNA

Sadhna of Shakti is considered as Tricone (triangle) sadhna in its true sense as Adhomukhi Tricone is the symbol of Shakti. Durgasapatshatii is divided into three parts (charit) – first, middle and the finest one which we named as pratham, madhyam and uttam and collectively these three parts create nothing but a Tricone itself. First part falls under the category of Kaali Kula, middle one is categorized under Shri Kula and the finest one which is regarded as Uttam Chrit comes in the category of Sarasvatt Kula.

We all well aware about this fact that in sadhna field "Aing Hreeng Kleeng "is the basic Beej mantra of this Tri Shakti sadhna but there must be very few sadhaks who know that before the each chapter of Durgasapatshatii

if a person does one singe mala of Navaarn mantra than everything becomes so easy for further process but it becomes more favorable if a sadhak does Batuk Bhairav Mantra and Satotra Paath before doing Durgasapatshatii. The most important thing is that out of these Tri Shakti if one wants to have the glimpse of (prtakshhikaran) of a special one than he must go for Navaarn mantra jaap following special procedure related to that particular Shakti as every Shakti has her own Navaarn mantra which has its own special Beej mantras but the common basic Navaarn mantra of these Shakties is well known to everyone which is "Aaing Hreeng Kleeng Chamundaiy Vichche ".

Similarly "Om Kreeng Aing Mahakaalyaie Vichche" is the Navaarn mantra of Kaali Kula or the first part.

"Om Shreeng Hreeng Mahalakshmaayai Vichche" is the Navaarn mantra for Shri Kula or the middle part.

"Om Aing Kleeng Sarasvatyaie Vichche" is the Navaarn mantra for the Uttam Chrit. Now the question is that why the word "Om" has been used before each and every Navaarn mantra of special sect (Kula) as there is no such rule or definition regarded this use is exits so my dear its answer is that only by using this sound that is "Om" we can relate any particular mantra with a particular sect.

With the help of these mantra sadhak not only achieved his desired destination but he can also see the basic Tri Shakti of these mantras. To get success in the sadhna of this Tri Shakti one should start it during the middle night of Tuesday and if he wants to get success in Kaali sadhna than he should wear black clothes and start his sadhna by sitting under the shade of Neem tree.

Similarly for Mahalakshmi sadhna he need to wear red clothes and carry on the procedure under Vilv Tree

And for success in Bhagwati Saraswati sadhna he should wear white clothes and does his sadhna under Ashok Tree. Before doing sadhna it is essential to wear related color clothes and sadhak should sit on related color's altar of that sadhna and as he sit on the altar it must to get the blessings of Sadgurudev and Batuk Bhairav and to offer them Uradd ke Bade and Curd (dahi) as bhog with the 3 mala of following mantra "Bham Bhairavaay Namah" than in order to take the blessings of the King of Mooladhaar Chakra that is Lord Ganpati one need to do pooja of Ganpati ji with the 4 mala of mantra " Gam Ganpataye Namah" along with this by chanting the mantra " Om Dakinyai Namah" 21 times put (sthapit) a supari on the earth on your left side as it is must to do.

After all these on the Bajout in front of you spread sadhna's related color cloth and make a Adhomukhi Tricone on it always remember this Tricone should be built up with Trigandh and while making the Tricone don't forget to enchant the Navaarn mantra of related Devi (deity). After that for the 11 times one should speak out the basic dhyaan mantra of Deity (Devi) which is

"Namoh Devaay Mahadevaay Shivaay Sattath Namah: 1

Namah: Prakrityaay Bhadraay Niyataah: Pranntaah: Smertaam 11'

In the middle of Tricone where Bindu has been made at that place make a heap of black till (kale tillon ka dher) and then on it lit a Deepak that too with cow's butter (goughrit). Do the pooja of that Deepak and Tricone's three side arms (uski teeno bhujaaye) with basic Navaarn mantra and while offering flowers (pushp), rice (akshht), sacred mark (tilak), incense (dhoop) and holy food (navaidhy) enchant the mantra "Aing Hreeng Kleeng Chamundaiy Vichche Akshht Smarpyaami' Dhoop Smarpyaami.

When all this get done then take a Coral Rosary (moonga mala) and speak out the Navaarn mantra of related Devi 21 times after this enchant this mantra " **Aing Hreeng Kleeng Kleeng Hreeng Aing**" for 51 times then again complete the circle by doing Devi's Navaarn mantra for 21 times. Carry on this process for continuous three days and while enchanting mantra one's eye should be centered on the light of lamp (Deepak) as on the third day it is damm sure that one will have the sparkling glimpse of related deity but all the obstacles and hindrances from his way also get removed. It is our good luck that due to the divine blessings of Sadgurudev we have the honor to have the knowledge of this secret sadhna and I too have judged and tested it on my personal experience that's why I am here referring it in front of you people with full faith that it is result oriented.

Poorna Kaameshvari Som Shakti Prayog

अद्भुत रूप सौन्दर्य दिला सकने में समर्थ, सर्वथा गोपनीय साधना

तांत्रिक साधना का लक्ष्य भोग और मोक्ष दोनों की ही प्राप्ति करना होता है . जीवन के प्रत्येक उद्देश्य की प्राप्ति तंत्र से संभव है, मुझे याद है की जब मैं १५-१६ साल का था तब मैं जामुन के पेड़ से लगभग २७-२८ फिट ऊँचाई से पीठ के बल नीचे पत्थरों पर गिरपड़ा था ,तब ना ही मैं चलने की हालत में था और ना ही उठने –बैठने की हालत में. क्रिकेट के सलेक्सन होने वाले थे.और उसके पहले ये हालत थी की मैं बहुत ही धीमी गति से स्पिन गेंद डाला करता था, और बल्लेबाजी भी बहुत ही धीमी गति से किया करता था, तब भी मेरे कंधे और पीठ कमजोर ही थे, और गिरने के बाद तो हालत ये हो गयी थी की जो प्रकृति वश शारीरिक उत्तेजना होती थी, वो भी समाप्त ही हो गयी थी.

मेरी माँ बहुत ही घबरा गयी थी, मेरी ये हालत ४-५ महीने तक रही और यथा संभव जितने भी डॉक्टरों को दिखाया जा सकता था. सभी को दिखाया गया ,और वे सभी ये कहते रहे की शायद अब मैं ठीक तरीके से चल भी नहीं पाऊँगा, विवाह इत्यादि कार्य के लिए तो मेरे परिवार को भूल ही जाना चाहिए.

मैं उदास बिस्तर पर पड़ा रहता, माँ रोज पीठ की मालिश करती जो की बुरी तरह नीली हो गयी थी. तभी मैंने सदगुरुदेव से मानसिक रूप से लगातार प्रार्थना की ,और अचानक सदगुरुदेव का पत्र घर पर डाकिया दे गया. पत्र में शीघ्र अतिशीघ्र दिल्ली गुरुधाम पहुँचने के लिए कहा गया था, और लिखा था की ये मेरा आदेश है.

जहाँ तक मुझे ध्यान था की उस समय कोई साधना शिविर भी नहीं था, तब भी अत्यधिक प्रयास करके कष्ट को पीते हुए जैसे तैसे मैं दिल्ली पहुच गया. और जाते ही ढेर हो गया , सदगुरुदेव ने मुझे उठाकर अंदर बुलवाया . और मुझे अपनी तरफ देखने को कहा, मैं जब उनकी तरफ देख रहा था, शरीर में मजबूती का अनुभव होने लगा था, उसके बाद सदगुरुदेव ने मुझे **पूर्ण काम बीज युक्त कामेश्वरी सोम शक्ति साधना** विधि समझाई ,और घर जाने के लिए आज्ञा दी. घर आकर , पूर्णिमा से ३ रात्रि तक नित्य ४ घंटे मैंने नदी में सीने तक जल के भीतर खड़े होकर इस साधना को संपन्न किया. मुझे मात्र २०-२२ दिन के भीतर ही अत्यधिक परिवर्तन अनुभव हुआ, और ४ महीने बाद जब सलेक्सन हुए ,तब तक तो इतने हालात परिवर्तित हो गए थे की,

आक्रामक बल्लेबाज और तेज गेदबाज की हैसियत से मैं आगे के तीन साल तक नेशनल लेबल पर चयनित होता रहा और उसके बाद यूनिवर्सिटी की और से भी २ साल तक खेलता रहा.और जिस टीम की तरफ से मैंने खेला ,मेरा प्रदर्शन बेहतर से बेहतर रहा. साधना जगत में उसी साधना के बाद मैंने **"श्यामा साधना "** जैसी साधना को भी सफलता के साथ संपन्न की. और एक उच्च कोटि का साधक इस साधना की विशेषता और महत्व से कदापि अनभिज्ञ नहीं होगा. इस साधना में पौरुषता की चरम परख होती ही है.

बाद के वर्षों में जब मैंने सदगुरुदेव से उस साधना का महत्व पूछ ,तब उन्होंने बताया था की मात्र पुरुष ही नहीं अपितु इस साधना के माध्यम से स्त्री भी अपने सम्पूर्ण सौंदर्य और नारीत्व की प्राप्ति कर सकती हैं. मैंने सौंदर्या माँ से भी यही सुना था की उन्होंने इसी साधना के माध्यम से अपूर्व सौंदर्य पाया था और कई अप्सराओं और योगिनियों को सिद्ध किया था.

इस साधना में कोई विनियोग या न्यास नहीं होता है, मात्र मंत्र जप और समय का महत्त्व है,मात्र ३ दिन की ये साधना है, जल में निवस्त्र या एक वस्त्र पहन कर गले तक पानी में खड़ा होकर, पञ्च मुखी रुद्राक्ष को हाथ में लेकर रात्रि में ११ बजे के बाद चंद्रमा की और देखकर मंत्र का ३ घंटे तक जप किया जाता है. पूर्णिमा के बाद के दो दिन आकाश की ओर मुह करना चाहिए. अंतिम दिवस जप के बाद रुद्राक्ष को जल में ही प्रवाहित कर देना चाहिए. आपको स्वतः ही एक विलक्षण प्रकाश आपमें प्रविष्ट होता हुआ लगेगा,और निकट भविष्य में सौंदर्य पक्ष सम्बंधित सभी समस्याओं का समाधान तो होता ही है.

मन्त्र-

ॐक्लीं क्लीं क्लीं कामेश्वरी सह सोम शक्ति पूर्णमदः पूर्णमिदं क्लीं क्लीं क्लीं कामदेवाय नमः

Poorna Kaameshvari Som Shakti Prayog

Well the ambition of any Tantrik Sadhna is earn Bhog i.e. Pleasure and Moksh i.e Deliverance. Life's each target can be achieve by Tantra. I remember when i was 15-16 yr old, i fell down from the Eugenia tree around 27-28 feet hieght. At that time nor i was able to walk niether sitting. And it was selection time of Cricket. before that the condition was like i used to spin the ball at very very low speed Even though Bating so. but the Shoulder and waist pain was the same. After felling incident the remaining enthusiasm was also fluctuate due to pain n all.

My mom was so scared, as this condition prolonged for next 4-5 months and every possible doors of doctors were already knocked out. Well every one used to repeat only same sentence i.e. It might not be possible for him walk in future and just forget about his marriage plans..

In depressed manner i used to ly down on bed. mom used to massage my back which became jet blue in color. Same time i continously prayed to Sadgurudev mentally. Then suddenly one letter of Sadgurudev posted by postmaster. In letter it was written -" Reach gurudham promptly and this is my order."

And as far as i remember no shivirs there were conducted till the time. Then with hard efforts and i swallowed my pain and reached Delhi Gurudham. And the moment i reached i fainted. Then sadgurudev called me inside and told me look in his eyes. Oh my God the moment i started looking at him i filled up with internal energy. Thereafter, he gave me the Sadhna called **" Purna kaam beej Yukt Kaameshvari som shakti sadhna" and make me understood the sadhna procedure. Then he permitted me to go back home. On full moon i started this three day sadhna procedure in lake water by standing and covering myself till chest level for 4 hours. i accomplished it successfully. In next 20-22 days i drastically felt the change.**

when selections happened after 4 months time till the time scenario was completely changed that as fastest and aggressive bowler i was ranked in first three and represented in national level for next 3 years. Not only that much, i was selected from university to play cricket and played for 2 years.

And whichever team i represented i my performance graph was always in upward direction. In Sadhna Field after doing that sadhna i continued with next one "Shyama Sadhana" and successfully accomplished it. Well i must say that any high level of sadhak cannot deny the significance and specifications about this sadhna. Its a test about manliness.

In post years when i asked Sadgurudev about specification of this sadhna, then he said " Not only man can earn manliness but woman can also earn the beauty and womenliness in their life. I also heard the same from Soundarya Maa, that from the same sadhna she have earned the flawless beauty and siddh various Yoginis and Apsaras.

The best part in this sadhna is that there are no Viniyog and Nyas i mean starting procedures. Only Mantra Jap and time significance stands.

This sadhna is of only three days. Either in naked for or rapping only one cloth one have to stand in lake water till chest level and holding Panchmukhi Rudraksh in hand. Time will be 11 pm in night. By stairing Moon you have do mantra chanting for 3 hours continously. After full moon day next 2 days u have look sky and continue the chanting. On last day after mantra Jap floe away the rudraksh in water. You only will feel the unique light flow in you and in coming time you will find all beauty related problems are dissappeared.

Mantra - **Om kleem kleem kaameshvari sah som shakti poornamadah poornamidam kleem kleem kleem kaamdevaay namah**

Pratyaksh Pret shakti Manokaamna Poorti Saadhana

इतर योनियों से सहयोग प्राप्त करने की गोपनीय साधना

ये प्रयोग सदगुरुदेव ने संपन्न करवाया था, और मैंने खुद इसका लाभ उठाया था, बाद के वर्षों में मैं इसका अभ्यास लगातार नहीं रख पाया ,इसलिए ये सिद्धि धीरे धीरे लोप होती गयी. और उन्होंने ये स्पष्ट बताया था की भूत-प्रेत साधना जीवन का सौभाग्य ही होती है, ये हानिकारक नहीं होती है, अपितु अपनी मुक्ति के लिए बैचेन आत्माएं हैं ,जो साधक या मनुष्य की सहायता कर शीघ्र अतिशीघ्र मुक्त होना चाहती हैं.ये मनुष्यों की भांति विश्वास घात नहीं करते हैं. अपितु पूर्ण वफ़ादारी निभाते हैं.

उन्होंने **वातालू नामक प्रेत शक्ति** की साधना का विधान समझाया था. जिसे कई गुरु भाइयों समेत मैंने भी किया था. उसी साधना के गूढ़ रहस्यों को मैं आप सभी के सामने रख रहा हूँ,जिससे आप भी इस प्रयोग की विश्वसनीयता को परख सकते हैं.

ये साधना अमावस्या की अर्धरात्रि से प्रारंभ होकर आगे के ३ दिनों तक होती है. दक्षिण दिशा की ओर मुह करके वीरासन में बैठना होता है, वस्त्र व आसन काला होता है.सामने एक पान के पत्ते पर काजल से वातालू लिख कर उस पर काजल की डब्बी और कपूर का टुकड़ा रख कर काली हकीक माला से १०१ माला नित्य करना होता है . घर के एकांत कक्ष में ये साधना की जा सकती है,

जहा साधना के ३ दिवसों तक किसी का भी प्रवेश निषेध रहता है.दूध का भोग चढ़ाया जाता है. मंत्र जप के बाद दो दिन तक खुद उस दूध को पीना है और तीसरे दिन खुद वातालू उस दूध को ग्रहण कर लेता है.३ दिन वो प्रत्यक्ष होता है. मंत्र जप के पहले तीन बार उसका नाम लेना होता है और मन्त्र जप प्रारंभ करना होता है.मन्त्र जप के मध्य चाहे जैसी स्थिति बने आप को नहीं बोलना है,क्यूंकि वो शक्ति किसी भी रूप में आपकी साधना खंडित करने की कोशिश करती ही है. जब भी भविष्य में उसे बुलाना हो मात्र ११ बार मंत्र का उच्चारण कर के उसका नाम लें ,वो हाजिर हो जायेगा और आपका कार्य सम्पादित कर देगा.

मंत्र-

क्रीं क्रीं क्रीं वातालू भूतेभ्यो आगच्छ वश्य आज्ञा पाले फट्॥

इतर योनी साधना के जिज्ञासु साधक इस साधना को अवश्य करके देखे. निश्चय ही अनूकुल परिणाम प्राप्त होंगे.

Pratyaksh Pret shakti ManokaaMna Poorti saadhna

This experiment was done under Sadgurudev's guidence and i myself experienced the benifits of this sadhna. But in later years i couldn't practiced it continously. Thats the reason this siddhi dissapeared slowly. He told us that Bhut-Pret are boons for sadhna life. These are not harmful. Rather they are curious spirits roaming for their freedom who really wants to help haman being or sadhak for their upliftment. Hmmm but they dont ditch as humand do so. Rather they are very loyal to us.

He explained us a sadhna called **"Vaataalu Namak Pret Shakti Sadhna "** Which is performed by various gurubrothers of us along with me. The secrets of those sadhna i am going to open here infront you via which you can also inspect the authenticity of this sadhna.

Start this sadhna in mid of dark night of any lunar month for three consecutive days. You have to be seated in Veeraasan facing south direction. Clothes and asan should be black colored. Place a betel leaf and by lampblack write Vatalu on it. Then keep that lampblack box and camphor piece on it. Then chant the 101 rosaries of below mantra on daily basis. One should do this sadhna in silent, exclusive room where no one else should enter apart from you. Milk is offered as sweet.

After mantra jap you only have to drink that milk for two days and on 3rd day **Vaataalu** himself comes and drink that milk. All three days he appears. Before mantra jap for 3 time you have pronounce his name and then starts the mantra Jap. Between Mantra Jap what may come but you are not supposed to stop or to say anything. Because that power can spoils your sadhna in any form. Whenever in future if you want to call him then chant the mantra for 11 times and his name, he will appear infront you to finish any work which you want to delegate.

Mantra - **kreem kreem kreem Vaataalu Bhutebhyo Aaagachh Vashya Aagyaa Paalay phat II**

The seekers of Itar Yoni sadhna must do this sadhna.definitely they will get positive results.

Dhoomavati kalp sadhana

शत्रु बाधा निवारक अद्भुत प्रभाव दायक साधना

माँ धूमावती के बारे मे जितना भी कहा जाए कम ही है, सृष्टि के विपरीत क्रम की वे देवी है. ब्रम्हांड का मुख्य नियम ये रहता है की शिव बाह्य और शक्ति आतंरिक होती है. शरीर मे प्रकृति निहित है, मतलब की शिव मे शक्ति स्थापित रहती है लेकिन धूमावती ने अपने अंदर शिव को धारण किया हुआ है, जिससे सृष्टि का एक पूरा क्रम ही विपरीत है. इसी क्रम मे वे अलक्ष्मी है, अविद्या है तथा दुर्भाग्य की देवी है. स्वेत वस्त्र धारण करने पर भी उनका मुख्य रूप तम से उत्प्रेरित है जिसका अर्थ भी यही विपरीत क्रम ही है. प्रकाश शुभ्र होता है जिसका विशुद्ध रूप अपने आप मे अंधकार मे समां जाता है.

काले रंग मे सफ़ेद रंग मिला दिया जाये तो भी वह अपनी प्रकृति नहीं छोड़े गा, लेकिन शुभ्र मे ज़रा सा भी काला रंग मिलाने पर उसमे दाग लग ही जाता है प्रसारण की गति तीव्र होती है, लेकिन धूमावती के सन्दर्भ मे ये तथ्य भी विपरीत है, इसी लिए वे स्वेत वस्त्र को धारीत किए हुए है. यु ये भी कहा जा सकता है की जो भी विपरीत है वही धूमावती है.

इसी लिए जीवन के सारे अभाव दुःख कष्ट पीड़ा विषाद सब पर इनका ही प्रभाव रहता है. लेकिन मूलतः यह माँ का ही स्वरुप है इस लिए अपने तम गुण को अंदर रखते हुए बाह्य रूप से यह सत् और रज से साधक का कल्याण करती है. शत्रु का अर्थ है की वो जो जीवन मे बाधक हो, हमारी सभी बाधा और परेशानी चाहे वह मनुष्य रूप मे हो या किसी और रूप मे वे सभी प्रायः शत्रु ही है. माँ इनकी अधिष्ठात्री होने के कारण इसका निराकरण अत्यंत तीव्रता से हो जाता है, और वो विपरती क्रम हरण कर, मूल क्रम को स्थापित कर देती है.

यह साधना साधक बुधवार की मध्यरात्रि से शुरू करे.

दिशा दक्षिण, वस्त्र व् आसान काले रंग का रहे, काले हकीक की माला का उपयोग करे.

अपने सामने देवी का चित्र स्थापित कर तेल का दीप प्रज्वल्लित करे. और मानस पूजन सम्प्पन करे

इसके बाद साधक अपने हाथ मे जल लेके सामान्य संकल्प ले की अपने सर्व बाधा एवं ज्ञात अज्ञात शत्रु से विजय प्राप्त करने के लिए साधना मे प्रवृत हो रहा हू, माँ मुझे कृपा प्रदान करे

इसके बाद साधक निम्न मंत्र की ३१ माला का जाप करे

धूं बाधा निवारिणी धुम्रेश्वरी फट्

उसके बाद जाप देवी को समर्पित करे

यह क्रम तिन दिन का है, साधक अपने आप मे ही, साधना करने के बाद अगले ही दिन से योग्य परिणामों का अनुभव करने लग जाता है.

****

Dhoomavati kalp saDhana

It is always less however we describe about mother dhoomavati, she is goddess of universe's reverse order. The main rule of universe is that shiva is outer form and shakti is inner power. Nature stays inside the body, means shakti stays inside shiva but dhoomavati have established shiva inside her, this way, there is a reverse order of the universe. In this way only she is Alakshmi, Avidhya and goddess of unfortunate nature. While covering her with white cloth she is completely based on tam nature which itself means the reverse order.

Light is pure white whose most pure form is merged in darkness. In black color if white color is mixed then too it will not leave its nature. But in reverse if black is added a bit in white then too it will leave a mark and merging speed will be boost, but in case of dhoomavati this is also reverse as it wear white cloths. This way it can also be said that whatever is reversed or against, it is dhoomavati.

Therefore on every pain sorrow depression will have her effect. But she is form of mother that is why she covers up her tam nature inside and from the outer side she bless sadhaka with sat and raj. Enemy here means the one which is deterrent obstacles; our all troubles inform of humans or in other form are all enemies. Mother is controller of the same nature that is why she can solve it in very short span of time if she is worshipped and she establish main order by removing reverse.

Sadhak should star this sadhana from middle night of Wednesday

Direction south; cloths and aasan should be black; rosary should be black hakeek.
Establish goddess's picture infront of you and light oil lamp. And do poojan mentally
After that sadhak should take water in the palm and take normal sankalp that to vanish all the troubles and to have victory over all known unknown enemies I am doing this sadhana, mother please bless.

After that sadhak should chant 31 rounds of the following mantra

Dhoom Baadhaa Nivaarini Dhumreshwari phat

After that devote the mantra chanting in goddess feet.
This is three days of process; sadhak himself will start feeling result from the very next day of completion of sadhana.

Goutra purush manokamana siddhi

अब तो मनोकामना भी आसान हैं इस प्रयोग से

जीवन मे पितृओ की महत्ता के बारे मे उल्लेख कर दिया गया है की किस प्रकार एक बीज जो की मूल होता हे उससे लगातार सर्जन की क्रिया आगे बढती जाती है और वह मूल बीज धारक की कृपा किस प्रकार सदैव बनी रहती है. इसी क्रम मे गौत्र के विषय मे भी यही कहा जाता सकता है की मुख्य ऋषियो के बीज से हमारा निर्माण हुआ है या उनका योगदान हमारे सर्जन मे रहा है इसी लिए वे हमारे मुख्य आदि पूर्वज भी कहे जाते है. इस स्थिति मे उन महापुरुषों की विशेष कृपा को प्राप्त किया जा सकता है और उनके आशीर्वाद से हमारी मनोकामनाओ की पूर्ति भी संभव है.

व्यक्ति के गौत्र आदि पुरुष के पूजन को हमारे वैदिक शास्त्रों मे कर्मकांड का आवश्यक अंग माना है इसके पीछे यही चिंतन था की हम उन सिद्ध पुरुषों की उपासना करे और उनके आशीर्वादतले अपने जीवन के अभावो को दूर कर सके और अपनी मनोकामनाओ की पूर्ति कर सके.

यहाँ पे एक बात को समजना आवश्यक है की वे महान आत्माए आज भी उतनी ही गतिशील है जितनी वे पहले हुआ करती थि. वे निरंतर कृपा को अनुकम्पा को प्रवाहित करते रहते है लेकिन हम अपने आप मे इतने उलज चुके है की अब हम अपनी परंपराओ पर ध्यान तो नही देते हे लेकिन साथ ही साथ उससे विमुख होकर खुद अपने ही जीवन को व्यर्थ मे समस्याओ से ग्रस्त रख रहे है

गौत्र के आदिपुरुषों के लिए भी तन्त्र मे विभिभन मंत्र और प्रक्रियाए प्राप्त होती है. लेकिन हर एक गौत्र के लिए अलग अलग प्रक्रियाए देना संभव नहीं है. यहाँ पर जो प्रयोग दिया जा रहा है वह प्रयोग कोई भी व्यक्ति सम्प्पन कर सकता है और गौत्र महात्माओ की कृपा प्राप्त कर सकता है.

इस साधना को किसीभी वार से शुरू किया जा सकता है, साधना के लिए ब्रम्ह मुहूर्त का समय उत्तम है

दिशा उत्तर या पूर्व रहे, माला स्फटिक की हो. वस्त्र आसान सफ़ेद रहे

अपने गौत्र के आदि पुरुष को याद कर उसका मानसिक पूजन करे. धुप व् शुद्ध घी के दीपक को प्रज्वल्लित करे. उसके बाद निम्न मंत्र की २५ माला का जाप करे.

ॐ अमुकं गौत्र पुरुषाय सर्वार्थ साफल्यम प्रणम्यामी

इसमें अमुक की जगह गौत्र का नाम लेना चाहिए. जिन्हें अपने गौत्र के बारे मे पता न हो वो वहा पर आदिपुरुषाय शब्द का उपायोग करे.इस प्रयोग को ८ दिन करना चाहिए. जिससे पितृ एवं गौत्र प्रस्सन होते है और मनोवांछित इच्छाओ की पूर्ति करते है.

****

manokamana prayog through - Goutr purusha sadhana

The importance of pitrus have already been discussed that how from one bija which is the main base from that process of the creation keeps on running and how the blessing of that main bija holder stays and affects. This way about gautra even it could be said that from the bija of those main sages we are created or there is a contribution of them in our creation that's why they are called as our main dawn ancestor and with blessings of them our wishes could be fulfilled.

Poojan of gautra's sage is belived to be very essential part of vaidik karmakanda body. The reason behind it was that we worship our ancient sages and can remove our deficiencies for haapy life under their bliss and can fulfill our wishes and desires. Here it is require understanding that those great souls are still same dynamic as they used to be.

They keep on showering their bliss and mercy but we have trapped our self so much so that we do not gives any concern for our tradition and with that being out of it we have made our lives full of troubles.

For the main aadipurusha of gautra processes and mantras could be found in tantra. But for every gautra individual mantra description here is not possible. The process given below could be done by anyone and can have bliss of gautra great souls.

This sadhana could be started from any day; best time for sadhana is early morning bramha muhurta.

Direction should be north or east. Sfatik rosary should be brought to use. Cloths and aasana should be white in colour.

By memorizing main gautra purusha do the poojan of him mentally. Light dhoop and ghee lamp. After that chant 25 rosary of following mantra.

Aum amukam gautr purushay sarvaarth saafalyam pranamyaami

Here one should take name of gautra at the place of amukam in mantra. Those who are not aware about their gotra can use the word 'Aadi Purushaay'

This process should be done for 8 days. This results in bliss of pitru and gautra and fulfilment of wishes or desires of mind

Soot Rahsyam Part- 7

सप्त ऋषि पूंजीभूत तत्व शक्ति साधना

बाह्य जगत की प्रतिकृति ये मानव शरीर भी एक ब्रम्हांड ही है और तदनुसार मानव शरीर में भी उत्तर और दक्षिण दो ध्रुव विराजमान हैं.जिनमे विद्युत चुम्बकत्व की धनात्मक और ऋणात्मक शक्ति प्रवाहित रहती है, मष्तिष्क को उत्तरी ध्रुव और मूलाधार को दक्षिण ध्रुव माना गया है. इन्ही के मध्य मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूर, अनाहत, विशुद्ध ,आज्ञा और सहस्रार चक्र हैं. अर्थात मूलाधार यदि एक छोर पर स्थित है तो सहस्रार दूसरे छोर पर स्थित है. और उस दिव्य शक्ति का आदान प्रदान मेरु दंड में स्थित सुषुम्ना सूत्र के द्वारा होता है.

सुषुम्ना पथ ही इन शक्तियों को परिष्कृत कर दोनों छोरो पर शक्ति का परस्पर आदान प्रदान करता है. जिन चक्रों की हमने बात की है .वे ७ चक्र वस्तुतः सप्त ऋषियों के प्रतिनिधि हैं.

अर्थात इन चक्रों में इन ऋषियों का ही तव प्रकाशित होता है, बाह्य दृष्टि से जो ऋषि हैं, वास्तव में वो सात शक्तियां और सात तत्व भाव हैं, जो जीवन के विभिन्न क्रिया कलापों को सुचारू रूप से संपन्न करने की क्षमता प्रदान करते हैं. और ये भाव ,ये तत्व सूर्या से ही प्राण को ग्रहण करते हैं ,तभी उनमे जीवन की उपस्थिति हो पाती है.

अब ये साधक के ऊपर निर्भर करता है की वो उपरोक्त सप्त शक्तियों का (जो की सूर्य से ही प्राणों का शोषण करते हैं और तदनुरूप साधक को दैदिप्यता और तेजस प्रदान करते) कितना तीव्र प्रयोग कर पाता है. सबसे पहले ये समझ लेते हैं की वास्तव में ये सप्तर्षि हैं कौन कौन से और ये किन शक्तियों का प्रतिनिधित्व करते हैं.

वशिष्ट - अग्नि तत्व – विवेक शक्ति

विश्वामित्र - आकाश तत्व – इच्छा शक्ति

भारद्वाज - चेतन तत्व – संकल्प शक्ति

गौतम - वायु तत्व – विचार शक्ति

जमदग्नि - तेज तत्व – क्रिया शक्ति

अत्री – जल तत्व – वाणी शक्ति

कश्यप - पृथ्वी तत्व – उत्थान शक्ति

वास्तव में ये सप्तर्षि ही मानव के वे सात शरीर या ब्रम्हांड के वे सात लोक हैं, जिन्हें भू,भुवः, स्वः मनः, जनः,तपः और सत्य लोक कहा गया है . ये मानव शरीर में उपस्थित वो सात सम्भावनाये हैं की यदि इन्हें कोई चैतन्य कर ले ,फिर उसके लिए कुछ भी अप्राप्य नहीं रह जाता है. वस्तुतः मानव शरीर में उपस्थित चेतना की ये सात परते ही हैं. जो किसी भी असाध्य को साध्य कर देती हैं. और एक बात हृदयंगम करने योग्य है की यदि तंत्र का आश्रय लिया जाये तो निश्चित ही ,चेतना के इन सातो स्तर की प्राप्ति सहज हो जाती है. वस्तुतः सूर्य विज्ञानं के जिज्ञासुओं को या साधकों को इस रहस्य को आत्मसात कर सिद्ध हस्त प्राप्त करने के लिए तो पूरा एक साधना क्रम ही संपन्न करना पड़ता है. परन्तु सामान्य क्रम अपनाकर भी हम कुंडलिनी के चक्रों को ना ही सिर्फ स्पंदित कर सकते हैं, अपितु सप्त ऋषियों की चेतना का ये स्पंदन आप अपने जीवन में उतार कर अपना भाग्य स्वतः ही लिख सकते हैं, और दुर्भाग्य को पूरी तरह मिटाकर एक सौम्यता और तेजोमयता की प्राप्ति कर सकते हैं.

किसी भी रविवार से इस साधना को आप प्रारंभ कर सकते हैं और प्रातः काल स्नान कर सूर्य को जब जल समर्पित करे तो उसके पहले जल पात्र की और दृष्टि रख कर निम्न मंत्र का १०८ बार उच्चारण करे, इसके बाद ही सूर्य को **"ॐ तेजस्विताय नमः"** कहकर जल अर्पित करे या अर्घ्य चढ़ाये –

मूल मन्त्र-**ॐ सूर्य सूर्याय सूर्य सप्तर्षिभ्यो सह चैतन्य प्राप्तुम पूर्ण तेजस्विताय नमः॥**

वस्तुतः ये मन्त्र इस रूप में गुंथा हुआ है की यदि इसका उपरोक्त विधान से नित्य प्रति प्रयोग किया जाये तो निश्चित ही इसका प्रवाह आपके दुर्भाग्य को पूर्ण रूपेण दूर कर सकता है

- --

Sapt Hrishi Punjibhut tatva Shakti sadhna

Our body is facsimile of outer world and it is sort of universe in inbuilt. In accordance human body is also consists of north and south poles which are fixed.By which two type of energies flows i.e. positive and negative energy. Brain is known as northern pole and Muladhar is know as southern pole. In mid of these poles the various chakras - Mooladhar, Swadishthan, Manipur, Anaahat, Vishudhh, Aagya and Sahastrar are located.And that divine energy transits through backbone by Sushumna Sutra.

The ends of Sushumna path only examines this energies and disperse equally at both the sides. The Chakras which we have talked above, actually the 7 chakras represents seven Hrishis. It means the facts

which is presents in these chakras are exactly the same which 7 Hrishi represents.In actual sense they represents seven types of power and seven special facts which gives the capacity to pursue day today task easily and efficiently. And these Bhavs and facts absorbs energy from Sun. Then only it gets liveliness.Now this completely depends upon the sadhak that how he(who absorbs the energy from sun and in accordance gives charm and glow to sadhak) uses such divine energy in hard experiment. Now lets understand Who are these Saptrishi and what they represents?

Vishisht - Agni Tatv - Power of Subconcious Mind

Vishvamitra - Aakash Tatva - Power of Willingness

Bharadwaj - Chetan Tatva - Power of Resolution

Goutam - Vayu Tatva - Power of Thinking

Jamadagni - Tej Tatva - Active Energy

Atri - Jal Tatva - Power of Speech

Kashyap - Prithvi Tatva - Power of Progressiveness

Now I must tell you the very interesting fact i.e. in actuall sense these Saptarishis only are seven bodies of human or the seven sphere(lokas) of universe. To whom we name as Bhu, Bruva, Swaha, Manah, Janah, Tapah, and Satya lokas. They are the seven active layers of human body which can convert impossible into possible. And one thing which should be embibe, if we follow the Tantra Path then it becomes very easy to active all these seven bodies. Well the followers of Sun Science have to follow the whole path of sadhna to embibe such knowledge. But here, merely by following some simple steps not only we can active all chakras but also accomplish the essence of these Saptarishis in your own life and can write your own destiny. Even you can rub ur misfortune and filled ur life with irradiating strength.

On any Sunday you can start this Sadhna. Take bath in early morning and while offering water to Sun, chant the below mantra concentrating on the water bowl for 108 times, Thereafter offer that water to sun and pronounce the mantra **"Tejasvitaaya Namah".**

Original Mantra - **Om Surya Suryaay surya Saptarishibhyo Saha Chaitanya Praptum Purna tejasvitaay Namah**

Actually this manta is strunged if you successfuly follow the above path and instruction, definitely all unauspisciousness and misfortune will disappear from ur life.

SWARN RAHSYAM -7

दुर्लभ परन्तु अचूक स्वर्ण निर्माण प्रयोग

तंत्र शास्त्र के रस तंत्र शाखा में **स्वर्ण लक्ष्मी** की साधना का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है और यदि इस मंत्र का पूर्ण विधान से निर्मित **विशुद्ध संस्कारित पारद शिवलिंग** के सामने २१ दिनों में ५४ हजार मन्त्र जप कर लिया जाये तो स्वर्ण निर्माण की क्रिया में शीघ्र सफलता मिल जाती है, ऐसा मुझे सदगुरुदेव के सन्यासी शिष्य राघव दास बाबा जी ने बताया था.समृद्ध होना हमारा अधिकार है और रस शास्त्र के माध्यम से ऐश्वर्य प्राप्त किया जा सकता है.इसमें मन्त्र योग तथा क्रिया विशेष का योग करना पड़ता है. प्रत्येक क्रिया की सफलता के पीछे मन्त्र विशेष की शक्ति कार्य करती है. ऐसा नहीं है की किसी भी रसायन सिद्धि मन्त्र से कोई भी रस कार्य को सफल कर दिया जाये, हाँ ये अलग बात है की सद्गुरु प्रसन्न होकर मास्टर चाबी ही आपको दे दे, परन्तु वो उनकी प्रसन्नता का विषय है. नीचे जो २ प्रयोग दिए गए हैं वे स्वर्ण लक्ष्मी मन्त्र से सम्बंधित ही हैं, यदि इन कीमिया के प्रयोगों को न करे तब भी नित्य प्रति इस मन्त्र की एक माला आर्थिक अनुकूलता और धन की प्राप्ति साधक को करवाती ही है.

मन्त्र कमलगट्टे की माला या पारद माला से जप होना चाहिए.

मन्त्र-

ॐ ह्रीं महालक्ष्मी आबद्ध आबद्ध मम गृहे स्थापय स्थापय स्वर्ण सिद्धिम् देहि देहि नमः॥

मन्त्र जप के बाद साधक या रस शास्त्र के जिज्ञासुओं को निम्न प्रयोग करके अवश्य देखना चाहिए, इन प्रयोगों को मैंने राघवदास बाबा जी को सफलता पूर्वक करते देखा है, और एक बात मैंने ध्यान दी थी की वे ,पदार्थ का रूपांतरण करते समय इस मंत्र का स्फुट स्वर में उच्चारण किया करते थे और स्वच्छ वस्त्र धारण करके ही ये प्रयोग ,साफ़ जगह पर किये जाते हैं.

१. २५ ग्राम शुद्ध नीले थोथे को श्वेत आक के आधा पाँव दूध से खरल करके उस कज्जली में शुद्ध सीसा १० ग्राम मिला कर सम्पुट बनाकर २० किलो कंडों की अग्नि देने से भस्म तैयार हो जाती है. १० ग्राम रजत को गलाकर उसमे १ रत्ती भस्म डालने पर स्वर्ण की प्राप्ति होती है. स्वर्ण लक्ष्मी मन्त्र के माध्यम से भस्म स्वर्ण बीज से यौगित हो कर चाँदी में स्वर्ण की उत्पत्ति कर देती है.

२. शुद्ध जस्ता का बुरादा और शुद्ध पारद १-१ तोले को लेकर मंत्र जप करते हुए जंगली गोभी के रस में २४ घंटे तक घोंटे,उसके बाद उसे सम्पुट बनाकर ८ तोले सूत से लपेटकर ३ किलो बकरी की मेंगनी में रखकर आग लगा दे .आग बंद वायु में लगाना है, ना की खुले स्थान पर, स्वांग शीतल होने पर जो भस्म मिलेगी , वो चांदी और शुद्ध ताम्बा , दोनों का रूपांतरण स्वर्ण में कर देती है.

---

rare but satik experniment form gold making

In Tantra Shastra, in the branch of Ras Shastra the Swarna Lakshmi Sadhna keeps unique significance in it. and if this mantra is done with whole procedure of before Vishudhh Sanskarit Paaradh Shivling in 21 days completes the 54 thousands mantra jap then you get success in gold making process very soon. As this was being told me by Sadgurudevji's sanyasi disciple Shree Raghav Das babaji. Becoming wealthy is our birth right.And by Ras Shastra we can achieve it. See, in this the balance of mantra yog and kriga yog is needed.

At success of each level, a specific mantra works. It is not like that by any rasayan siddhi mantra u can accomplish any level. Oh yaa that totally different part if sadgurudev get happy and give u the main key. But thats the subject of his happiness. Isnt it!!.... well below give two experiments are related with swarna lakshmi mantra. If you do not perform the whole procedure but only do the one mala on daily basis of the below mantra, you will get positivty in Financial matters and generates wealth for you.

Mantra should be done by Kamalgatta mala or Parad mala.

Mantra - **Om hreem mahalakshmi Aabaddhh Aabaddhh mam gruhe sthapay sthapay swarna siddhim dehi dehi namah**

After doing mantra jap sadhak or seeker of ras shastra should do this experiment necessarily. I have seen all these experiments performing raghav Das Babji successfully. And one thing which i noticed was while converting substance he chanted the mantra in bursting sound with clean cloths at clean place.

1. 25 gms blue copper sulphat should be mixed in 250ml White AAK milk and in that kajjali mix the pure lead 10gms and mixed it properly. after giving flames to 20 kg cow dung cakes converts into ashes. Now melt 10 gm silver and mix 1 ratti ash.you will get gold in result. Via Swarna Laksmi mantra and getting together with ashes the silver gets converts into gold.

2. take pure zink powder and pure mercury in 1-1 tola, while mantra chanting just grind it in wild califlower juice for 24 hours. then make a round ball of it and rapp up in 8 tala sut , 3 kg goat's mengni and then fire it. fire it closed air not it open space, after getting cold whatever ash will find would be pure silver or copper and coverts both into gold.

EFFECTIVE SARAL LAKSHMI PRAYOG

अब इसे एक बार तो करके देखिये

लक्ष्मी के बिना जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती हैं , सारे जीवन का प्रमुख आधार स्तम्भ हैं आज के जीवन में धन लक्ष्मी का , भले ही जीवन में लक्ष्मी के अनेको रूप हो , पर ठीक इसी तरह अनेको साधनाए हैं एक से एक उच्च कोटि की , जिनको पाने के लिए उच्च योगी ही नहीं बल्कि ब्रह्म ऋषियों ने भी खोज की , ऐसी अनेको साधनाए फिर वह चाहे "लक्ष्मी आबद्ध साधना" हो या "स्वर्ण प्रिया लक्ष्मी साधना" हो या "स्वर्ण खप्पर साधना" या फिर "हीरक खप्पर साधना" हो , सभी तो एक से एक हैं , पर इस स्तम्भ के अंतर गत हम वही साधना देते हैं जो आपके लिए बहुत ही आसान तो हो पर हो वह बहुत ही प्रभाव दायक .

एक ऐसी ही सरल प्रयोग हैं जिसको अनेको उच्च कोटि के तांत्रिको ने विद्वानों ने बहुत ही प्रशंशा की हैं वह हैं एक छोटा सा स्त्रोत जिसे आपको जितना भी संभव हो सुबह शाम तो करना ही हैं कोई भी नियम ऐसे बिशेष नहीं हैं पर यदि स्त्रोत पाठ के नियम आप पालन करते हैं तो आप को ज्यादा लाभ होने ही सम्भावना होगी,यह सही हैं की यह स्त्रोत आसानी से उपलब्ध हैं पर यदि आप इसको करते हैं तो यह आपके जीवन की दरिद्रता हटा कर सुख संवृद्धि का एक ने अध्याय खोलने में समर्थ हैं ,आशा हैंकि आप इस स्त्रोत का महत्त्व जिसे अनेको उच्च कोटि के योगियों ने भी बताया हैं समझेंगे

त्रैलोक्य पूजिते देवी कमले विष्णु वल्लभे ।

यथा त्वमचला कृष्णे तथा भावमयि स्थिरा ॥ 1 ॥

कमला चंचला लक्ष्मी श्चला भूतिर्हरिप्रिया ।

पद्मा पद्मालया सम्प्युच्चैः श्री पद्मधारिणी ॥ 2 ॥

द्वादशैतानि नामानि लक्ष्मी संपूज्य यः पठेत ।

स्थिरा लक्ष्मी र्भवेत्तस्य पुत्रदाराभिः सः ॥ 3 ॥

॥ इति श्री दक्षिण लक्ष्मी स्तोत्रं सम्पूर्णं ||

MOST EFFECTIVE AND EASY LAKSHMI PRAYOG

Without lakshmi means financial happiness , thinking of life is useless, to days whole life is depends upon that financial aspect of goddess lakshmi though has many faces, there are more than 1008 type of lakshmi possible so as much as or more than that lakshmi sadhana are also possible, some of these sadhana are so valuable than for getting that even Brahma rishies has to searched a lot. Like that "Lakshmi Aabadh sadhana" or "Swarna Priya lakshmi sadhana" or "Heerak khappar prayog " or "Swarn khappar prayog", all theses are one of best sadhanaye . but in this column we generally give the sadhana that is very easy but have highly effective.

Here the very easy prayog about that many great scholar and great tantrik praises a lot , this is very simple strot and you have to do path /chant morning and in evening as much as you can, and there is no specific rules that you have to strictly follow but if you follow the rules for strot sadhana that we have already given in blog reading "Gajendra moksha post" will be much helpful to you. Yes this is true that this strot is very easily available but if you do that ,than this is capable enough to open a new door of financial happiness in your life. We are hoping that you all are understand the effectiveness of this highly praised strot.

trailokya poojite devi kamala vishnuvallabhe I
yathaa tvamchalaa krushNe tathaa bhavmayi sthiraa II 1 II
kamalaa chanchalaa lakshmiishchalaa bhootirharipriyaa I
padmaa padmaalayaa samyak uchai shrii padmadhaariNii II 2 II
dwaadashaitaani naamaani lakshmii sampoojya ya paThet I
sthiraa lakshmiir bhavetasya putradaaraabhi saha II 3 II
II iti shri dakshin lakshmi stotram sampoornam II

TOTKA - VIGYAN

1. पितृ दोष की निवृति के लिए जब भी आप भोजन करते हैं तो एक ग्रास पहले ही निकाल कर अलग रख दीं
2. जब विवाहिक जीवन में अशांति हो और मन मुटाव बढ़ता जा रहा हो तब गुरूवार को पीपल के पेड़ के नीचे दीप जलाये .
3. जब भी आप अपने व्यवसाय में जातेहैं या अन्य भी यदि अपने पर थोडा सा इत्र लगा ले तो बहुत अच्छा हैं क्योंकि ये सब तो शुक्र से सम्बंधित हैं और उसकी अनुकूलता से आपकी इच्छा पूर्ति होती हैं.
4. हनुमान जी को अनेक लोग राम राम लिखे पीपल के पत्ते चढाते तो आपने देखा होगा पर यदि इसे लाल चन्दन से लिखे और मंगलवार से खास कर शुक्ल पक्ष से प्राम्भ करे और ११ मंगल वार कम से कम करे तो अनेको मुसीबतों से आप को निजात मिल जाती हैं.
5. जीवन में अनेको परेशानी आने पर आपको शिव उपासना और पीपल के वृक्ष में जल अर्पित करना चाहिए पर रविवार को जल न पीपल में जल न अर्पित करे
6. काले घोड़े की नाल आपको किसी भी घोड़े वाले के यहा आसानी से मिल जा ती हैं तो उसे अपने घर के प्रवेश द्वार में लगा दे यह भी विपत्ति नाशक प्रयोग हैं.
7. मंगलऔर शनि वार के दिन यथा संभव दाढ़ी या केश कर्तन से बचना चाहिए . क्योनी ये दोनों दिन क्रूर ग्रह से सम्बंधित दिन हैं .
8. ज्योतिष ग्रन्थ तो यहाँ तक कहते हैं की आपको अपने केश तब कटवाना चाहिए जब चन्द्रमा शुक्ल पक्ष में हो मतलब (चन्द्रमा बढ़ता जा रहे हो), और नाख़ून तब कटवाना चाहिए जब चंद्रमा कृष्ण पक्ष में चल रहे हो .
9. हनुमान जी ओर सिंदूर का नाता तो सभी जानते हैं ही पर यदि आप सिंदूर गणेश जी को किसी भी शुभ महूर्त खासकर गुरु पुष्प में करे तो आपको परीक्षा में अधिक लाभ मिलेगा .
10. वही आप जानते वाहन रक्षा कर यंत्र तो हनुमान जी का ही होता हैं तो यदि आप हनुमान जीको भी सिंदूर अर्पित करते हैं तो वाहन से दुर्घटना से बचाव होता हैं

Totka vigyan

1. For to removal of pritr dosh one should offer first grass of his food to them, and keep it one side
2. When trouble and tension increases in married life between life partner then light up earthen lamp(Deepak) to nearer of papal tree,
3. When going for your workplace/shop just have some "itr " on your cloths this will prove to beneficial since ail theses things are related to planet Venus and its favor help you a lot.
4. Many people offer papal tree leaves written with "Ram ram" if you do that but write with red chandan and start with Tuesday of any shukl paksh (moon waxing period), for at least 11 Tuesday , many of your suffering will minimize.
5. When many troublesome condition surrounds you than offer water to pipal tree and shiv upasana will be very helpful to you.
6. The "nall"(metal u shape plate fix to nail of horse) of black horse , that can be easily be get from any houseman ,if fix in main entrance door of your home than this will also a problem removal .
7. Never do as for as possible shaving and nails cutting on Tuesday and on Saturday since both days a related to very malefic planet.
8. Even astrology offer you advice one should cut his/her hair when moon is waxing (shukl paksha) and nails should be cut when moon waning period(krishn paksha).
9. Every body knew that relation of sindur with hanuman ji but try to offer sindur to lord ganesh ji on any specific auspicious day , this will great help in relation to exam.

10. As you knew already that "vehicle protection yantra" is related to hanuman ji , so offer sindur to him is also a protection of any accidents from vehicle .

AYURVEDA : SOME TIPS

जीवन में कुछ बहुत सी सरल उपचार उपयोग मे लाये जा सकते हैं क्योंकि बहुत बड़ी समस्या के लिए तो उचित अयुर्वेदग्य से ही संपर्क ज्यादा अछछा रहता हैं पर यह सरल उपाय भी आपका विश्वास इस विधा पर लाने में लाभदायक होंगे इसी आशा के साथ.

1. किसी भी प्रकार का यदि पुराना ज्वर होतो उसमे 5/10 ग्राम तुलसी का रस पीने से लाभ होता हैं .
2. यदि बिलकुल सुबह तुलसी के पत्ते का रस 5/10 ग्राम निकल कर पिया जाये तो यह पेट सम्बंधित बीमारियों के लिए लाभ दायक होता हैं .
3. यदि तुलसी के पत्ते के रस को गंगा जल में मिला कर लगाया जाये तो सफ़ेद दाग भी दूर हो जाते हैं .
4. यदि प्रातः काल तीनचार पत्ते तुलसी के खा लिए जाये तो दिमाग की क्षमता में वृद्धि होती हैं .
5. बेल के छिलके का धुँआ करने से मछछर भी भाग जाते हैं .
6. रोज़ सुबह यदि ताजे बेल के पत्ते का रस 5/10 ग्राम लेकर पी लिया जाये तो धीरे धीरे सुगर कम हो जाती हैं .
7. जो भी acidity रोग से पीड़ित हो उन्हें प्रातः काल उठ कर एक गिलास हल्का कुनकुना पानी पीना चाहिए इससे अधिक लाभ मिलता हैं .
8. बादाम के तेल से मालिश सोते समय करे यह चेहरे की झुर्रियां दूर करता हैं .
9. बादाम के तेल से मालिश नाख़ून , भौए की जा सकती हैं इस से यह और सुन्दर से हो जाते हैं.
10. झड़ते बालों को रोकने के लिए तुलसी का तेल बहुत लाभ दायक पाया गया हैं

Ayurveda

In life curing for any disease many simple but easy remedy l process can be applied ,since for any serious health related one should contact some well competent Ayurveda doctor , but all theses very simple process can build your faith on this science .

1. If you are having any fever that is from long duration than taking tulsi leaves juice of 5 /10 gram would be helpful.
2. If any one suffering from problem to his stomach, than if he take fresh juice of tulsi leaves in the morning about 5/10 gram , proves to very beneficial.
3. If juice tulsi leaves and ganga jal mix it and applied on "white daag " that will be cure early.
4. And if any one eat 4/5 leaves of tulsi in the morning this will increase his mental capability .
5. all the mosquitoes gone If you do/produce fumes from bel leaves in your home.
6. If every day one take the juice of bel leaves approx 5/10 grams this helpful reducing sugar problem.
7. Those who are suffering from acidity , then they should drink one Gilas of water mild hot.
8. If doing massage with olive oil that reduces wrinkle on the face if any ,
9. And if massage of olive oil on nails and eye brows done than also be very effective .
10. If hair start falling than application of tulsi oil proved to be very effective .

In the End

आप सभी गुरु भाई बहिन और मित्रो के दिन प्रति दिन के बढ़ते हुआ स्नेह हमें लगातार और अधिक मेहनत को प्रेरित करता हैं अब ये अंक समाप्ति की ओर हैं, आपको ये अंक कैसा लगा , हम सभी को बिश्वास हैं की यह अंक आपके अपेक्षाओ पर खरा उतरा होगा .

इसी तरह हम सदैव आपके आशाओं पर खरे उतरें ,सदगुरुदेव भगवान से यही प्रार्थना हैं .

अगला अंक - निखिल तत्व युक्त श्री साधना तंत्र महा विशेषांक

होगा इसके विस्तृत विवरण के लिए ब्लॉग पोस्ट का इंतज़ार करे

विगत अंक की भांति इस बार भी मैं अपने सभी गुरुभाई ,बहिनों से यही निवेदन करना चाहूँगा कि , इस इ पत्रिका ओर ब्लॉग के बारे में .. समान विचार धारा वाले व्यक्तियों को अवगत कराये / बताये .जिससे सदगुरुदेव जी के दिव्य ज्ञान से वे भी लाभान्वित हो सके .

With the ever increasing /growing your support and love/sneh gives us more and more strength to work hard to come up to your expectation ,we here,have a faith that this issue come up your expectation, like that we work for you all is the prayer to beloved sadgurudev ji.

Our next issue will be Nikhil Tatv Yukt Shri Sadhana Tantra Maha Visheshank for details of that plz wait for related post in the blog.

Like in previous issue ,this time also make a deep request to you all as our guru brother and sister please inform other guru brother about this e magazine and blog.

Plz do visit blog

Nikhil-alchemy2.blogspot.com & yahoo group Nikhil alchemy

We

Are praying to our beloved Sadgurudev ji

Specially on your

Sadhana Success , Spiritual Achievement and Material Growth

and

your devotion to Sadgurudev ji"

JAI SADGURUDEV